

श्री कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिब जी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ॥

★ प्रकास हिन्दुस्तानी-जंबूर ★

कछु इन विध कियो रास, खेल फिरे घर ।
खेल देखन के कारने, आइयां उमेदां कर ॥१॥
उमेदां न हुइयां पूरन, धाख^१ मन में रही ।
तब धनीजीएँ अंतरगत, हुकम कियो सही ॥२॥
तब तीसरो रचके खेल, स्यामाजी आए इत ।
तब हम भी आइयां तित, स्यामाजी खेले जित ॥३॥
स्यामाजी को धनिएँ, आवेस अपनो दियो ।
सब केहे के हकीकत, हुकम ऐसो कियो ॥४॥
इंद्रावती लागे पाए, सुनो प्यारे साथ जी ।
तुम चेतो इन अवसर, आयो है हाथ जी ॥५॥

॥प्रकरण॥१॥चौपाई॥५॥

साथ को प्रबोध - राग धनाश्री

याद करो तुम साथ जी, हाथ आयो अवसर जी ।
 आप डार्या ज्यों पेहेले फेरे, भी डारियो निसंक^१ फेर जी ॥१॥
 सुंदरबाई इन फेरे, आए हैं साथ कारन जी ।
 भेजे धनिऐं आवेस देय के, अब न्यारे न होऐं एक खिन जी ॥२॥
 सुपने में भी खिन ना छोड़ें, तो क्यों छोड़ें साख्यात जी ।
 दया देखो पिउजी की हिरदे मांहें, विध विध की विख्यात जी ॥३॥
 ऐसी बात करे रे पिउजी, पर ना कछू साथ को सुध जी ।
 नींद उड़ाए जो देखिए आपन, तो आए हैं आप ले निध जी ॥४॥
 सुपने में मनोरथ किए, तो तित भी पिउजी साथ जी ।
 सुंदरबाई ले आवेस धनी को, न छोड़े अपना हाथ जी ॥५॥
 धनी न देवें दुख तिल जेता, जो देखिए वचन विचारी जी ।
 दुख आपन को तो जो होत है, जो माया करत हैं भारी जी ॥६॥
 अंतरध्यान समें दुख दिए, ए आसंका^२ उपजत जी ।
 तिन समें संसार न किया भारी, साथें दुख देखे क्यों तित जी ॥७॥
 दुख तो क्यों ए न देवे रे पिउजी, ए विचार के संसे खोइए जी ।
 ए याद वचन तो आवे रे सखियो, जो माया छोड़ते घनों रोइए जी ॥८॥
 खेल याद देने को मेरे पिउजी, दुख दिए अति घनें जी ।
 साथें मनोरथ एह जो किए, धनिऐं राखे मन आपनें जी ॥९॥
 आपन माया की होंस जो करी, और माया तो दुख निधान जी ।
 सो याद देने को रे साथ जी, पिउ भए अंतरध्यान जी ॥१०॥
 नातो ए अपना रे पिउजी, अधखिन बिछोहा न सहे जी ।
 एह विचार जो देखिए साथजी, तो तारतम प्रगट कहे जी ॥११॥

इन समे तारतम की समझन, क्योंकर कहिए सोए जी ।
 अनेक विध का तारतम इत, तब घर लीला प्रगट होए जी ॥१२॥
 पेहेचानवे को पिउजी अपना, करूं तारतम विचार जी ।
 साथ सकल तुम लीजो दिल में, न रहे संसे लगार जी ॥१३॥
 पेहेली बेर तहां ए निध न हुती, तारतम जोत रोसन जी ।
 तो ए फेरा हुआ रे साथ को, तुम देखो विचारी मन जी ॥१४॥
 आसंका न रहे किसी की, जो कीजे तारतम विचार जी ।
 सो रोसनाई ले तारतम की, आए आपन में आधार जी ॥१५॥
 अब इन उजाले जो न पेहेचानो, तो आपन बड़े गुन्हेगार जी ।
 चरने लाग कहे इंद्रावती, पिउजी के गुन अपार जी ॥१६॥

॥प्रकरण॥२॥चौपाई॥२१॥

राग धनाश्री

साथ सकल तुम याद करो, जिन जाओ वचन विसर जी ।
 धनी मिले आपन कों माया में, जिन भूलो ए अवसर जी ॥१॥
 सुंदरबाई अंतरगत कहे, प्रकास वचन अति भारी जी ।
 साथ वचन ए चित दे सुनियो, देखियो तारतम विचारी जी ॥२॥
 एही चाल तुम चलियो साथजी, एही पांउ परवान^१ जी ।
 प्रगट मैं तुमको पेहेले कह्या, भी कहूं निरवान^२ जी ॥३॥
 अब जिन माया मन धरो, तुम देखी अनेक जुगत जी ।
 कई कई विध कह्या मैं तुमको, अजहूं ना हुए त्रपत^३ जी ॥४॥
 जब लग तुम रहो माया में, जिन खिन छोड़ो रास जी ।
 पचीस पख लीजो धाम के, ज्यों होए धनी को प्रकास जी ॥५॥
 अनेक विध कही मैं तुमको, ढील करो अब जिन जी ।
 पांउ भरो ए वचन देखके, पेहेले बृज रास चलन जी ॥६॥

रास प्रकास छोड़ो जिन खिन, जो बीतक अपनी परवान जी ।
 ए छल तुमसे क्योंए न छूटे, पर मैं ना छोड़ूं तुमें निरवान जी ॥७॥
 कहे इंद्रावती वचन पिउके, जिन देखाया धाम वतन जी ।
 अब कोटक^१ छल करे जो माया, तो भी ना छूटे धनी के चरन जी ॥८॥
 ॥प्रकरण॥३॥चौपाई॥२९॥

लीला को प्रकास होना - आत्मा को प्रकास उपज्यो
 ना कछू मन में ना कछू चित, ना कछू मेरे हिरदे एती मत ।
 एक वचन सीधा कह्या न जाए, ए तो आयो जैसे पूर दरियाए ॥१॥
 श्री सुंदरबाई धनी धाम दुलहिन, इंद्रावती पर दया पूरन ।
 हिरदे बैठ कहे वचन एह, कारन साथ किए सनेह ॥२॥
 वचन एक केहेते इन पर, हम घरों जाए के लेसी खबर ।
 अद्रष्ट होए के कहे वचन, साथजी द्रढ करी लीजो मन ॥३॥
 आपन करी जो पेहेले चाल, प्रेम मगन बीते ज्यों हाल ।
 ए सब किया अपने कारन, एही पैंडा^२ अपना चलन ॥४॥
 दिखलाया सब प्रगट कर, साथ सकल लीजो चित धर ।
 ए जिन करो तुम हलकी बान, धनी कहावत अपनी जान ॥५॥
 कहियत सदा प्रबोध^३ वचन, पर कबूं न बानी ए उत्पन ।
 तिन कारन तुम सुनियो साथ, आपन में आए प्राणनाथ ॥६॥
 बोहोत सिखापन विध विध कही, पर नींद आड़े कछु हिरदे ना रही ।
 नींद उड़ाओ देख नेहेचल रास, ज्यों हिरदे होए पिउ को प्रकास ॥७॥
 अब नींद किए की नहीं ए बेर, पिउ आए बुलावन उड़ाए अंधेर ।
 पेहेले कह्या पिउ प्रगट पुकार, अंतर रहे केहेलाया आधार ॥८॥
 मोहे एक वचन ना आवे अस्तुत, पर सोभा दर्ई ज्यों कालबुत^४ ।
 अस्तुत की इत कैसी बात, प्रगट होने करी विख्यात^५ ॥९॥

फल वस्त जो भारी वचन, जीव भी न कहे आगे मन ।
 सो प्रगट किए अपार, जो हुता अखंड घर सार ॥१०॥
 प्रगट करी मूल सगाई, कई दिन आपन राखी छिपाई ।
 वचन बड़ा एक ए निरधार, श्री सुंदरबाई केहेते जो सार ॥११॥
 ए लीला होसी विस्तार, सूरज ढांप्या ना रहे लगार ।
 ए लीला क्यों ढांपी रहे, जाकी रास धनी एती अस्तुत कहे ॥१२॥
 ता कारन तुम सुनियो साथ, प्रगट लीला करी प्राणनाथ ।
 कोई मन में ना धरियो रोष, जिन कोई देओ महामती को दोष ॥१३॥
 ए तुम नेहेचे करो सोए, ए वचन महामती से प्रगट न होए ।
 अपने घर की नहीं ए बात, जो किव^१ कर लिखिए विख्यात^२ ॥१४॥
 ए बोहोत विध मैं जानूं घना^३, जो किव नहीं ए काम अपना ।
 पर ए तो नहीं कछू किव की बात, केहेलाया बैठ हिरदे साख्यात^४ ॥१५॥
 ए वचन सबे आवेस में कहे, उत्तमबाईएँ भली विध ग्रहे ।
 यों कर कह्या आवेस दे, प्रगट लीला सबमें होसी ए ॥१६॥
 मैं मन मांहेँ जान्या यों, जो किव होसी तो खेलसी क्यों ।
 किव भी हुई वचन विचार, खेली इंद्रावती अनेक प्रकार ॥१७॥
 कारज यों सब हुए पूरन, श्री सुंदरबाई की सिखापन ।
 हिरदे बैठ केहेलाया रास, पेहेले फेरे के दोऊ किए प्रकास ॥१८॥
 सुनियो साथ तुम एह कारन, धनी ल्याए धाम से आनंद अति घन ।
 ज्यों ना रहे माया को लेस, त्यों धनिएँ कियो उपदेस ॥१९॥
 ज्यों तुम पेहेले भरे पांउ, योंही चलो जिन भूलो दाउ^५ ।
 भी देखो ए पेहेले वचन, प्रेम सेवा यों राखो मन ॥२०॥
 अब कहूंगी तारतम रोसन कर, ए लीजो साथ नेहेचे^६ चित धर ।
 कहे इंद्रावती अब ऐसा होए, साथ को संसे न रहेवे कोए ॥२१॥

बृज रास तुमको लीला कही, तारतम सों रोसनाई कर दई ।
अब इन फेरे के कहूं प्रकार, सब साथ ढूढ काढों निरधार ॥२२॥

॥प्रकरण॥४॥चौपाई॥५१॥

श्री सुंदरबाई के अंतरध्यान की बीतक

श्री सुंदरबाई स्यामाजी अवतार, पूरन आवेस दियो आधार ।
ब्रह्मसृष्ट मिने सिरदार, श्री धाम धनीजी की अंगना नार ॥१॥
कई खेल किए ब्रह्मसृष्ट कारन, धनी दया पूरन अति घन ।
अनेक वचन सैयन को कहे, पर नींद आड़े कछू हिरदे ना रहे ॥२॥
तब भी अनेक विध कही, पर नींद पेड़ की आड़ी भई ।
भी फेर अनेक दिए द्रष्टांत, पर साथ पकड़ के बैठा स्वांत ॥३॥
तब अनेक धनिएँ किए उपाए, पर सुभाव हमारा क्योंए न जाए ।
तब अनेक विध कह्या तारतम, पर तो भी अपना न गया भरम ॥४॥
तब अनेक आपन को कहे विचार, कई विध कृपा करी आधार ।
तब अनेक पखें समझाए सही, तो भी कछू टांकी^१ लागी नहीं ॥५॥
तब विध विध कह्या अनेक प्रकार, तो भी भई सुध न सार ।
अनेक सनंधें^२ केहे केहे रहे, पख पचीस आपन को कहे ॥६॥
सो भी सेहे कर रहे आपन, नींद ना गई मांहे जागे सुपन ।
तो भी धनी की बोहोतक दया, अखंड बृज का सुख सब कह्या ॥७॥
भी वरन्यो सुख नेहेचल^३ रास, पहले फेरे के दोऊ किए प्रकास ।
रास अखंड रात रोसन, बृज लीला अखंड रात दिन ॥८॥
दोऊ जुदी लीला कही अखंड, तीसरी अखंड लीला ए ब्रह्मांड ।
किए तारतमें मन वांछित काम, भी देखाया सुख अखंड धाम ॥९॥
दया धनी की है अति घन, कई विध सुख लिए सैयन ।
सेवा करी धनबाईएँ पेहेचान के धनी, सोभा साथ में लई अति घनी ॥१०॥

साथ सों हेत कियो अपार, धंन धंन धनबाई को अवतार ।
 कछुक लेहेर लागी संसार, ना दर्ई गिरने खड़ी राखी आधार ॥११॥
 बेहेवट^१ पूर^२ सह्यो न जाए, कर पकर के दर्ई पोहोंचाए ।
 तो भी सुध न भई आपन, क्योंए न छूटे मोह जल गुन ॥१२॥
 तब लरे हमसों अपनायत करी, तो भी नींद हम ना परहरी^३ ।
 कई विध कह्या आप आंझू आन, पर या समें हमको सुध न सान^४ ॥१३॥
 तब फेर धनिऐं कियो विचार, साथ घरों ले जाना निरधार ।
 तब संवत सत्रे बारोतरा बरख, भादों मास उजाला पख ॥१४॥
 चतुरदसी बुधवारी भई, सनंध सबे श्री बिहारीजीसों कही ।
 मध्यरात पीछे किया परियान^५, बिहारीजी को सुध भई कछु जान ॥१५॥
 इन अवसर मैं भई अजान, मोहे फजीत करी गिनान ।
 ना तो मोहे बुलाए के दर्ई निध, पर या समें न गई मोहजल बुध ॥१६॥
 इन समें हुती माया की लेहेर, तो न आया आत्म को वेहेर^६ ।
 तब मेरी निध गई मेरे हाथ, श्री धाम तरफ मुख कियो प्राणनाथ ॥१७॥
 तब हमसों इसारत करी, कह्या धाम आड़े इंद्रावती खड़ी ।
 मैं पैठ न सकों वह करे विलाप, तब मोहे बुलाए के कियो मिलाप ॥१८॥
 ए केहेके साथ को सुनाई, ए इसारत तब हम न पाई ।
 आप भी इत विरह कियो, पर मैं हिरदे में कछू न लियो ॥१९॥
 तब अद्रष्ट भए हममें से इत, हम सारे साजे^७ बैठे तित ।
 जो कछू जीव को उपजे भाउ, तो क्यों छोड़े हम पिउ के पांउ ॥२०॥
 सो तो सब मैं देख्या द्रष्ट, पर बैठा जीव होए कोई दुष्ट ।
 न तो क्यों सहिए धनी को बिछोह, जो जीव कछू जाग्रत होए ॥२१॥
 एक वचन का न किया विचार, न कछू पेहेचान भई आधार ।
 सुनो हो रतनबाई ए कैसा फेर, कौन बुध ऐसी हिरदे अंधेर ॥२२॥

ए बेसुधी कैसी आई, कछू पाई न सुध मूल सगाई ।
 देखो रे सई ऐसी क्यों भई, ए सुख छोड़ मैं अकेली रही ॥२३॥
 ए दुख की बातें हैं जो घनी, पर रह्यो जीव कछू अग्या धनी ।
 इन समें जो निध न जाए, तो क्यों आवेस सरूप सहे अंतराए ॥२४॥
 फिट फिट रे भूंडी^१ तूं बुध, तें क्यों ना करी अखंड घर सुध ।
 महादुष्ट तूं अभागनी, ना सुध दई जीव को जाते धनी ॥२५॥
 ए बातें तें क्योंकर सही, के या समें घर छोड़ के गई ।
 के तूं विकल^२ भई पापनी, बिना खबर निध गई आपनी ॥२६॥
 होए आवेस सरूप पेहेचान, पेहेचान पीछे न सहिए हान ।
 तिन कारन जो यों न होए, तो प्रगट लीला क्यों करे कोए ॥२७॥
 अब तोको कहा देऊं रे गाल^३, तूं भूली अवसर अपनो इन हाल ।
 फिट फिट रे भूंडें तूं मन, तें अधरम कियो अति घन ॥२८॥
 जीव बराबर बैठा होए, क्यों बैठा तूं ए निध खोए ।
 एती बड़ाई तुझ पर भई, तुझ देखते ए निध गई ॥२९॥
 तें ना दई जीव को खबर, नेठ झूठा सो झूठा आखिर ।
 ए क्रोध है बड़ा समरथ, पर आया न मेरे समें अरथ ॥३०॥
 गुन अंग इंद्रि सबे धारन^४, कोई न जाग्या जीव के कारन ।
 इन सूरमों किनहूं न खोल्या द्वार, जीव बैठा पकड़ आकार ॥३१॥
 धिक धिक रे भूंडा जीव अजान, तेरी सगाई हुती निरवान ।
 रे मुख तोको कहा भयो, धनी जाते कछू पीछे ना रह्यो ॥३२॥
 एती अगनी तें क्योंकर सही, अनेक विध तोको धनिएं कही ।
 निपट जीव तूं हुआ निठोर^५, झूठी प्रीत न सक्या तोर ॥३३॥
 ऐसा अबूझ अकरमी हुआ इन बेर, कछू न विचास्या न छोड़ी अंधेर ।
 ऐसी आपसे ना करे कोए, खोया अपना परवस होए ॥३४॥

ऐसा होए खांगडू^१ जुदा पड़्या, एती अगनि^२ अजू न चुड़्या^३ ।
 पांच बरस का होए जो बाल, सो भी कछुक करे संभाल ॥३५॥
 धनि^४ तोको बोहोतक कह्या, गए अवसर पीछे कछू ना रह्या ।
 तेरी दोरी क्यों न टूटी तिन ताल, फिट फिट रे भूंडा कहां था काल ॥३६॥
 ए तो केहेर^५ बड़ा हुआ जुलम, जान्या विरह क्यों सहे खसम ।
 सो मैं अपनी नजरों देख्या, धरम हमारा कछू ना रह्या ॥३७॥

॥प्रकरण॥५॥चौपाई॥८८॥

विलाप - राग रामश्री

ओहि ओहि करती फिरों, और करों हाए हाए रे ।
 पिउजी बिछोहा क्यों सहूं, जीवरा टूक टूक होए न जाए रे ॥१॥
 फिट फिट रे भूंडा तूं सब्द, क्यों आई मुख बान रे ।
 वाओ ना लगी तिन दिस की, निकस ना गए क्यों प्रान रे ॥२॥
 तूं रे जुबां ऐसी क्यों वली, कहते एह वचन रे ।
 खैच निकालूं तोको मूल थें, जहां से तूं उत्पन रे ॥३॥
 ए रे पिउजी सिधावते, वाचा क्यों रही तूं अंग ।
 उजड़ ना पड़े दंतड़े, घन घाय मुख भंग रे ॥४॥
 तें क्या सुने नहीं श्रवना, प्यारे पिउ के वचन रे ।
 ए रे लवा तुझे सुनते, क्यों ना लगी कानों अगिन रे ॥५॥
 चलना पिउ का सुनते, तोहे सब अंगों अगिन ना आई ।
 सुनते आग झाला मिने, दौड़ के क्यों न झंपाई ॥६॥
 नीच नैन ए तुझ देखते, आया न आंखों लोहू ।
 पिउ लौकिक जिनों बिछुरे, ऐसे भी रोवे सोऊ ॥७॥
 रोवे लोहू आंखों आंझू चले, सो कहा भयो रोवनहारे ।
 देखत ही पिउ चलना, निकस न पड़े तारे रे ॥८॥

क्यों ना आई बास नासिका, पेहेचान के प्रेमल ।
 पिउ संग जीवरा न चल्या, अंदर लेता था सुगंध सकल ॥९॥
 गुन अंग इन्द्रियों की, पिउ बांधते गोली प्रेम काम ।
 पेहेचान करते पोहोंचावने, सनमंध देख धनी धाम ॥१०॥
 गुन अंग इंद्रि आकार के, आग पड़ो तुम पर रे ।
 प्रेम न उपज्या तुमको, चलते धामधनी घर रे ॥११॥
 एती जोगवाई ले तूं आकार, धनी चलते पीछे क्यों रह्या रे ।
 अब जलो रे उड़ो खाखड़े^१, इन समें गल पिघल न गया रे ॥१२॥
 अंग तोहे विरह अगिन की, न लगी कलेजे झाल^२ रे ।
 ए विरहा ले अंग खड़ा रह्या, फिट फिट करम चंडाल रे ॥१३॥
 हाथ पांव सब अंग के, सब उजड़ न पड़े संधान ।
 अंग रोम रोम जुदे न हुए, अस्त होते तेज भान^३ ॥१४॥
 ए रे निमूना भान का, मेरे पिउजी को दिया न जाए रे ।
 ए जोत धनी इन भांत की, कोट ब्रह्मांड में न समाए रे ॥१५॥
 ए जोत पकड़ी ना रहे, चली इंड फोड सुन्य निराकार ।
 सदासिव महाविष्णु निरंजन, सब प्रकृत को कियो निरवार^४ ॥१६॥
 सब्दातीत हुते जो ब्रह्मांड, जाए तिनमें करी रोसन रे ।
 अछर^५ प्रकास करके, जाए पोहोंची धाम के बन रे ॥१७॥
 सब गिरदवाए बन देखाए के, किए धाम मंदिर प्रकास ।
 ब्रह्मानंद ब्रह्मसृष्ट में, प्रगट कियो विलास ॥१८॥
 हारे ए सुख सैयां लेवहीं, मेरे पिउजी की विरहिन ।
 पीछे तो जाहेर होएसी, देसी अखंड सुख सबन ॥१९॥
 ए रे धनी मेरे चलते, ना टूटी रगां^६ क्यों रही खाल रे ।
 रूप रंग रस लेयके, क्यों ना पड़ी आग झाल रे ॥२०॥

हड्डी मांस रगां भेली क्यों रही, ए पकड़ के अंग अंधेर रे ।
 धनी का बिछोहा क्यों सह्या, लोहू ना सूक्या तिन बेर रे ॥२१॥
 अंग मेरे आकार के, सातों धात ना गई क्यों सूक रे ।
 एहेरन घन के बीच में, क्यों ना हुई भूक भूक रे ॥२२॥
 नैन नासिका मुख श्रवना, भूंडी खोपड़ी पकड़ तूं क्यों रही रे ।
 तोड़ इनों को जुदे जुदे, तूं क्यों उजड़ ना गई रे ॥२३॥
 ए रे पिउजी सिधावते, क्यों ना लग्या कलेजे घाय ।
 काल मेरा कहां चल गया, क्यों न काढी खैंच अरवाय ॥२४॥
 नेहेचल^१ निध रे बिछुड़ते, कहां गई वह बुध ।
 धिक धिक रे चंडालनी, तें क्यों भई ऐसी असुध ॥२५॥
 ग्यान मेरा तिन समें, क्यों ना किया वतन उजास ।
 तिन समें दगा दिया मुझको, मैं रही तेरे विस्वास ॥२६॥
 गुन अंग इंद्री मेरे मुझसों, उलटे क्यों हुए दुस्मन रे ।
 जिन समें हुआ रे बिछोहा, मेरे क्यों न हुए सजन रे ॥२७॥
 साहेब मेरा चलते, मेरी सकल सैन्या अंग मांहें ।
 सो काम न आए आतम के, अवसर ऐसो न क्यांहें ॥२८॥
 फिट फिट रे सैन्या तुमको, क्या न हुती तुमे पेहेचान रे ।
 जाते जीव का जीवन, तुम क्यों ले न निकसे प्रान रे ॥२९॥
 जीवन चलते जीवरा, क्यों छोड़्या तें संग रे ।
 अब कहूं रे तोको करम चंडाल, तूं तो था तिनका अंग रे ॥३०॥
 नीच करम ऐसा चंडाल, तुझ बिना कोई न करे रे ।
 श्री धनी धाम चले पीछे, इन जिमी में देह कौन धरे रे ॥३१॥
 कौन विध कहूं मैं तुझको, कुकरमी करम चंडाल रे ।
 तोहे अंग न उठी अगिन, तो तूं क्यों न झंपाया झाल रे ॥३२॥

झांप न खाई तें भैरव, क्यों कायर हुआ अवसर ।
 तिल तिल तन न ताछिया^१, जाते ए सुख सागर ॥३३॥
 गुन सागर धनी चलते, क्यों किया ऐसा हाल रे ।
 बज्रलेपी रे स्वाम द्रोही, जीव क्यों चूक्या चंडाल रे ॥३४॥
 दुष्ट अधरमी केता कहूं, हुआ बेमुख देते पीठ रे ।
 ऐसा समया गमाइया, निपट निठुर^२ जीवरा ढीठ रे ॥३५॥
 सब्दातीत के पार के पार, तिन पार जोत का था तेज रे ।
 यासों था तेरा सनमंध, पर तें कछुए न राख्या हेज^३ रे ॥३६॥
 तुझमें भी तेज है उन जोत का, और वाही कमल की बास रे ।
 वह तेज फिरते रे तूं तेज, क्यों न पोहोंच्या जोत प्रकास रे ॥३७॥
 अब कहा करूं कहां जाऊं, ए बानी धनी ढूंढों कित रे ।
 पिउ पोहोंचाए मैं पीछे रही, करने विलाप रही इत रे ॥३८॥
 अब ए बानी तूं कहां सुनसी, मेरे धाम धनी के वचन रे ।
 बरनन करते जो श्रीमुख, सो अब काहूं न पाइए ठौर किन रे ॥३९॥
 अब तारतम कौन केहेसी, कौन विचार कर देसी हेत ।
 चौदे भवन में इन धनी बिना, ए बानी कोई ना देत ॥४०॥
 बृजलीला रात दिन अखंड, रासलीला अखंड रात रे ।
 पिउजी बिना विवेक कौन केहेसी, हुआ प्रतिबिम्ब तीसरा प्रभात रे ॥४१॥
 भेख बागे का बेवरा, रह्या अग्यारे दिन रे ।
 सात गोकुल चार मथुरा, कौन केहेसी विवेक वचन रे ॥४२॥
 उत्तम विचार उत्तम बंधेज, और कई विध के द्रष्टांत रे ।
 इन धनी बिना ए दया कर, कौन देसी कर खांत रे ॥४३॥
 पन^४ बांध बरस चौदेलो, सास्त्र को अर्थ कौन लेसी ।
 सो ए प्रकास इन पिउ बिना, एक साइत में समझाए कौन देसी ॥४४॥

दूध पानी रे जुदा कर, कौन केहेसी कर रोसन रे ।
 मोहजल गेहेरे में डूबते, कौन काढे या धनी बिन रे ॥४५॥
 अठोतर सौ पख का, कौन काढ देसी सार रे ।
 सुख अछर अछरातीत के, कौन देसी बिना आधार रे ॥४६॥
 नरसैयां कबीर जाटीय के, और कई साधों सास्त्र वचन रे ।
 काढ दे सार कौन इनका, करके एह मथन रे ॥४७॥
 महाप्रले लों जो कोई, सास्त्र पढ करे अभ्यास ।
 बहु विध लेवे विवेकसों, कर मन द्रढ विस्वास ॥४८॥
 तो भी न आवे ए विवेक, ना कछू ए मुख बान रे ।
 सो संग धनी के एक खिन में, कर देवें सब पेहेचान रे ॥४९॥
 अब अबूझ टाल सुबुध देय के, कौन करसी चतुर वचिखिन^१ रे ।
 नेहेचल निध धनी धाम की, सो कहूं पाइए न चौदे भवन रे ॥५०॥
 दूजा कौन देसी रे लड़ के, ऐसी जाग्रत बुध सुजान रे ।
 साथ धाम का जान के, कौन केहेसी हेत चित आन रे ॥५१॥
 नींद उड़ाए जगाए के, कौन देसी घर आप पेहेचान रे ।
 खेल देखाए आप देह धर, कौन काढ़सी होए गलतान रे ॥५२॥
 त्रैलोकी त्रिगुन माया मिने, हम बैठे थे रचके घर रे ।
 सो नेहेचल धाम में बैठाए के, याको कौन देखावे खेल कर रे ॥५३॥
 अब ए चरचा कहां सुनसी, मूल वचन तारतम रे ।
 ए सुने बिना हम क्यों गलसी, बिना बानी इन खसम रे ॥५४॥
 और घाट बिना गले, क्यों जीव टल होसी आतम रे ।
 तीन दिवाल आड़ी भई, सो उड़े ना बिना खसम रे ॥५५॥
 पांच पचीस जो उलटे, होए बैठे दुस्मन रे ।
 सो नेहेचल घर में बैठाए के, कौन कर देवे सीधे सजन रे ॥५६॥

वैरी मार के कौन जिवावसी, उलटे भान के करे सनमुख रे ।
 या दुख में इन धनी बिना, कौन देवे सांचे सुख रे ॥५७॥
 बीच पट आतम परआतमा, कौन उड़ाए कर दे संग रे ।
 इन दुलहे बिना दुलहिनसों, क्यों होसी रस रंग रे ॥५८॥
 मोहजल पूर अंधेर में, जित काहू ना किसी की गम रे ।
 तहां से काढ़ देवे सुख नेहेचल^१, ऐसा कौन बिना इन खसम रे ॥५९॥
 इन भवसागर के जीवों में, वासना ढूढ़ काढे छुड़ाए के फंद रे ।
 आतम अपनी पेहेचान के, कौन पावे आनंद रे ॥६०॥
 अब कौन रे करसी ऐसा वरनन^२, नेहेचल बृज रास धाम रे ।
 ए कौन सुख सैयों को देय के, कौन मिलावे स्यामाजी स्याम रे ॥६१॥
 आतम को रे जगाए के, कौन खोले आतम के श्रवन रे ।
 अंतर पट उड़ाए के, कौन केहेसी मूल वचन रे ॥६२॥
 फोड़ ब्रह्मांड आड़े आवरण^३, ताए पोहोंचावे अछर पार रे ।
 सुख अखंड अछरातीत के, कौन देवे बिना इन भरतार रे ॥६३॥
 ऊपर बाड़े वाट धाम की, कौन बतावे और रे ।
 इन भेदी बिना भोम क्यों छूटहीं, क्यों पोहोंचिए अखंड ठौर रे ॥६४॥
 साथ अजान अबूझ को, कौन लेसी सुधार रे ।
 वासना सगाई पेहेचान के, कौन खोल दे नेहेचल द्वार रे ॥६५॥
 सत सागर सुतेज में, बतावत नेहेचल धन रे ।
 सो पूर लेहेरां चल गई, आवत अमोल अखंड रतन रे ॥६६॥
 ए धन मेरे धनीय का, आया था मुझ कारन रे ।
 सो धन खोया मैं नींद में, धनी देते कर कर जतन रे ॥६७॥
 ए धन जाते मेरे धनी का, सो तूं देख के कैसे रही रे ।
 फिट फिट भूंडी पापनी, तें एती पुकार क्यों सही रे ॥६८॥

फिट फिट रे मेरी आतमा, तें क्यों खोई निध आई हाथ रे ।
 कर दर्ई धनी धाम पेहेचान, तो तूं क्यों न चली पिउ साथ रे ॥६९॥
 संग पिउ के न चली, क्यों रही पिउसों बिछुर रे ।
 अजहूं आह तेरी न उड़ी, याद कर अवसर रे ॥७०॥
 त्राहि त्राहि करूं रे सजनी, पिउजी दियो मोहे छेह रे ।
 जल बल विरहा आग में, भसम ना हुई जीव देह रे ॥७१॥
 कई विध कह्या मोहे पिउजी, पर मैं कछू न कियो सनेह रे ।
 अब तो बैठी धन खोए के, हाथ आया था जेह रे ॥७२॥
 धनिऐं तो केहे केहे देखाइया, कर कर मुझसों एकांत रे ।
 पर मैं चूकी चंडालन अवसर, अब पकड़ बैठी मैं स्वांत रे ॥७३॥
 अब सब्दातीत निध धाम की, ए कौन केहेसी मुख बान रे ।
 श्री धामके सुख की रे बीतक, कौन केहेसी वर्तमान^१ रे ॥७४॥
 उठते बैठते खेलन की, सुध कौन कहे एह सुकन रे ।
 बन जाए अन्हाए^२ के, कौन केहेसी सिनगार बरनन रे ॥७५॥
 वस्तर भूखन की विगत, पिउ बिना कौन लेवे रे ।
 ए सुख अनुभव अपना, सनमंध करके कौन देवे रे ॥७६॥
 कई सुख अनुभव बन के, कई सुख सातों त्रट रे ।
 सुख ताल मंदिर मोहोलन के, कौन देवे उड़ाए अंतर पट रे ॥७७॥
 तीसरी भोम मोहोल सिनगार, और बैठ के आरोग पौढ़न रे ।
 सुखपाल बैठ बन सिधावते, कौन केहेसी पीछला पोहोर दिन रे ॥७८॥
 सुख चौथी भोम निरत के, सुख पांचमी भोम पौढ़न रे ।
 ए सुख अनुभव कौन केहेसी, कई विध विलास रैन रे ॥७९॥
 कई विध सुख तारतम के, जो कहे वचन सुख मूल रे ।
 या विध हमें कौन कहे बरनन, सनमंध होए सनकूल^३ रे ॥८०॥

देत बिछोहा धनीधाम के, तुम क्यों न किया एह विचार रे ।
हुती आसा मुखी इंद्रावती, सुख चाहती अखंड अपार रे ॥८९॥

॥प्रकरण॥६॥चौपाई॥१६९॥

जाटी भाखा का विलाप

मेरी सैयल रे, साह आए थे मेरे घर ।
मैं पेहेचान ना कर सकी, पिउ चले पुकार पुकार ॥१॥
पिउ आए ना पेहेचाने, मोहे ना परी सुध ।
वचन कहे जो हेत के, भांत भांत कई बिध ॥२॥
नींद ऐसी भई निगोड़ी^१, ए तुम देखो रे सई^२ ।
दिन दो पोहोरे जागते, मोहे काली रैन भई ॥३॥
घर आए ना पेहेचाने, कहे विध विध के वचन ।
कान आंखां फूटियां, और फूटे हिरदे के नैन ॥४॥
सजन मेरा चल गया, अब रहूंगी विध किन ।
वस्त गई जब हाथ थें, अब रोवना रात दिन ॥५॥
मैं तो तब ना उठ सकी, पिउ चले बखत जिन ।
क्यों खोउं धनी अपना, जो तब पकड़ों चरन ॥६॥
जो मैं तबहीं जागती, तो क्यों जावे मेरा पिउ ।
क्यों छोड़ों खसम को, संग पिउ के मेरा जिउ ॥७॥
अब तरफ दसो दिस देखिए, तो गेहेरे मोह के जल ।
मेर जैसी लेहेरां मिने, मांहे मछ गलागल ॥८॥
जल मांहे भमरियां, कई बिध तीखे तान ।
कहूं सुख नहीं साइत^३ का, ए दुख रूपी निदान^४ ॥९॥
एक घोर अंधेरी आंखां नहीं, और ठौर नहीं बुध मन ।
विखम^५ जल ऐसे मिने, पिउ आए मुझ कारन ॥१०॥

मांहें भभूके^१ आग के, खाना अमल जेहेर अति जोर ।
 पिउ पुकारे कई विध, मैं उठी ना अंग मरोर ॥११॥
 पिउ मेरा मुझ वास्ते, आए ऐसे में आप ।
 कई बिध जगाई मोहे, मैं कर ना सकी मिलाप ॥१२॥
 अब कहा करूं कहां जाऊं, टूट गई मेरी आस ।
 कहां वचन कौन बतावे, पिउ ना देखूं पास ॥१३॥
 ॥प्रकरण॥७॥चौपाई॥१८२॥

पुकार चले मेरे पिउजी, मैं तो नींदई में उरझीए ।
 अब ढूंढे मेरा जीव रे, सो सजन अब कित पाइए ॥१॥
 सई रे पिउ की बातें मैं कैसे कहूं, मोसों आए कियो मिलाप ।
 मेरे वास्ते माया मिने, क्यों कर डार्या आप ॥२॥
 आए वतन से पिउ अपना, देखाए के चले राह ।
 आधा गुन जो याद आवे, तो तबहीं उड़े अरवाह ॥३॥
 साहेब चले वतन को, केहे केहे बोहोतक बोल ।
 धिक धिक पड़ो मेरे जीव को, जिन देख्या न आंखां खोल ॥४॥
 सई रे अनेक भांत मोसों कही, मोहे सालत^२ हैं सो बैन रे ।
 सो भी कह्या आंझू^३ आन के, पर मैं पलक न खोले नैन रे ॥५॥
 आंखां पानी भर के, हाथ पकड़ किया सोर ।
 आग परो मेरे जीव को, जाको अजहूं एही मरोर ॥६॥
 सई रे अब मैं कहा करूं, मेरा हाल होसी बिध किन ।
 वतन बैठ सैयन में, क्यों कर करूं रोसन ॥७॥
 अब सुनो रे तुम सैंयां, कहूं सो बीतक बात ।
 पानी तो पिउजी ले चले, अब तलफूं मछली न्यात ॥८॥

कर कर सोर जो वल्लभा^१, फिरे जो आप वतन ।
 चले जो मेरे देखते, केहे केहे अनेक वचन ॥९॥
 दुलहा मेरा चल गया, मेरी वले न जुबां यों ।
 पल पल वचन पिउ के, मोहे लगे कटारी ज्यों ॥१०॥
 आग पड़ो तिन देसड़े, जित पिउ की नहीं पेहेचान ।
 तो भी सुध मोहे न भई, जो हुई एती हान ॥११॥
 काट जीव टुकड़े करूं, मांहे भरूं मिख लों^२ ।
 ए दरद पिया इन भांत का, अब ए मेटे कौन ॥१२॥
 आग लगी झाला उठियां, जीवरा जले रे मांहे ।
 तलफ तलफ मैं तलफूं, पर ठंडक न दाखूं^३ क्यांहे ॥१३॥
 दुलहासों जो मैं करी, ऐसी करे न दूजा कोए ।
 विलख विलख पिउजी चले, पर मैं मूंदी आंखां दोए ॥१४॥
 अब क्यों करूंगी मैं बातड़ी, सामी क्यों उठाऊंगी मोंह ।
 मेरे हाथ ऐसी भई, खलड़ी उतारूं सिर नोंह^४ ॥१५॥
 काटूं तन तरवारसों, भूक करूं हड्डियां तोर ।
 खलड़ी उतारूं पेहेले उलटी, जीव काटूं यों जोर ॥१६॥
 तरवार भाले कटारियां, मोहे काट करी टूक टूक ।
 मेरे अंग हुए मुझे दुस्मन, जीव करे मिने कूक ॥१७॥
 धाम धनी पेहेचान के, सीधी बात न करी सनमुख ।
 कबूं दिल धनी का मैं न रख्या, अब क्यों सहूंगी ए दुख ॥१८॥
 दरद मीठा मेरे पिउ का, ए जो आग दर्ई मुझे तब ।
 अति सुख पाया मैं इनमें, सो मैं छोड़ ना सकों अब ॥१९॥
 ऐता सुख तेरे सूल में, तो विलास होसी कैसा सुख ।
 पर मैं ना पेहेचाने पिउ को, मोहे मारत हैं वे दुख ॥२०॥

सब अंग मेरे टुकड़े करूं, भूक करूं देह जिउ ।
 सो वार डारूं तुम दिस पर, इत सेवा हुई कहां पिउ ॥२१॥
 हड्डियां जारूं आग में, मांहें मांस डारूं सिर ।
 ए भूली दुख क्योंए न मिटे, ए समया न आवे फिर ॥२२॥
 जरा जरा मेरे जीव का, विरहा तेरा करत ।
 चरनें ल्यो इंद्रावती, पेहेले जगाए के इत ॥२३॥

॥प्रकरण॥८॥चौपाई॥२०५॥

चौपाई प्रगटी है

एक लवो^१ याद आवे सही, तो जीव रहे क्यों काया ग्रही ।
 अब सुनियो साथ कहूं विचार, भूले आपन समें निरधार ॥१॥
 गयो अवसर फेर आयो है हाथ, चेतन कर दिए प्राणनाथ ।
 तब जो वासना बाई रतन, लीलबाई के उदर उत्पन ॥२॥
 श्री देवचंदजी पिता परवान, देख के आवेस दियो निरवान ।
 वचन धनी के कहे निरधार, आवेस पिउजी को है अपार ॥३॥
 इन बानिएं ब्रह्मांड जो गले, तो वासना वानी से क्यों पीछी टले ।
 वासना कारन बांधे बंध, कई भांते अनेक संध^२ ॥४॥
 ए वानी कही मेरे धनी, आगे कृपा होसी घनी ।
 हरखें साथ जागसे एह, रहेसे नहीं कोई संदेह ॥५॥
 साथ को घरों ले जाना सही, कोई माया में ना सके रही ।
 खँचे सबों को ए वानी, फिरसी घरों धनी पेहेचानी ॥६॥
 भी वाही चरचाने वाही बान, वचन केहेते जो परवान ।
 बृज रास श्रीधाम के सुख, साथ को केहेते जो श्रीमुख ॥७॥
 पख पचीस वरनवे जेह, भी सुख वल्लभ^३ देवे एह ।
 अंतरध्यान समे ज्यों भए, भी आए वचन पिया सोई कहे ॥८॥

पेहेले फेरे हुआ है ज्यों, भी इत पिया ने किया है त्यों ।
 सोई पिया और सोई दिन, देखो तारतम के वचन ॥९॥
 सोई घड़ी ने सोई पल, मायाएँ बीच डार्यो वल ।
 साथ को खिन न्यारे ना करे, बिना साथ कहूं पांड ना धरे ॥१०॥
 बेर ना हुई एक अधखिन, किया मायाएँ बिछोहा घन ।
 मारकंड माया द्रष्टांत, मांगी धनी पे करके खांत ॥११॥
 देखो माया को वृतांत^१, ए दूर होए तो पाइए स्वांत ।
 ततखिन कंपमान सो भयो, माया मिने भिलके^२ गयो ॥१२॥
 कल्पांत सात छियासी जुग, कियो मायाएँ बेसुध एते लग ।
 कछुए ना भई खबर, अति दुख पायो रिखीस्वर ॥१३॥
 तब नारायनजीएँ कियो प्रवेश, देखाई माया लवलेस ।
 फिरी सुरत आए नारायन, याद आवते गए निसान ॥१४॥
 याद आया सख्य बैठा जांहे, तब उड़ गई माया जानों हती नांहे ।
 जाग देखे तो सोई ताल, बीच मायाएँ कियो ऐसो हाल ॥१५॥
 माया की तो एह सनंध, निरमल नेत्रे होइए अंध ।
 ता कारन कियो प्रकास, तारतम को जो उजास ॥१६॥
 सो ए लेके आए धनी, दया आपन ऊपर है घनी ।
 जाने देखसी माया न्यारे भए, तारतम के उजियारे रहे ॥१७॥
 भले तारतम कियो प्रकास, देखाया माया में अखंड विलास ।
 तारतम वचन उजाला कस्या, दूजा देह माया में धस्या ॥१८॥

॥प्रकरण॥९॥चौपाई॥२२३॥

सुन्दरसाथ की विनती

साखी- विनती एक सुनो मेरे प्यारे, कहूं पिउजी बात ।
 आए प्रगटे फेर कर, करी कृपा देखे अपन्यात ॥१॥

श्री देवचंदजी हम कारने, निध तुमारे हिरदे धरी ।
 वचन पालने आपना, साथ सकल पर दया करी ॥२॥
 जनम अंध जो हम हते, सो तुम देखीते किए ।
 पीठ पकड़ हम ना सके, सो फेर कर पकर लिए ॥३॥
 अब जो कछुए हम में, होसी मूल अंकूर ।
 जो नींद उड़ाए तुम निध दर्ई, सो क्योंए ना छोड़ूं पिया नूर ॥४॥
 पेहेले तो हम न पेहेचाने, सो सालत है मन ।
 चरचा कर कर समझाए, कहे विध विध के वचन ॥५॥
 चल- ऐसे अनेक वचन कहे हमको, जिन एक वचने पेहेचाने तुमको ।
 तुम दर्ई पेहेचान विध विध कर, पर निरोध बैठा हिरदा पकर ॥६॥
 तब हंस कर आंझू आनके कह्या, पर तिन समे हम कछु ए ना लह्या ।
 तब तारतम केहे देखाया घर, हम तो भी ना सके पेहेचान कर ॥७॥
 तब हममें से अद्रष्ट भए, कोई कोई वचन हिरदे में रहे ।
 जो या समें खबर ना लेते तुम, तो मोहजल अति दुख पावते हम ॥८॥
 यों जान के आए हम मांहें, आए बैठे प्रगटे तुम जांहें ।
 ज्यों आपन पेहेले बृज में हते, नित प्रते पियासों प्रेममें खेलते ॥९॥
 अनेक खेल किए आपन, पूरन मनोरथ सब किए तिन ।
 अग्यारे बरस लो लीला करी, कालमाया इतही परहरी ॥१०॥
 जोगमाया कर रास जो खेले, कई सुख साथ लिए पिउ भेले ।
 करी अंतराए देने को याद, हम दुख मांग्या पिउपे आद ॥११॥
 सोई देख के आए ज्यों, फेर अब प्रगट हुए हैं त्यों ।
 धनी जब करें अपन्यात, मनचाह्या सुख देवें साख्यात ॥१२॥
 तिन समें धाख रहीती जोए, अब इत सुख देत हैं सोए ।
 अब सुनो पिउ कहूं गुन अपने, अवगुन मेरे हैं अति घने ॥१३॥

तुमारे मन में न आवे लवलेस, पर मैं जानों मेरे मन के रेस^१ ।
 वार डारों तुम पर मेरी देह, तुम किए मोसों अधिक सनेह ॥१४॥
 घोली घोली मैं जाऊं तुम पर, उरिनी मैं होऊंगी क्यों कर ।
 उरिनी^२ होना तो मैं कह्या, माया लेस हिरदे में रह्या ॥१५॥
 अनेक बार मैं लेऊं वारने, तुम अपनी जान गुन किए घने ।
 मैं वार डारूं आत्म अपनी, पर सालत सोई जो करी दुस्मनी ॥१६॥
 क्यों छूटोंगी ए गुन्हे हो नाथ, सांची कहूं मेरे धाम के साथ ।
 तुम साथ मिने मोहे देत बड़ाई, पर मैं क्यों छूटोंगी बज्रलेपाई ॥१७॥
 तुम गुन किए मोसों अति घन, पर अलेखे मेरे अवगुन ।
 तुम गुन किए मोसों पेहेचान कर, मैं अवगुन किए माया चित धर ॥१८॥
 अब बल बल जाऊं मेरे धनी, मेरे मन में हाम है घनी ।
 असत मंडल में हासल अति बड़ी, मैं पिउजी की उमेद ले खड़ी ॥१९॥
 जो मनोरथ किए मांहे श्रीधाम, सो पूरन इत होए मन काम ।
 जो बिध सारी कही है तुम, सो सब द्रढ़ करी चाहिए हम ॥२०॥
 सुख धाम के जो पाइए इत, सो काहूं मेरी आत्म न देखे कित ।
 इन अंग की जुबां किन बिध कहे, जो सुख कहूं सो उरे रहे ॥२१॥
 ए सोभा सब्दातीत है घनी, और सब्द में जुबां आपनी ।
 ए सुख विलसूं होए निरदोस, होए फेरा सुफल दया तुम जोस ॥२२॥
 इतने मनोरथ होए पूरन, तब जानों दया हुई अति घन ।
 फेर फेर दया को तो कह्या घना, जो कर न सकी कछू बस आप अपना ॥२३॥
 अब मनसा वाचा करमना कर, क्योंए ना छोड़ूं अखंड घर ।
 नैनों निरखूं करी निरमल चित, रूदे राखूं पिउ प्रेमें हित ॥२४॥
 कर परनाम लागूं चरने, करूं सेवा प्यार अति घने ।
 करूं दंडवत जीव के मन, देऊं प्रदखिना^३ रात ने दिन ॥२५॥

कृपा करत हो साथ पर बड़ी, भी अधिक कीजो घड़ी घड़ी ।
इंद्रावती पांउ परत आधार, धनी धाम के लई मेरी सार ॥२६॥

॥प्रकरण॥१०॥चौपाई॥२४९॥

आपन में बैठे आधार, खेल देखाया खोल के द्वार ।
अब माया कोटान कोट करे प्रकार, तो इत साथ को न छोड़ूं निरधार ॥१॥
बुलाए सैयों को चले वतन, क्यों न होए जो कहे वचन ।
मन के मनोरथ पूरन कर, नेहेचे^१ धनी ले चलसी घर ॥२॥
अब जो आपन होइए सनमुख, तो धनी बोहोत विध पावें सुख ।
कई विध दया साथ पर कर, सब विध के सुख देवें फेर ॥३॥
फेर कर भलो आयो अवसर, खुले भाग धनी चित में धर ।
आपन छोड़ने न करें संसार, पर धनी धाम बिछोहा न सहे लगार ॥४॥
बिछोहा नहीं कछू पख तारतम, सुपन में माया देखें हम ।
सुपन बिछोहा धनी ना सहे, तारतम वचन प्रगट कहे ॥५॥
ल्याए वचन तारतम सार, खोले पार के पार द्वार ।
जानों जिन आसंका रहे, साथ ऊपर धनी एता ना सहे ॥६॥
धनी के गुन मैं केते कहूं, मैं अबूझ कछू बोहोत ना लहूं ।
धनी के गुन को नहीं पार, कर ना सके कोई निरवार ॥७॥
मैं केते नजरों देखे सही, पर गुन मुखसे न सके कही ।
ना कछू किनका भोम गिनाए, सागर लेहेरें गिनी न जाए ॥८॥
मेघ की बूंदे जेती परे, ना कोई वनस्पति निरमान करे ।
जदिप याको निरमान होए, पर गुन धनीके ना गिने कोए ॥९॥
इन बेर के भी कहे न जाए, तो और बेर के क्यों कहूं जुबांए ।
पेहेले फेरे की क्यों कहूं बात, गुन जो किए धनी साख्यात ॥१०॥

क्यों धनी गुन गिनुं इन आकार, पर कछुक तो गिनना निरधार ।
इंद्रावती कहें मैं गुन गिनो, कछुक प्रकासुं आपोपनो ॥११॥

॥प्रकरण॥११॥चौपाई॥२६०॥

श्री धनीजी के गुन

मैं लिखूं श्री धनीजी के गुन, जो रे किए मोसों अति घन ।
जोजन पचास कोट जिमी केहेलाए, आड़ी टेढ़ी खड़ी सब मांहे ॥१॥
चौदे लोक बैकुंठ सुन जोए, जिमी बराबर करूं सोए ।
मैं प्रगट बिछाए करूं एक ठौर, टेढ़ी टाल करूं सीधी दोर ॥२॥
कागद धर्यो मैं याको नाम, गुन लिखने मेरे धनी श्रीधाम ।
चौदे भवनकी लेऊं वनराए, तिनकी कलमें मेरे हाथ गढ़ाए ॥३॥
गढ़ते सरफा करूं अति घन, जानों बड़ी छोही उतरे जिन ।
ए सरफा मैं फेर फेर करूं, अखंड धनी गुन हिरदे धरूं ॥४॥
बारीक टांक मेरे हाथों होए, ऐसी करूं जैसी करे न कोए ।
कोई तो केहेती हों जो माया लागी तुम, बाहोतक कहा जो पेहेले हम ॥५॥
तुमको माया लागी होए सत, तुम बिना और सबे असत ।
इन जिमी ऊपर के लेऊं सब जल, और लेऊं सात पाताल के तल ॥६॥
जल छे लोक के लेऊं लिखनहारी, एक बूंद ना छोड़ूं कहूं न्यारी ।
सब जल मिलाए लेऊं मेरे हाथ, गुन लिखने मेरे श्रीप्राणनाथ ॥७॥
बाकी स्याही करूं मैं अति विगत, एक जरा न जाए समांरुं इन जुगत ।
ए कागद कलम मस^१ कर, मांहे बारीक आंक लिखूं चित धर ॥८॥
गुन जो किए पिउ तुम इत आए, सो इन जुबां मैं कहे न जाए ।
देह माफक मैं लिखूं परमान, एक पाओ लवे का काढूं निरमान ॥९॥
अब लिखती हूं साथ देखियो उजास, मैं गजे^२ माफक करूं प्रकास ।
मैं बोहोत सकोड़ूं आंक लिखते ए, जिन जानों मींडे होए बड़े ॥१०॥

प्रथम एकड़ा करूं एक चित, लगता मींडा धरूं भिलत ।
 मेरे हाथ अखर कुसादे^१ न होए, मैं डरूं जानों मिले न दोए ॥११॥
 यों करते ए दस जो भए, मींडा धरके एक सौ कहे ।
 भी एक धरके गिनूं हजार, धनी गुन दया को नहीं पार ॥१२॥
 भी लगता मींडा धरूं एक, जीवसे गिनूं दस हजार विसेक ।
 भी एक धरके लाख गिनाए, भी धरूं ज्यों दस लाख हो जाए ॥१३॥
 कोट होवे मींडा धरते सातमां, दस कोट करूं मींडा धरके आठमां ।
 नवमां धरके करूं अबज, गुन गिनती जाऊं करती कबज ॥१४॥
 दस धरके करूं अबज दस, गुन गिनते आवे मोहे अति घनो रस ।
 अग्यारे धरके करूं खरब एक, लिखते गुन धनी ग्रहूं विसेक ॥१५॥
 बारे धरके दस करूं खरब, पेहेले यों गिनके किन कहे न कब ।
 तारतम कहे और कौन गिने गुन, हुआ न कोई होसी हम बिन ॥१६॥
 मैं गुन गिनूं श्रीधामधनी के रे, पर कमी कागद कलम मस^२ मेरे ।
 कमी तो केहेती हूं जो बैठी माया मांहे, ना तो कमी नहीं कछुए क्यांहे ॥१७॥
 साथ कारन मैं करूं पुकार, देखों वासना मोहजल वार पार ।
 तेरह धरके गिनूं गुन नील, घने समावें गुन हिरदे असील ॥१८॥
 चौदे धरके करूं नील दस, गुन प्रकास लेऊं धनी जस ।
 पंद्रे धरके करूं पदम, मेरे धनी के गुनकी मैं करूं गम ॥१९॥
 सोले धरके करूं पदम दस, गुन नजरों आवते हुए धनी बस ।
 सत्रे धरके करूं गुन अंक, अठारे धरूं ज्यों होए गुन संक ॥२०॥
 सुरिता करूं धरके उनईस, पत गुन ग्रहूं धरके बीस ।
 अंत करूं धरके इकैस, मध करूं गुन दोए धर बीस ॥२१॥
 एकड़ा ऊपर तेईस मींडे धरूं, प्रारध करके लेखा मेरा करूं ।
 लौकिक लेखे गुन न गिनाए, मेरे धनी के गुन यों गिने न जाए ॥२२॥

हिसाब करूं साथ देखियो विचार, गुन जाहेर हुए प्राणके आधार ।
 प्रार्थ गुने एक मींडेसों बढे, दूजे सों हर एक यों चढे ॥२३॥
 यों करते ए होवें जेते, इन बिध चढते जाए तेते ।
 ए हिसाब मेरी आतमा करे, गुन धनी हिरदे अंतर धरे ॥२४॥
 लिखते गुन धनी हिरदे आए, पर डरूं जानों कागद में न समाए ।
 कलमों को मेरा जीव ललचाए, गढते गढते जानों जिन उतर जाए ॥२५॥
 सरफा करूं मैं लिखते स्याही, जिन लिखते अधबीच घट जाई ।
 यों धरते धरते मींडे रहे भराए, वार किनार सब रहे समाए ॥२६॥
 ए कागद यों पूरन भया सही, स्याही कलमें कछू बाकी न रही ।
 अब ए गुन गिनूं मैं नीके कर, आतम के अंदर ले धर ॥२७॥
 ए तो गुन गिने मैं चित ल्याए, पर इन धनी के गुन यामें न समाए ।
 भी करूं दूजे लिखने के ठाम, गुन लिखने मेरे धनी श्रीधाम ॥२८॥
 ए गुन मिल जमें भए जेते, या बिध ऐसे कागद लिखे एते ।
 ऐसे कागद ऐसी स्याही कलम, मांहें बारीक आंक लिखे हैं हम ॥२९॥
 इन कलमों की मैं देखी अनी, कछू कर न सकी बारीक घनी ।
 ए गुन गिन मैं एकठे किए, सो अपने हिरदे में लिए ॥३०॥
 कलमें समारी जोस बुध बल, घडूं रास^१ कर काढ के बल ।
 एक जीव कहियत है कथुआ, ए जो जिमी पर पैदा हुआ ॥३१॥
 कथुए के पांउ का गुन जेता भाग, कलमों की टांक मैं देखी चीर लाग ।
 इन अनियों आंक लिखे यों कर, ए जेता कागद एती बेर फेर फेर ॥३२॥
 यों लिख लिख के मैं गिने गुन, पर मेरे धनी के गुन हैं अति घन ।
 ए गुन मिलाए के एकठे किए, सो नीके कर मैं चित में लिए ॥३३॥
 ए लिखते मोहे केती बेर भई, तिनका निरमान काढना सही ।
 जेते मिल के भए ए गुन, तेते बांटे किए एक खिन ॥३४॥

बेर भई एक बांटे जेती, ए सब कागद लिखे मांहें बेर एती ।
 ए लिख लिख के मैं लिखे अपार, अब ए बेर निरने करूं निरधार ॥३५॥
 गुन जेते महाप्रले भए, वाही जोस में लिख गुन कहे ।
 बीच में स्वांस न खाया एक, ढील ना करी कछू लिखते विसेक ॥३६॥
 एह जमें मैं गुन की कही, श्रीसुंदरबाईएँ सिखापन दई ।
 साथ जाने लेखा जोर किया अपार, पर मेरे जीव के दरद की न दबी किनार ॥३७॥
 जीव मेरा बड़ा वतनी पात्र, अजू जीव जानें ए लिख्या तुछ मात्र ।
 गुन तो बाकी भरे भंडार, सोई भंडार गुन गिनूं आधार ॥३८॥
 ए गुन गिने मैं हिरदे विचार, गुन जेते भंडार गिने निरधार ।
 गिनते गिनते बाकी देखे अपार, तिनका भी मैं करना निरवार ॥३९॥
 मैं ना करूं तो दूजा करे कौन, कर निरवार ग्रहूं धनी के गुन ।
 बाकी भंडार का लेखा देऊं मेरे पिउ, ए मुस्किल नहीं कछू मेरे जिउ ॥४०॥
 ए गुन गिन किए जीवें अपने हाथ, पल पल पसरे गुन प्राणनाथ ।
 ए सब तो कहूं जो गुन ठाढ़े रहे, ए गुन मन की न्यात दौड़े जाए ॥४१॥
 अब एता तो मैं किया निरमान, और बाकी कहूंगी मांहें फुरमान ।
 एक खिन के मैं बांटे किए, गुन जेते भाग विचार के लिए ॥४२॥
 तामें बेर एक बांटे की कही, पिया गुन एते में तेते किए सही ।
 ए गुन गिनते मेरा कारज सरया, आतम मूल सरूप हिरदे में धरया ॥४३॥
 सारे जनमके क्यों कहूं गुन, पिया देह धर आए किए धन धन ।
 गुन पांच जनम के क्यों कहूं सोय, धनी दया आई धनी की खुसबोए ॥४४॥
 ए गुन गिने मैं अस्थिर आकार, ना तो यों क्यों गिनूं मेरे प्राण के आधार ।
 अब बात करसी तुम अग्या केरी, मुझे आसा इत जाग उड़ाऊं अंधेरी ॥४५॥
 पिउ तुम आए माया देह धर, साथकी मत फिर गई क्यों कर ।
 हांसी करसी पिउ साथ पर, क्या करसी माया जब मांगी घर ॥४६॥

तुम लई खबर हमारी ततखिन, ले आए तारतम देखाया वतन ।
 पिया हांसी करसी अति जोर, भुलाए मायाएँ कर बैठाए चोर ॥४७॥
 अब करेंगे जाए वतन बात, माया अमल चढ्यो निघात^१ ।
 पिउ कई विध तारतम कियो रोसन, तो भी क्योंए न भैयां चेतन ॥४८॥
 लेवे इंद्रावती वारने गुन जेते, इत सुख दिए हमको एते ।
 घर के सुख की इत कैसी बात, घर के सुख घरों होसी विख्यात^२ ॥४९॥
 चरनों लाग कहें इंद्रावती, गुन न देखे किन एक रती ।
 धनी जगाए के देखावसी गुन, तब हांसी होसी अति घन ॥५०॥

॥प्रकरण॥१२॥चौपाई॥३१०॥

साथ को सिखापन

सुनो साथ मेरे सिरदार, वचन कहूं सो ग्रहो निरधार^३ ।
 एते गुन आपनसों कर, बैठे आपन में माया देह धर ॥१॥
 भानो भरम वचन देख कर, छोड़ो नींद रोसनी हिरदे धर ।
 श्रीधाम के धनी केहेलाए, सो बैठे आपन में इत आए ॥२॥
 सेवा कीजे पेहेचान चित धर, कारन अपने आए फेर ।
 भी अवसर आयो है हाथ, चेतन कर दिए प्राणनाथ ॥३॥
 इन ऊपर और कहा कहूं, मैं श्रीधनीजी के चरने रहूं ।
 कर जोड़ करूं विनती, दूर ना होऊं बेर पाओ पल जेती ॥४॥

॥प्रकरण॥१३॥चौपाई॥३१४॥

जीव को सिखापन

मेरे अंध अभागी जीव, तूं क्यों सूता इत ।
 बिध बिध धनिएँ जगाइया, अजहं ना घर सूझत ॥१॥
 आगे भी तें कहा कियो, चल गए पिउ जब ।
 अवगुन ना देखे अपने, पिउ मेहेर करी फेर अब ॥२॥

धाम धनी तुझ कारने, आए माया में दोए बेर ।
 मेहेर ना देखे पिउ की, ऐसो हिरदे निपट अंधेर ॥३॥
 आप पकड़ तूं अपना, बल कर आंखां खोल ।
 दूध पानी दोऊ जाहेर, देख नीके तारतम बोल ॥४॥
 पेहेले तो आंखां फूटियां, अब तो कछुक संभाल ।
 ए जासी अवसर हाथ से, पीछे होसी कौन हवाल ॥५॥
 आगे उलटा हुआ अकरमी, अजहूं ना करे कछु सुध ।
 जागत नहीं क्यों जोर कर, ले हिरदे मूल बुध ॥६॥
 पुकार सुनी दोऊ पिउ की, वतन देखाया नजर ।
 उठी ना अंग मरोर के, अब आई नजीक फजर ॥७॥
 तारतम देख विचार के, पिउ ल्याए बेर दोए ।
 एती आग सिर पर जली, तूं रह्या खांगडू होए ॥८॥

॥प्रकरण॥१४॥चौपाई॥३२२॥

मेरे जीव अभागी रे, जिन भूले तूं अब ।
 इन मोहजल से काढ़न वाला, ऐसा ना मिलसी कोई कब ॥१॥
 ए गुन तूं याद कर, जो किए अनेक सजन ।
 तूं क्यों सूता जीव अभागी, देकर साहेबी मन ॥२॥
 पेहेले तें काढ़े वचन, सो क्या मन की दोर ।
 बुध मन तेरे बैठे रहेसी, जीव को क्रोध काढ़सी जोर ॥३॥
 जीव तूं क्यों होत है निलज, तोहे अजूं ना लगे घाए ।
 याद करके पिउ को, क्यों ना उड़े अरवाए ॥४॥
 जो अब जीवरा भूलसी, तो देखी तेरी बिध ।
 काढूंगी तुझे जोरसे, करके बुरी सनंध ॥५॥

पेहेले तो तें बुरी करी, अब जिन चूके अवसर ।
 पिउ तोकों वतन में, बुलावत हैं हंसकर ॥६॥
 ससुई^१ सो भी यों कहे, मैं हाथों अपना मार ।
 पुनो^२ की बधाई में, देऊं कोट सिर उतार ॥७॥
 क्यों ना देखे ए वचन, भट परो मेरे जिउ ।
 तूं लेत निमूना किनका, तूं कौन कौन तेरा पिउ ॥८॥
 दुनियां चौदे भवन में, जो देखिए मूल अर्थ ।
 जो लेवे तेरा निमूना, ऐसा ना कोई समरथ ॥९॥
 तूं निमूना माया जीव का, क्यों कर लेवे इत ।
 ए दाग तेरा क्यों छूटहीं, ए तुझे लाग्या जित ॥१०॥
 अजूं सुध तोको न होत, तेरी क्यों हुई ऐसी रसम ।
 याद कर अपना वतन, जो तें सुनी बात खसम ॥११॥
 तूं भूल जात क्यों वचन, जो श्रीधाम धनी कहे आप ।
 एक आधा सुकन विचारते, तो पलक न छोड़े मिलाप ॥१२॥
 तोको कहूं अभागी अकरमी, जो जाग्या ना एते सोर ।
 सात बेर तोको कहूं सोहागी, जो तूं उठे अंग मरोर^३ ॥१३॥

॥प्रकरण॥१५॥चौपाई॥३३५॥

मेरे जीव सोहागी रे, जिन छोड़े पिउ कदम ।
 दूसरी बेर माया मिने, तुझ कारन आए खसम ॥१॥
 गुन धनी के याद कर, पकड़ पिउ के पाए ।
 सुखे बैठ सुखपाल में, देसी वतन पोहोंचाए ॥२॥
 खेल हंस कर बातड़ी, पेहेचान अपना पिउ ।
 दो बेर धनी तुझ कारने, आए जान अपना जिउ ॥३॥

हैं कैसे धनी देख तूं, तोसों करी है ज्यों ।
 आप ना रख्या आपना, सो याद न कीजे क्यों ॥४॥
 कर हिंमत बांध कमर, ले हुकम सब हाथ ।
 पिउ पास हो पेहेचान के, और छोड़ सब साथ ॥५॥
 आप कहियो अपने साथ को, जो तुझे खुले वचन ।
 सुध तो नहीं कछू साथ को, पर तो भी अपने सजन^१ ॥६॥

॥प्रकरण॥१६॥चौपाई॥३४१॥

मेरे साथ सोहागी^२ रे, पिउसों क्यों न करो पेहेचान ।
 पेहेले चले पेहेचान बिना, फेर आए सो अपनी जान ॥१॥
 सोई पिउ सोई बातड़ी, फेर सोई करे पुकार ।
 कारन अपने पिउ को, आंखों आवे जलधार ॥२॥
 सोई नसीहत^३ देत सजन, खँचत तरफ वतन ।
 पिउ पुकारें बेर दूसरी, अब क्यों हों पीछे आपन ॥३॥
 सोई कूकां^४ करे पेहेले की, सो क्यों न समझो बात ।
 न तो दिन उजाले खरे दो पोहोरे, अब हो जासी रात ॥४॥
 फेर पटकोगे हाथड़े, और छाती देओगे घाउ ।
 चल जासी पिउ हाथ से, फेर न पाओगे दाउ ॥५॥
 विलख विलख कहे वचन, रोए रोए किए बयान ।
 प्रेम करे अति प्रीतसों, पर साथ को सुध न सान^५ ॥६॥
 माया देखी बीच पैठ के, पिउ के उजाले तुम ।
 विध विध खेल देखावने, पिउ ल्याए तारतम ॥७॥
 ए जो मांगी तुम माया, सो देखे तीन संसार ।
 अब साथ पिउ संग चलिए, ज्यों पिउ पावें करार ॥८॥

पिउ पांच बेर हम वास्ते, सागर में डारया आप ।
 सो नजरों न आवे प्रेम बिना, बिना मेहेर या मिलाप ॥९॥
 भले देखो तुम आकार को, पर देखो अंदर का तेज ।
 धनीधाम के साथसों, कैसा करत हैं हेज^१ ॥१०॥
 अब कैसी विध करूं तुमसों, कछू ना पेहेचाने सजन ।
 सोर हुआ एता तुम पर, क्यों आवे नींद आंखन ॥११॥
 ना गई नींद अंदर की, क्यों एते बान सहे ।
 जाग चलो संग पिउ के, पीछे करोगे कहा रहे ॥१२॥
 तुमें धनी बिना कौन दूसरा, ए उड़ावे अंधेर ।
 तुम देखो साथ विचार के, जिन भूलो इन बेर ॥१३॥
 एक बेर भूले आदमी, ताए और बेर आवे बुध ।
 ए चोटां सहियां सिर एतियां, तो भी ना हुई तुमें सुध ॥१४॥
 अब ढील ना कीजे एक पल, इत नाहीं बैठन का लाग^२ ।
 एक पलक के कोटमें हिसे, हो जासी बड़ा अभाग^३ ॥१५॥
 कहूं गुसा कर वचन, सो ना वले मेरी जुबांए ।
 पर इत नफा क्या होएसी, तुम रहे माया लगाए ॥१६॥
 टेढ़े सुकन तुमे कहूं, सो काट करूं जुबां दूर ।
 पर इन मायाका तुमको, कहा होसी रोसन नूर ॥१७॥
 ना पेहेचाने इन उजाले, ए दोए साख पूरन ।
 पीछे पिउ आगे वतन में, क्यों होसी मुख रोसन ॥१८॥
 पेहेले नजरों देखते, गयो अवसर टूटी आस ।
 निकस गए जब हाथ से, तब आपन भए निरास ॥१९॥
 ए ठौर ऐसा विखम^४, नास होए मिने खिन ।
 स्याने हो तुम साथजी, सब चतुर वचिखिन^५ ॥२०॥

तुम स्याने मेरे साथजी, जिन रहो विखे रस लाग ।
पांउ पकड़ कहे इंद्रावती, उठ खड़े रहो जाग ॥२१॥

॥प्रकरण॥१७॥चौपाई॥३६२॥

श्री धनीजी के लागूं पाए^१, मेरे पिउजी फेरा सुफल हो जाए ।
ज्यों पिउ ओलखाए मेरे पिउजी, सुनियो हो प्यारे मेरी विनती ॥१॥
मैं पेहेले ना पेहेचाने श्री राज, मोहे आड़ी भई माया की लाज ।
भवसागर की किने पाई न किनार, सो तुम सेहेजे उतारे पार ॥२॥
तुम अपनी जान दया कर, धनी लेवे त्यों लई खबर ।
माया गम सास्त्रों मांहें, सो त्रिगुन भी समझत नाहें ॥३॥
सो तारतम केहे करी रोसन, और देवाई साख सास्त्रों वचन ।
हम मांग लई जो माया, सो पेहेचान के खेल देखाया ॥४॥
उमेद करी जो सैयन, सो इत आए करी पूरन ।
तुम उमेद करते मने किए, तो भी खेल देखाए सुख दिए ॥५॥
हमको खेल देखन की लागी रठ^२, सो इत आए देखाई कर मन द्रठ ।
तुम हमको खेल देखावन काज, हमसों आगे आए श्री राज ॥६॥
तुम बिना लाड़ पूरन कौन करे, इन माया में दूजी बेर देह कौन धरे ।
तुम मोसों गुन किए अनेक, सो चुभे मेरे हिरदे में लेख ॥७॥
तुम पर वार डारूं जीवसो देह, तुम किए मोसों अधिक सनेह ।
मैं वारने लेऊं तुम पर, मैं सुखरू^३ होऊंगी क्यों कर ॥८॥
तुम हो हमारे धनी, तो पूरी आसा लाख गुनी ।
इंद्रावती चरनों लागे, कृपा करो तो जागी जागे ॥९॥

॥प्रकरण॥१८॥चौपाई॥३७१॥

अखंड दंडवत करूं परनाम, हैड़े भीड़के भानूं हाम^४ ।
प्रेमें देऊं प्रदखिना^५, बेर बेर अनेक अति घना ॥१॥

बल बल जाऊं मुखारके बिंद, वरनन करूं सरूप सनंध ।
 वारने जाऊं नैनों पर, देखत हो सीतल द्रष्ट कर ॥२॥
 वारने ऊपर लेऊं वारने, सुख दिए मोको अति घने ।
 बेर बेर मैं लागूं पाए, सेवा करूं हिरदे चित ल्याए ॥३॥
 वार फेर डारूं मेरी देह, इंद्रावती कहे अधिक सनेह ।
 बोहोत अस्तुत मैं जाए ना कही, अपने घर की बात जो भई ॥४॥
 अपनी बड़ाई आप मुख होए, ताको मूरख कहे सब कोए ।
 पर जैसी बात तैसा बरनन, करसी विचार चतुर अति घन ॥५॥
 वचन धनी के कहे परवान^१, प्रगट लीला होसी निरवान ।
 चौदे भवन का कहिए सूर, रास प्रकास उदे हुआ नूर ॥६॥
 चौदे भवन में जोत न समाए, ए नूर किरना किने पकड़ी न जाए ।
 सब्दातीत ब्रह्मांड किए प्रकास, देखसी साथ एह उजास ॥७॥
 प्रकास के वचन निरधार, वचन सब करसी विचार ।
 आगे बड़ो होसी विस्तार, अखंड सब होसी संसार ॥८॥
 इन लीला को करसी विचार, क्या करसी ताको संसार ।
 प्रगट नीउ बांधी है एह, बड़ी इमारत होसी जेह ॥९॥
 सुनो वचन ब्रह्मसृष्टी जाग, इंद्रावती कहे चरनों लाग ।
 ए बानी मेरे धनिऐं कही, फेर फेर तुमको कृपा भई ॥१०॥
 ऐसा पकव^२ प्रवीन^३ ना कछू हूं, तो सिखापन तुमको क्यों देऊं ।
 मैं मन में यों जान्या सही, जीव अपना समझाऊं रही ॥११॥
 पर साथ ऊपर दया अति घनी, फेर फेर कृपा करत हैं धनी ।
 तो वचन तुमको कहे जाए, ना तो चींटी मुख कुम्हड़ा न समाए ॥१२॥
 जिन तुम वचन विसारो एक, कारन साथ कहे विसेक ।
 वचन कहे हैं कीजो त्यों, आपन पेहेले पांउ भरे हैं ज्यों ॥१३॥

फेर अवसर आयो है हाथ, चरने लाग केहेती हूं साथ ।
 अब चरने लागूं धनी चितधरी, तुम खबर मेरी भली बिध करी ॥१४॥
 ए माया बोहोत जोरावर हती, दूर करी मेरे प्राणपति ।
 माया को तजारक^१ भई, तिन कारन ए विनती कही ॥१५॥
 ए विनती सुनियो तुम सार, माया दुख पायो निरधार ।
 ए माया बातें हैं अति घनी, मोहे मुखथें काढ़ी मेरे धनी ॥१६॥
 तुमारे गुन की कहा कहूं बात, तुम लाड़ पूरे करके अपन्यात ।
 पिउ ने अपनी जानी परवान, इंद्रावती चरने राखी निरवान ॥१७॥
 श्री सुंदरबाई के चरन पसाए, मूल वचन हिरदे चढ़ आए ।
 चरन फले निध आई एह, अब ना छोड़ूं चित चरन सनेह ॥१८॥
 चरन तले कियो निवास, इंद्रावती गावे प्रकास ।
 भान के भरम कियो उजास, पावे फल कारन विस्वास ॥१९॥
 विस्वास करके दौड़े जे, तारतम को फल सोई ले ।
 तिन कारन करों प्रकास, ब्रह्मसृष्टी पूरन करूं आस ॥२०॥
 इंद्रावती धनी के पास, रास को कियो प्रकास ।
 धनिऐं दई मोहे जाग्रत बुध, तो प्रकास करूं तारतम की निध ॥२१॥
 ॥प्रकरण॥१९॥चौपाई॥३९२॥

अस्तुत कर गुन फिराए हैं

अब करूं अस्तुत आधार, वल्लभ सुनो विनती ।
 एते दिन मैं ना पेहेचाने, मोहे लेहेर माया जोर हुती ॥१॥
 भानूं भरम मोह जो मूलको, लेऊं सो जीव जगाए ।
 करूं अस्तुत पियाकी प्रगट, देऊं सो पट उड़ाए ॥२॥
 सोभा पिउ की सब्दातीत, सो आवत नहीं जुबांए ।
 जोगवाई^२ जेती इन अंग की, सो सब मूल प्रकृती मांहे ॥३॥

अब किन विध करूं मैं अस्तुत, मेरे जीव को ना कछू बल ।
 जीव जोगवाई सब अस्थिर की, क्यों बरनों सोभा नेहेचल' ॥४॥
 पेहेले जीवों करी अस्तुत, भली भांत भगवान ।
 पंडिताई चतुराई महाप्रवीनी, किव कर हिरदे आन ॥५॥
 ए किव प्रवाही जब देखिए, तामे कोई कोई भारी वचन ।
 ए तो देवें सोभा अचेत में, पर मोहे सालत है मन ॥६॥
 बेसुध भए देवे एती सोभा, तो कहा करे कर पेहेचान ।
 जो मुख वचन एक कहों प्रवाही, तो सुन्या नहीं निरवान ॥७॥
 न कछू सुनिया वेद पुरान, न कछू किव चातुरी ।
 एक दोए वचन सुने मुख धनी के, तिनसे सुध सब परी ॥८॥
 सो भी ना सुन्या चित देयके, न तो जोर गया पूर चल ।
 पर जो रे गुन आड़े माया के, तार्थें ले न सकी बूंद जल ॥९॥
 अब तिन गुन को कहा दीजे उपमा, धिक धिक पड़ो ए बुध ।
 आगे तूं सिरदार सबन के, तें क्यों न लई ए निध ॥१०॥
 अब जागी बुध कहूं मैं तोको, तूं है बुध को अवतार ।
 कर निरने तूं माया ब्रह्म को, खोल तूं पार द्वार ॥११॥
 और न कोई बुध मुझ जैसी, मैं ही बुध अवतार ।
 धाम धनी ग्रहूं इन विध, और अखंड करूं संसार ॥१२॥
 ए बुध रही हमारे आसरे, जो सब थें बड़ा अवतार ।
 बुधजी बिना माया ब्रह्म को, कोई कर न सके निरवार ॥१३॥
 सुन्य निराकार निरंजन, तिनके पार के पार ।
 बानी गाऊं तित पोहोंच के, इन चरनों बुध बलिहार ॥१४॥
 जो नहीं विष्णु महाविष्णु को, बुधजी पोहोंचे तित ।
 मेरे हिरदे चरन धनी के, इने ए फल पाया इत ॥१५॥

ए सार पाए सुख उपजे, धन धन ए बुध अवतार ।
 अबलों किन ब्रह्मांड में, किन खोल्या न ए दरबार ॥१६॥
 लीला इन अवतार की, करसी सब अखंड ।
 धन धन इन अवतार की, वानी गासी सब ब्रह्मांड ॥१७॥
 अब कहूं तोको श्रवना, तोको धनिए कहे वचन ।
 क्यों न लई बानी वचिखिन, फिट फिट भूंडे करन ॥१८॥
 मेरे तो मुदा तुम ऊपर, लेना तुमारे जोर ।
 धनिएं तो धन बोहोतक दिया, पर तें लिया न हरामखोर ॥१९॥
 अब अपना तूं संभार श्रवना, हो वचिखिन वीर ।
 वानी जो वल्लभ की, सो लीजो द्रढ़ कर धीर ॥२०॥
 श्रवना कहे सुने मैं नीके, विध विध के वचन ।
 पूरी पिउ ने आस हमारी, उपज्यो आनंद घन ॥२१॥
 अब वचन लेऊं सब सार के, भी यों कहे श्रवन ।
 इन विध बानी ग्रहं मैं प्यारी, ज्यों सब कोई कहे धन धन ॥२२॥
 बेसुध नींद कहूं मैं तोको, तूं निठुर नीच निरधार ।
 हुई तूं सब गुन के आड़े, ना लेने दई निध आधार ॥२३॥
 तूं तो माया रूप पापनी, तें डबोई ले कर बाथ ।
 तें श्रवना को सुनने ना दिया, आलस जम्हाई तेरे साथ ॥२४॥
 अनेक अंधेर दई तें जीव को, ज्यों मीन बांधे मांहे जाल ।
 जिन नैनों निध निरखूं निरमल, तिन नैनों आड़ी भई पाल ॥२५॥
 फिट फिट भूंडी दुष्ट पापनी, तोको दई अनेक धिकार ।
 पेहेले अवसर गमाईया, अब नीके निरखो भरतार ॥२६॥
 तूं करत मृतक समान, ऐसी निपट निखर ।
 अब तूं आओ आड़ी माया के, ज्यों निरखूं धनी निज घर ॥२७॥

नींद कहे आत्म जब जागी, तब क्यों रह्यो मैं जाए ।
 नींद कहे मैं जात हों, लागूं तुमारे पाए ॥२८॥
 अब आई तूं अरुचड़ी, जब मिले मोहे श्री राज ।
 ऐसी अंधी अकरमन, तूं सरजी किस काज ॥२९॥
 फिट फिट भूंडी तें भुलाई, अब कर कछू बल ।
 आत्म दृष्ट जुड़ी परआत्म, हो माया मांहे नहेचल ॥३०॥
 अरुचड़ी कहे मैं बलवंती, मोको न जाने कोए ।
 छानी होए के बैठूं जीव में, भानूं सो साजा न होए ॥३१॥
 धनी अपना जब आप संभारे, तब चोरी करे क्यों चोर ।
 अब उलटाए करूं मैं सीधा, बैठों माया में जोर ॥३२॥
 तलबे^१ सेवा करूं सब अंगों, मोहे मिले धनी एकांत ।
 तिन समें आए बैठी अंग में, फिट फिट भूंडी स्वांत ॥३३॥
 धनी मिले स्वांत न कीजे, क्यों बैठिए करार ।
 जाग दौड़ कीजे सब अंगों, स्वांत कीजे संसार ॥३४॥
 स्वांत कहे मैं तबलो थी, जोलो नींद हुती आत्म ।
 अब मैं बैठी तरफ माया के, विलसो अपना खसम ॥३५॥
 अब कहूं तोको लोभ लालची, फिट फिट मूरख अजान ।
 लोभ न लाग्या चरन धनी के, जासों पाईए घर निरवान^२ ॥३६॥
 अब जिन जाओ तरफ माया के, मेरे लोभ लालच दोऊ जोड़ ।
 जोर पकड़ो दोऊ पाउं पिउ के, करो रात दिन दौड़ ॥३७॥
 कहे लोभ लालच क्या गुनाह हमारा, जोलो जीव ना करे खबर ।
 अब तुम पिउ देखाया हमको, तो देखो पिउ ग्रहें द्रढ़ कर ॥३८॥
 भट परो तृष्णा कहूं तोको, तूं निपट निठुर निरधार ।
 और सबे गुन तृपत^३ होवें, पर तो मैं कोई भूख भंडार ॥३९॥

अब तोको क्यों काढ़ूं रे तृष्णा, तोसों बड़ा मोहे काम ।
 तृष्णा लाग तूं पूरन पिउसों, ज्यों बस करूं धनी श्रीधाम ॥४०॥
 तृष्णा कहे मैं क्योंए ना छोड़ूं, जो आतमाए देखाया आधार ।
 तुम जाए गुन और फिराओ, मैं छोड़ूं नहीं निरधार ॥४१॥
 मूरख मोह कहूं मैं तोको, जब आतम धनी घर आया ।
 इन अवसर तूं चूक्या चंडाल, जाए बैठा मांहे माया ॥४२॥
 अब आओ तूं वालाजी में, मायासों कर बिछोह^१ ।
 देखूं जोर करे तूं कैसा, सांचे सिपाही मेरे मोह ॥४३॥
 बात बड़ी कहे मोह मेरी, मोको जाने प्रेमी सोए ।
 मैं बैठत हों जित आए के, तितथें उठाए न सके कोए ॥४४॥
 जो तुम धनी देखाया मोको, होए लागूं मूरख मूढ़ अंध ।
 एकै विध है मेरी ऐसी, और न जानूं सनंध^२ ॥४५॥
 हरख सोक तुम भए माया के, धिक धिक तुमको अजान ।
 आए धनी हरख न आया, चले सोक न आया निदान^३ ॥४६॥
 हरख सोक कहे हम निठुर, भए सो अंध अभागी ।
 धनी बिगर करे कहा हम, जोलों जीव न कहे जागी ॥४७॥
 अब तुम आओ नेहेचल सुख में, जिन भूलो अवसर ।
 माया में लाहा लेऊं धनी का, हरख ले जागो घर ॥४८॥
 हरख कहे मैं क्या करों, जो जीव को नहीं खबर ।
 सोक कहे न पेहेचान पिउ की, तो बिछुरे जाने क्योंकर ॥४९॥
 हरख सोक कहे हम बलिये, दोऊ जोधा बड़े जोरावर ।
 अब पेहेचान करी तुम पिउ की, अब क्योंए न भूलों अवसर ॥५०॥
 फिट फिट जोधा जोरावर तुमको, मद मत्सर अहंकार ।
 तुम अंतराय करी धनीसों, दौड़ करी संसार ॥५१॥

तुम तीनों जोधा भए क्यों उलटे, भए माया के दास ।
 जब जीवनजीं मिले जीवको, तब क्यों न कियो उलास ॥५२॥
 अब तुम संगी हूजो मेरे, धनिऐं कियो मोसों मिलाप ।
 सिर ल्यो सोभा धनी धामकी, दूर हो मायार्थें आप ॥५३॥
 तीनों जोधा बड़े जोरावर, हम तीनों की राह एक ।
 धनी आत्म से क्यों ए न छूटे, जो पड़े विघन अनेक ॥५४॥
 सेहेजे सुभाव फिट फिट तुमको, ऐसे सूर सुभट ।
 सांचे तुम हुए मायासों, मोसों मिले कपट ॥५५॥
 मूरख मूढ़ करी तुम दुष्टाई, हुए नहीं स्वाम धरमी ।
 मूरख मूढ़ करी तुम ऐसी, धिक धिक चंडाल अकरमी ॥५६॥
 जोधा दोऊ जोरावर मेरे, तुम तरफ हो जिनकी ।
 अनेक उपाय करे जो कोई, पर जीत होए तिनकी ॥५७॥
 अब तुमको कहूं खीज के, तुम हूजो सावधान ।
 प्रेमैं पिउ रूदे लपटाओ, जिन करो किन की कान^१ ॥५८॥
 सेहेजे सुभाव दोऊ हम बलिए, कोई करे जो कोट उपाए ।
 पकड़ें बात जो हम सांची, सो लोपी^२ किनहूं न जाए ॥५९॥
 अब देखियो जीव जोर हमारा, पिउ पकड़ देवें एकांत ।
 पूरा पास देऊं रंग लाखी, सो क्योंए ना उचटे भांत ॥६०॥
 ममता तूं भई माया की, हलाक किए हैरान ।
 फिट फिट भूंड़ी चंडालन, तें बड़ी करी मोहे हान ॥६१॥
 अब ममता आओ मेरे पिउ में, तोको पेहेले दर्ई धिकार ।
 अब संघातन^३ हूजो मेरी, मोहे मिले पिउ सिरदार ॥६२॥
 अब मैं चेरी हुई तुमारी, ले देऊं सांची निध ।
 अब के ए निध क्योंए ना छूटे, करो कारज तुम सिध ॥६३॥

अब फिटकार देऊं कल्पना, उलटी तूं अकरमन ।
 फिराए खाली करी फजीत, आतम को अति घन ॥६४॥
 अब करमन तूं हो कल्पना, कर सेवा मांहे विचार ।
 धाम धनी मोहे मिले माया में, लाभ लेऊं मांहे संसार ॥६५॥
 कहे कल्पना ए काम मेरा, करूं नए नए अंग उत्पन ।
 बिध बिध की सेवा देखाऊं, धनी विलसो होए धन धन ॥६६॥
 वैर राग तुम दोऊ जोधा, सूर साम सामे सिरदार ।
 वैर किया तुम वल्लभजीसों, राग किया संसार ॥६७॥
 बुरी करी तुम अति मोसों, अब मांरूं जमधर घाव ।
 अब अवसर फेर आयो मेरे, जो भुलाए दियो तुम दाव ॥६८॥
 तुम पर मेरे है मुद्दार, ऐसी पीठ क्यों दीजे ।
 आतम संग मिलाए धनीजी, धन धन मोहे कीजे ॥६९॥
 जुध करो तुम दोऊ जोधा, राग आओ धनी धाम पाया ।
 बिध बिध वैर कर कठनाई, जाए बैठो मांहे माया ॥७०॥
 वैर राग कहे क्या गुनाह हमारा, जो जीव न राखे घर ।
 जो न देखावे धनी विवेकें, तो हम पकड़ें क्यों कर ॥७१॥
 राग कहे मैं भली भांते, पिउजीसों करों रस रीत ।
 जीव धनी बीच अंतर टालू, गुन देऊं सारे जीत ॥७२॥
 वैर कहे देखियो बिध मेरी, संग ना आवे संसार ।
 कोई गुन जीवसों करे लड़ाई, तो मोको दीजो धिकार ॥७३॥
 धिक धिक स्वाद कहूं मैं तोको, मोहे मिल्या था मीठा जीवन ।
 सो ए स्वाद छोड़ अभागी, जाए पड़या संसार विघन ॥७४॥
 अब तूं स्वाद हो सोहागी, ले धनी की मिठास ।
 इन रंग रस आयो जब स्वाद, तब जेहेर होसी सब नास ॥७५॥

स्वाद कहे जब ए सुख आया, तब अभख^१ हुआ मोहजल ।
 झूठा रंग सब उड़ गया, रस रंग भया नेहेचल ॥७६॥
 फिट फिट भूंडे दुष्ट अभागी, मोहे करायो धनीसों ब्रोध ।
 मैं जान्या था सखा मेरा, पर तें कमल^२ फिराया क्रोध ॥७७॥
 आया नहीं माया के आड़े, तें किया न मेरा काम ।
 अवसर आए चूक्या चंडाल, रहे गई हैड़े में हाम ॥७८॥
 अब क्रोध तूं कमल फिराओ, उलटाए दे संसार ।
 जोधा जोरावर अब क्या देखे, कर दे जय जय कार ॥७९॥
 क्रोध कहे मैं अति बलवंता, पर क्या करूं धनी बिन ।
 अब उलटाए देऊं कर सीधा, फेर कबहूं ना होवे दुस्मन ॥८०॥
 अब तोको कहूं चाक चकरड़ा, तूं चढ़ बैठा जीव के सिर ।
 तें खाली ऐसा फिराया, रहे ना सके क्योंए थिर ॥८१॥
 अंध अभागी क्यों हुआ ऐसा, तें क्या सुने न धनी के वचन ।
 धनी मिले तूं थिर ना हुआ, फिट फिट भूंडे मन ॥८२॥
 समरथ मन तूं बड़ा जोरावर, क्या कहूं तेरो विस्तार ।
 तुझ में फैल^३ विध विध के, अलेखे अपार ॥८३॥
 तोसों तो काम बड़ा है मेरा, मद मस्त मेवार^४ ।
 फिर तूं पख पचीस माहें, बलवंता बेसुमार ॥८४॥
 संकल्प विकल्प है तुझमें, सेवा कर धनी धाम ।
 उमंग अंग आन निसवासर^५, कर पूरन मन काम ॥८५॥
 बात बड़ी कहे मन मेरी, मैं सकल विध जानों ।
 मूल बिना करूं सिरदारी, जीव को भी बस आनों ॥८६॥
 जोलों जीव जागे नहीं, तोलों कहा करें हम ।
 जोर हमारा तबहीं चले, जब जाग बैठो तुम ॥८७॥

अब तुम बिध मेरी देखियो, सब बिध करूं रोसन ।
 धाम धनी आन देऊं अंगमें, तो कहियो सिरदार सबन ॥८८॥
 कोई जो कदर जाने मेरी, अंग अंदर आनूं वतन ।
 अनेक विध सेवा उपजाऊं, धनी न्यारे न होवे खिन ॥८९॥
 बुरी करी तुम भरम भ्रांतड़ी, यों न करे दूजा कोए ।
 तारतम जोत उदोत के आगे, संसे कबूं ना होए ॥९०॥
 संसे भ्रांत के आकार, जो कदी होते तुमारे ।
 टूक टूक करूं मैं तिल तिल, फेर फेर तीखी तरवारे ॥९१॥
 अब जोर कर जाओ माया में, इनके संग होए तुम ।
 उजाले तारतम के पेहेचान, ज्यों मूल सरूप देखें हम ॥९२॥
 अंतर भ्रांत कहे तुम फेर फेर, मार मार देखाओ डर ।
 नींद कर बैठे इन जिमी में, सो आप न करो खबर ॥९३॥
 घर का धनी अखंड फल पावे, सो इत क्यों सोवे करारे ।
 गफलत को न छोड़े आपे, फेर फेर हमको मारे ॥९४॥
 अब इन तारतम के उजाले, करूं तारतम रोसन ।
 नेहेचल सुख लेओ तुम सांचे, और भी देऊं सबन ॥९५॥
 फिट फिट लज्या तूं भई लौकिक, बांधे कबीले सों करम ।
 धनी मेरे मोहे आए बुलावन, तित तोहे न आई सरम ॥९६॥
 कहा कियो तें दुष्ट पापनी, ऐसी न करे कोए ।
 घर धाम धनी के आगे, करी सरमिंदी मोहे ॥९७॥
 अब सरमिंदी कहूं मैं तोको, तूं देख परआतम सगाई ।
 बड़ा अवसर पेहेले तूं चूकी, अब फेर आई जोगवाई ॥९८॥
 कहे लज्या मैं पेहेले भूली, अवसर धनी ना छोड़ूं ।
 सिर माया का भान के, पिउसों मुख ना मोड़ूं ॥९९॥

फिट फिट आसा तूं भई माया की, बैठी मोहजल में आए ।
 मैं माया में अखंड फल पाया, सो मोहे दियो हराए ॥१००॥
 अखंड धनी फल छोड़ के, निरफल माया झूठ लई ।
 ए सिर गुनाह हुआ जीव के, तोको सिखापन ना दर्ई ॥१०१॥
 कहे आसा मोहे दर्ई जगाए, निकट न जाऊं मोहजल ।
 इन बल मांहे कमी न राखूं, लागी आतम आसा सुफल ॥१०२॥
 गुन गरीबन आई अकरमन, ना भई सनमुख सावधान ।
 लाहा लीजे दौड़ धनी का, सो दिया गरीबी भान ॥१०३॥
 किन बिध कहूं या सुख की, फिट फिट भूंडे अचेत ।
 तुझ बैठे न आई तीव्रता, ना तो ए सुख लेत ॥१०४॥
 कहे गरीबी मैं माया की, मैं बैठों माया मांहे ।
 लीजो लाहा सुख नेहेचल का, श्री धाम धनी हैं जांहे ॥१०५॥
 फिट फिट भूंडी न आई तीव्रता, मोहे मिले थे धाम धनी ।
 ऐसा विलास खोया तें मेरा, बोहोत बुरी करी घनी ॥१०६॥
 फेर अवसर आयो है मेरे, चित चेतन कीजे बल ।
 रात दिन जगाए जीव को, जिन दे मिलने पल ॥१०७॥
 तुझमें बल है सावचेती, चित चेतन अति रोसन ।
 परआतम बस कर दे आतमां, ना होए अंतराए एक खिन ॥१०८॥
 सील संतोख आओ ढिग मेरे, बांधो सागर आड़ी पाल ।
 गुन सारे हुए अग्या में, पीछे रह्या न कछू जंजाल ॥१०९॥
 सील कहे संतोख सुनो, आपन हुए माया के पाल ।
 कई बहावे पहाड़ पूर सागर के, मांहे लेहेरें बेहेवट निताल ॥११०॥
 भमरियां मांहे बेसुमार, लेहेरां मेर समान ।
 मछ लड़े बड़े मोहजल के, करनी पाल इस ठाम ॥१११॥

अब बांधनी पाल^१ खरी^२ करनी, ज्यों ना खसे^३ लगार ।
 पीछे^४ जल जोर बढ़ा ऊपर अपने, तब सामी सोभा होसी अपार ॥११२॥
 एह पाल हम बांधी जीवजी, पर तुम जाग करो सावचेत^५ ।
 फेर नहीं आवे ऐसा समया, सोभा ल्यो साथ में इत ॥११३॥
 जाग जीव तूं जोरावर, क्या देऊं तोको गारी ।
 तें होए चंडाल अवसर खोया, जीती बाजी हारी ॥११४॥
 कठनाई मैं देखी तेरी, तूं निठुर निपट अपार ।
 थके धनी तोहे धम धमके, पर तें गल्या नहीं निरधार ॥११५॥

॥प्रकरण॥२०॥चौपाई॥५०७॥

जीव को सिखापन

सुन मेरे जीव कहूं वृतांत, तोको एक देऊं द्रष्टांत ।
 सो तूं सुनियो एकै चित, तोसों कहत हों करके हित ॥१॥
 परीछितें यों पूछ्यो प्रस्न, सुकजी मोको कहो वचन ।
 चौदे भवन में बड़ा जोए, मोको उत्तर दीजे सोए ॥२॥
 तब सुकजी यों बोले प्रमान, लीजो वचन उत्तम कर जान ।
 चौदे भवन में बड़ा सोए, बड़ी मत का धनी जोए ॥३॥
 भी राजाएँ पूछा यों, बड़ी मत सो जानिए क्यों ।
 बड़ी मत को कहूं विचार, लीजो राजा सबको सार ॥४॥
 बड़ी मत सो कहिए ताए, श्री कृष्णजी सों प्रेम उपजाए ।
 मत की मत तो ए है सार, और मत को कहूं विचार ॥५॥
 बिना श्री कृष्णजी जेती मत, सो तूं जानियो सबे कुमत ।
 कुमत सो कहिए किनको, सबथें बुरी जानिए तिनको ॥६॥
 ऐसो तिन को कहा वृतांत, सो भी राजा तोको कहूं द्रष्टांत ।
 सुन राजा कहूं सो जुगत, जासों पेहेचान होवे दोऊ मत ॥७॥

१. मेड । २. अच्छी तरह से (भली भांति) । ३. खिसकना, हिलना - डुलना । ४. पीछे धकेलना (खदेडना) ।
 ५. सतर्क होना ।

श्री कृष्णजी सों प्रेम करे बड़ी मत, सो पोहोंचावे अखंड घर जित ।
 ताए आड़ो न आवे भवसागर, सो अखंड सुख पावे निज घर ॥८॥
 ए सुख या मुख कह्यो न जाए, याको अनुभवी जाने ताए ।
 ए कुमत कहिए तिनसे कहा होए, अंधकूप में पड़िया सोए ॥९॥
 सब दुखों में बुरा ए दुख, कुमत करे धनीसों बेमुख ।
 केतो कहूं या दुख को विस्तार, जाके उलटे अंग इंद्रि विकार ॥१०॥
 दोऊ मत को कह्यो प्रकार, ए ब्रह्मसृष्टी करें विचार ।
 जाको जाग्रत है बड़ी बुध, चेतें अवसर जाके हिरदे सुध ॥११॥
 ए सुकजी के कहे वचन, नीके फिकर कर देखो मन ।
 बोहोत फिकर की नहीं ए बात, ए समया हाथ ताली दिए जात ॥१२॥
 तेरी गिनती बांधी स्वांसों स्वांस, तिनको भी नहीं विस्वास ।
 केते रहे बाकी तेरे स्वांस, एक स्वांस की भी नहीं आस ॥१३॥
 स्वांस तो खिन में कई आवें जांए, गए अवसर पीछे कछू न बसाए ।
 तिन कारन सुन रे जीव सही, बड़ी मत मैं तोको कही ॥१४॥
 जो जोगवाई^१ है तेरे हाथ, सो या मुखथें कही न जात ।
 एते दिन तें ना करी पेहेचान, तैसी करी ज्यों करे अजान ॥१५॥
 अब ए वचन विचारो मन, साख दई सुकजी के वचन ।
 भी वचन कहूं सुन मेरे जिउ, जिन छोड़े चरन खिन पिउ ॥१६॥
 निज घर पिउ को लीजे प्रकास, ज्यों वृथा न जाय एक स्वांस ।
 ग्रह गुन इंद्रि भर तूं पांओ, ऐसा फेर न पाईए दाओ ॥१७॥
 भरम भान के कहे वचन, बड़ी मत ले ज्यों होए धंन धंन ।
 ए भरम की नींद उड़ाए के दे, पेहेचान पिउ की नीके कर ले ॥१८॥
 मुखथें वचन कहे तो कहा, जो छेद के अजूं ना निकस्या ।
 अगलों ने किव करी अनेक, तें भी कछुक करी विसेक ॥१९॥

पर सांचा तो जो होए गलतान, तो भले मुख निकसी ए बान ।
 ए बानी मेरी नाहीं यों, और किव करत हैं ज्यों ॥२०॥
 ए गुसा किया मेरे जीव के सिर, ना तो और किवकी भांत कहूं क्यों कर ।
 आत्म मेरी है अति सुजान, अछरातीत निध करी पेहेचान ॥२१॥
 अब सांचा तो जो करे रोसन, जोत पोहोंची जाए चौदे भवन ।
 ए समया तो ऐसा मिल्या आए, चौदे भवन में जोत न समाए ॥२२॥
 यों हम ना करे तो और कौन करे, धनी हमारे कारन दूजा देह धरे ।
 आत्म मेरी निज धाम की सत, सो क्यों ना करे उजाला अत ॥२३॥
 श्री सुंदरबाई के चरन प्रताप, प्रगट कियो मैं अपनों आप ।
 मोंसों गुनवंती बाईएँ किए गुन, साथें भी किए अति घन ॥२४॥
 जोत करूं धनी की दया, ए अंदर आए के कह्या ।
 उड़ाए दियो सबको अंधेर, काढ़्यो सबको उलटो फेर ॥२५॥
 इंद्रावती प्रगट भई पिउ पास, एक भई करे प्रकास ।
 अखंड धाम धनी उजास, जाग जागनी खेलें रास ॥२६॥

॥प्रकरण॥२१॥चौपाई॥५३३॥

आंखां खोल तूं आप अपनी, निरख धनी श्रीधाम ।
 ले खुसवास याद कर, बांध गोली प्रेम काम ॥१॥
 प्रेम प्याला भर भर पीऊं, त्रैलोकी छाक छकाऊं ।
 चौदे भवन में करूं उजाला, फोड़ ब्रह्मांड पिउ पास जाऊं ॥२॥
 वाचा मुख बोले तूं वानी, कीजो हांस विलास ।
 श्रवना तूं संभार आपनी, सुन धनी को प्रकास ॥३॥
 कहे विचार जीव के अंग, तुम धनी देखाया जेह ।
 जो कदी ब्रह्मांड प्रले होवे, तो भी ना छोड़ूं पिउ नेह ॥४॥

खोल आंखां तूं हो सावचेत, पेहेचान पिउ चित ल्याए ।
 ले गुन तूं हो सनमुख, देख परदा उड़ाए ॥५॥
 एते दिन वृथा गमाए, किया अधम का काम ।
 करम चंडालन हुई मैं ऐसी, ना पेहेचाने धनी श्रीधाम ॥६॥
 भट परो मेरे जीव अभागी, भट परो चतुराई ।
 भट परो मेरे गुन प्रकृती, जिन बूझी ना मूल सगाई ॥७॥
 आग पड़ो तिन तेज बल को, आग पड़ो रूप रंग ।
 धिक धिक पड़ो तिन ग्यान को, जिन पाया नही प्रसंग ॥८॥
 धिक धिक पड़ो मेरी पांचो इंद्रि, धिक धिक पड़ो मेरी देह ।
 श्री स्याम सुंदरवर छोड़ के, संसार सां कियो सनेह ॥९॥
 धिक धिक पड़ो मेरे सब अंगों, जो न आए धनी के काम ।
 बिना पेहेचाने डारे उलटे, ना पाए धनी श्री धाम ॥१०॥
 तुम तुमारे गुन ना छोड़े, मैं बोहोत करी दुष्टाई ।
 मैं तो करम किए अति नीचे, पर तुम राखी मूल सगाई ॥११॥

॥प्रकरण॥२२॥चौपाई॥५४४॥

वारने जाऊं वनराए वल्लभ की, जाकी सुख सीतल छाया ।
 देखो ए बन गुन भव औखदी, देखे दूर जाए माया ॥१॥
 जाऊं वारने आंगने बेलूं, जित ले बैठो संझा समे साथ ।
 बातें होत चलने धाम की, घर पैड़ा देखाया प्राणनाथ ॥२॥
 भी बल जाऊं आंगने, आगे पीछे सब साज ।
 जहां बैठो उठो पांउ धरो, धनी मेरे श्री राज ॥३॥
 बलिहारी जाऊं बोहोत बेर, देहरी मंदिर द्वार ।
 वारने जाऊं इन जिमी के, जहां बसत मेरे आधार ॥४॥

बलि जाऊं पाटी पलंग सिराने, चादर सिरख^१ तलाई ।
 पौढत पिउजी ओढत पिछौरी, ऊपर चंद्रवा चटकाई^२ ॥५॥

बल बल जाऊं मैं दुलीचा चाकला, बल जाऊं मंदिर के थंभ ।
 जिन थंभों कर^३ धनी अपने, जुगतें दिए बंध ॥६॥

बैठत हो जित महाबलिया, बल बल जाऊं ठौर तिन ।
 साथ सबेरा^४ आए के बैठत, करो धाम धनी बरनन ॥७॥

देखत मंदिर में कई विध, वस्त सकल पूरन ।
 टूक टूक कर वार डारों, मेरे जीव के और तन ॥८॥

भले तुम देह धरी मुझ कारन, कर रोसन टाल्यो भरम ।
 जीव मेरा बोहोत सखत था, मेहेर नजरों भया नरम ॥९॥

बल जाऊं मैं चरन कमल की, बल जाऊं मीठे मुख ।
 बलिहारी सोभा सुंदरता, जिन दरसन उपजत सुख ॥१०॥

भी बल जाऊं हस्त कमल की, बल जाऊं वस्तर ।
 लेऊं बलैयां भूखन की, बल जाऊं सीतल नजर ॥११॥

वार डारूं मैं नासिका पर, और वार डारूं श्रवन ।
 वार डारूं मैं नख सिख पर, जो सनकूल हैं अति घन ॥१२॥

सेवा करत बाई हीरबाई, उछव रसोई जित ।
 अंतरगत तुम नित आरोगो, मैं बल बल जाऊं तित ॥१३॥

वार डारूं मैं वानी पर, जो वचन केहेत रसाल ।
 साथ को चरने राख के, सागर आड़ी बांधत हो पाल ॥१४॥

करत हो कृपा कई विध की, मीठी अति मेहेरबानी ।
 सांचे लाड़ लड़ाए सुंदर, ल्याए वतन की वानी ॥१५॥

मैं सेवा करूं सर्वा अंगो, देऊं प्रदखिना^५ रात दिन ।
 पल न वालूं निरखूं नेत्रे, आतम लगाए लगन ॥१६॥

मुझसे अजान अबूझ^१ दुष्ट अप्रीछक^२, अधम नीच मत हीन ।
 सो इन चरनो आए होए दाना^३ स्याना^४, सुघड़ सुबुध प्रवीन ॥१७॥
 जीव जगाए देत निध निरमल, करत आतम रोसन ।
 सो जीव बुध ले करे उजाला, सबमें चौदे भवन ॥१८॥
 इन जुबां क्यों कहूं बड़ाई, तुमें सब्द ना पोहोंचे कोए ।
 जो कछू कहूं सो उरे रहे, ताथे दुख लागत है मोहे ॥१९॥
 दाझ बुझत है एक सब्द में, जब कहूं धनी श्रीधाम ।
 इन वचनें आतम सुख पायो, भागी हैडे की हाम ॥२०॥
 कहे इंद्रावती अति उछरंगे, फोड़ ब्रह्मांड करूं रोसन ।
 सीधी राह देखाऊं जाहेर, ज्यों साथ सुखे आवे वतन ॥२१॥

॥प्रकरण॥२३॥चौपाई॥५६५॥

अब अस्तुत ऊपर एक विनती कहूं, चरन तुमारे जीव में ग्रहूं ।
 इन चरनों मोहे सुध भई, पेहेली निध श्री सुंदरबाईएँ दई ॥१॥
 दोऊ सख्य में जोत जो एक, सो मैं देख्या कर विवेक ।
 ए चरन फलें कहे इंद्रावती, तारतम जोत करूं विनती ॥२॥
 मेरा बुत्ता कछू न था मेरे धनी, मोपे दोऊ सख्यों दया करी अति घनी ।
 सेवा में न थी हाजर, न जानूं दया करी क्यों कर ॥३॥
 करतब चितवनी और सेवा करे, माया गुन उलटे परहरे ।
 मनसा वाचा कर करमना, करे दौड़ प्यार अति घना ॥४॥
 पर जब लग दया तुमारी न होए, तब लग काम न आवे कोए ।
 ए परीछा^५ में करी निरधार, देखे सबके सब्द विचार ॥५॥
 जीव खरा होए जुदा मन करे, कपट रत्ती न हिरदे धरे ।
 यों करके तुमको सेवे, वचन विचार अंदर जीव लेवे ॥६॥

सनकूल करे तुमारा चित, संसे भान करे जीव के हित ।
 पिउ चित पर चलेगा जोए, साथ में घरों सोभा लेसी सोए ॥७॥

ए नींद उड़ाए के कहे वचन, श्री धाम धनी जीव जानी मन ।
 जब देख्या धनी नीके फिकर कर, तो अजू न गई नींद है अंदर ॥८॥

ए वचन कहे मैं नींदज मांहे, जब नीके देखूं धनी धाम के तांहे ।
 न तो क्यों कहूं धनी को एह वचन, पर कछुक तासीर^१ है भोम इन ॥९॥

जब घर की तरफ देखों तुमको, तब फेर यों होए मेरे मन को ।
 ए धाम धनी को कहा कहे वचन, तब जीव विचार दुख पावे मन ॥१०॥

क्या कहूं सब्द तुमें पोहोंचे नांहे, मेरी जुबां भई माया अंग मांहे ।
 तुम सब्दातीत भए मेरे पिउ, मेरी देह खड़ी माया ले जिउ ॥११॥

धनी लगते वचन कहूंगी आए धाम, तब भानूंगी मेरे जीव की हाम ।
 ए तो वानी कही मैं साथ कारन, साथ छोड़सी माया ए देख वचन ॥१२॥

साथ वेगे बुलाओ कहे इंद्रावती, ए कठन माया दुख होए लागती ।
 ए दुख देख्या मांहे दुस्तर, कोई न पेहेचाने आप न सूझे घर ॥१३॥

ए मैं लुगा कह्या माया सनमंध, मैं देखीतां न देखूं अंध ।
 ए ताए कहिए जो होए बेसुध, तुम खिन खिन खबर लई कई विध ॥१४॥

एह कहूं मैं साथ कारन, अधखिन साथ विसारो जिन ।
 जिन करो तुमारी पाओखिन, तो कई कल्पांत जाए मिने तिन ॥१५॥

मैं तो कहूं जो तुम न्यारे हो, पाओ पल साथ की जुदागी ना सहो ।
 मैं तो कहूं जो मेरी ओछी मत, तुम हम को कई सुख चाहत ॥१६॥

हम कारन तुम आए देह धर, तुम कई विध दया करी हम पर ।
 तुम धनी आए कारन हम, देखाई बाट ल्याए तारतम ॥१७॥

साथें माया मांगी सो भई अति जोर, तुम सब्द कहे कई कर कर सोर ।
 पर तिन समे नींद क्योंए न जाए, तब धनी सरूप भए अंतराए ॥१८॥

तो भी ना भई हमको खबर, तब फेर आए दूजा देह धर ।
 ततखिन मिले हमको आए, सागर वतनी नूर बरसाए ॥१९॥
 मैं साथ को कह्या सो कहिए क्यों कर, यों तो कहिए जो दूर किए होवें घर ।
 एता तो मैं जानूं जीव मांहें, जो ए अरज धनीसों करिए नांहें ॥२०॥
 पर साथ वास्ते दाह उपजी मन, यों जानें न कह्या हम कारन ।
 यों न कहूं तो समझे क्यों कोए, कई विध दया धनी की होए ॥२१॥
 ए साथ की चिन्हार को कहे वचन, ना तो धनी दया जीव जाने मन ।
 साथ चरने हैं सो तो वचिखिन^१ वीर, ए भी वचन विचारे द्रढ धीर ॥२२॥
 पर करूं साथ पीछले की बड़ी जतन, देख वानी आवसी इन बाट वतन ।
 देखियो साथ दया धनी, ए कृपा की बातें हैं अति घनी ॥२३॥
 ए दया धनी मैं जानूं सही, पर इन जुबां ना जाए कही ।
 जो जीव वचन विचारे प्रकास, तो अंग उपजे धाम धनी उलास ॥२४॥
 कहे इंद्रावती सुंदरबाई चरनें, सेवा पिउ की प्यार अति घने ।
 और कछू ना इन सेवा समान, जो दिल सनकूल^२ करे पेहेचान ॥२५॥

॥प्रकरण॥२४॥चौपाई॥५९०॥

जाटी प्रबोध-कातनी को द्रष्टांत

भट परो तिन नींद को, जिन सोहागनियां दैयां भुलाए ।
 तो भी नींद निगोड़ी^३ ना उड़ी, जो धनी थके बुलाए बुलाए ॥१॥
 ए नींद अमल कासों कहिए, क्योंए ना छोड़े आतम ।
 तो भी बेसुधी ना टली, जो जल बल हुई भसम ॥२॥
 वतन से आइयां सैयां, सबे बांध के होइ ।
 सो याद न रह्या कछुए, इन नींदे दैयां सब तोइ ॥३॥
 तुमको नींद उड़ावने, मैं देऊं एक द्रष्टांत ।
 तुम विध अगली देखके, जो कदी समझो इन भांत ॥४॥

आइयां आस कातन की, करके उमेद दूनी ।
 किनहूं कात्या बारीक, किन रूईथें न करी पूनी ॥५॥
 आइयां कातन वालियां, मिनो मिने रब्द कर ।
 किन किन मिहीं कातिया, सांचा सनेह धर ॥६॥
 कोई बड़ाई ले बैठियां, सो गैयां आपको भूल ।
 उठियां अंग पछताए के, होए सूरत बेसूल ॥७॥
 किनहूं कात्या सोहाग का, सूत भर भर सेर ।
 कोई बैठियां पांउ पसार के, ले बैठी हिरदे अंधेर ॥८॥
 कोई तलबें तांत चढ़ावहीं, भले पाई ए बेर^१ ।
 कोई नीचा सिर कर रही, कोई चढ़ियां सिर मेर ॥९॥
 एक सूत देखे और के, उमर सब गई ।
 फेरा देवें रूपवंतियां, कबूं पूनी हाथ न लई ॥१०॥
 कोई सोए रहियां आतन में, उठियां तब उदमाद^२ ।
 दुख पाया तब दिल में, जब सूत आया याद ॥११॥
 जिन दिल दे मिहीं कातियां, ढील न करी एक पल ।
 सो ए उठी सैयन में, हंसते मुख उजल ॥१२॥
 किनहूं ऊंचा^३ कातिया, दे फारी फुकार ।
 सो ए घरों सैयनमें, हुई धंन धंन कातनहार ॥१३॥
 जब सूत सैयां देखिया, तब जाहेर हुईयां सब कोए ।
 पर जिन कछूए न कातिया, छिपाए रही मुख सोए ॥१४॥
 सूतवाली सोहागनी, तिन सोभा पाई घनी ।
 सैयां भी कहे धंन धंन, और दियो मान धनी ॥१५॥
 एक फेरे चरखा उतावला^४, दिल बांध तांत के साथ ।
 रातों भी करे उजागरा, सूत होवे तिनके हाथ ॥१६॥

करे जो बातां बीच में, सो तांत न निकसे तिन ।
 पूनी रही तिन हाथ में, बैठी फिरावे मन ॥१७॥
 फजर^१ हुई बीच सैयनमें, मिल बातां करसी सब ।
 जिन कछुए न कातिया, तिन कहा हाल होसी तब ॥१८॥
 ना कछू कात्या रात में, ना कछू कात्या दिन ।
 सो वतन बीच सैयनमें, मुख नीचा होसी तिन ॥१९॥
 जो मोटा या बारीक, तिन भी पाया मोल ।
 पर जिन कछुए न कातिया, तिनका कछुए न सूल^२ ॥२०॥
 हुकम धनी के बिध बिध, अनेक किए पुकार ।
 जिन सुनी न तिनकी वतन में, बातें हुई बिकार^३ ॥२१॥
 सुनते पुकार धनीय की, काल गया दिन ले ।
 पीछे मुख नीचा होएसी, क्यों न कात्या चित दे ॥२२॥
 जिनो आज न कातिया, करसी याद ए दिन ।
 जब बातां करसी सोहागनी, मिलकर बीच वतन ॥२३॥
 जो कछुए ना समझी, हाथ न लई पूनी ।
 आई थी उमेद में, पर उठी अलूनी^४ ॥२४॥
 एक लेसी सोहाग सुलतान का, सोई सोहागिन ।
 सो बातां सिर उठाए के, करसी बीच सैयन ॥२५॥
 ॥प्रकरण॥२५॥चौपाई॥६१५॥

भट परो नींद मोह की, जो टाली न टले क्यों ।
 आंखां खोल सीधा कहे, फेर वली त्यों की त्यों ॥१॥
 एक तकला भाने ताओ में, फोकट फेरा खाए ।
 झगड़ा लगावे आप में, हिरदे रस न जुबांए ॥२॥

एक तकले समारे और के, लर लर कतावे ।
 कहे अपनायत जान के, समया बतावे ॥३॥
 एक झगड़ा लगावे और को, सामी तकले डाले वल ।
 ए बातें होसी वतन में, जब उतर जासी अमल ॥४॥
 एक औरों को उलटावहीं, कहा बिध होसी तिन ।
 कातना उन पीछा पड़या, सामी धके दिए औरन ॥५॥
 जो झगड़ा लगावें आपमें, ताए होसी बड़ो पछताप ।
 ओ जानें कोई ना देखहीं, पर धनी बैठे देखें आप ॥६॥
 बात उठावें जो मन से, सो होसी सबे वतन ।
 एक जरा छिपी ना रहे, यों कोई भूलो जिन ॥७॥
 एक काते मांहे चुपकतियां, सो ताने सहे औरन ।
 तांत चढ़ावे तलबें, नजर ना चूके खिन ॥८॥
 ताए होसी मान धनीयको, साथ मिने रंग लाल ।
 उठसी हंसती हरखमें, पाँउ दे पड़ताल ॥९॥
 हाथ घससी हाथसो, जो लई इंद्रियों घेर ।
 सो पछतासी आंखां खुले, पर ए समया न आवे फेर ॥१०॥
 जो इत आंखा खोलसी, ले इस्क या विचार ।
 सो करसी बातें बिध बिध की, सब सैयों में सिरदार ॥११॥
 जिन इत आंखां ना खोलियां, करके बल बेसुमार ।
 नींद उड़ाए ना सकी, सो ले उठसी खुमार^१ ॥१२॥
 जिन इत उड़ाई नींदड़ी, सो उठत अंग रोसन ।
 केहेसी कातनहार को, विध विध के वचन ॥१३॥
 जो उठसी आंखां चोलती^२, सो केहेसी कहा वचन ।
 ना तो आई थी उमेद देखने, पर नींद ना गई तिन ॥१४॥

सुनो सैयां कहे इंद्रावती, तुम आईयां उमेद कर ।
 अब समझो क्यों न पुकारते, क्यों रहियां नींद पकर ॥१५॥
 तुम वतन में धनीयसों, क्यों करसी बात अंधेर ।
 रहेसी उमेदां मन में, ए न आवे समया और बेर ॥१६॥
 कातने को उतावलियां, आईयां मिलकर तुम ।
 अब झूलो^१ रहियां नींद में, कातना भूल खसम ॥१७॥
 धनी आए जगावहीं, कहे कहे अनेक सनंध ।
 नींदें सब भुलाइयां, सेवा या सनमंध ॥१८॥
 ए जिमी लगसी आग ज्यों, जब धनी चले घर ।
 वचन पिउके लेयके, इत क्यों न जागो मांहे अवसर ॥१९॥
 भट परो इन नींद को, ए ठौर बुरी विखम^२ ।
 यों जगावते न जागियां, तो कौन विध होसी तिन ॥२०॥
 तुम देखो भांत धनीय की, कई विध करी चेतन ।
 सबों सुनाए कहे इंद्रावती, जागो चलो वतन ॥२१॥
 साहेब मांहे बैठ के, बतावत हैं ठौर ।
 सो घर तुमको देखाइया, जहां नहीं कोई और ॥२२॥
 ॥प्रकरण॥२६॥चौपाई॥६३७॥

अब तूं जिन भूल आतम मेरी, पेहेचान के खसम ।
 वतन देखाया अपना, जिन छोड़े पिउ कदम ॥१॥
 वचन कहे बड़े मुखथें, पर तूं तो समया न भूल ।
 तूं कात बारीक धनीय का, ए तातें पावेगी मूल ॥२॥
 अजूं तें पाओ न कातिया, इत चाहिएगा सेर भर ।
 जब उठेगी आतन से, तब बहुरि^३ चाहेगी अवसर ॥३॥

ए जो गमाए दिनड़े, गफलत में जो गल ।
 अब तोको उठन के, आए सो दिनड़े चल ॥४॥
 जो तूं उठी काते बिना, आए इन अवसर ।
 कहा करेगी इन नींद को, जो ले चलसी घर ॥५॥
 अजूं न जागे जोर कर, जो ऐसी तुझ पर भई ।
 धनी आए बेर दूसरी, तेरी सुध ऐसी क्यों गई ॥६॥
 कर सीधा समार तकला, कस कर बांध अदवान ।
 दे गांठ माल मरोर के, पूनी लगाए के तान ॥७॥
 फेर तूं चरखा उतावला, करके अंग कूवत ।
 तूं लेसी सोहाग धनीय को, तेरे बारीक इन सूत ॥८॥
 ए रहेसी अधबीच कातना, दिन आए समें करे भंग ।
 तुझ देखत सैयां चलियां, जो हुती तेरे संग ॥९॥
 अब हिंमत करके कात तूं, दिल बांध सूत के साथ ।
 ए मिहीं सूत सोहाग का, सो होसी तेरे हाथ ॥१०॥
 अब नींद करे जिन तूं, ए नींद देवे दुहाग^१ ।
 उठ तूं जाग जोर कर, दौड़ ले पिउ सोहाग^२ ॥११॥
 ए सूत है अति सोहना, मोल मोहोंगा^३ होसी एह ।
 तूं पेहेचान पिउ अपना, वार फेर जीव देह ॥१२॥
 अब ले स्याबासी सैयन में, कर तूं ऐसी भांत ।
 एह मिहीं सूत सोहाग का, सो रात दिन ले कात ॥१३॥

॥प्रकरण॥२७॥चौपाई॥६५०॥

भोरी तूं न भूल इंद्रावती, ऐसा पिउ का समया पाए ।
 तूं ले धनी अपना, औरों जिन देखाए ॥१॥

तोहे यों धनी कब मिलसी, पेहेचान के ले सोहाग ।
 ऐसी एकांत कब पावेगी, अब है तेरा लाग^१ ॥२॥
 बोहोत बखत भला पाइया, धनिऐं दियो तुझे आप ।
 मेहेर करी मेहेबूबें, करके संग मिलाप ॥३॥
 आंखां खोल के ढांपिए, जिन चूके एती बेर ।
 रात दिन तेरे राज का, सूत कात सवा सेर ॥४॥
 नेह कर तूं नैनों से, और चसमें^२ से कताए ।
 मिहीं सूत ले उजला, आओ आंखें कर पाए ॥५॥
 भले कात्या इन सूत को, भला पाया ए बखत ।
 भले सो भागी नींदड़ी, भले मिले धनी इत ॥६॥
 धनी बिना ए नींदड़ी, टाल ना सके कोई और ।
 वार डारों जीव देह सों, मोहे धनी मिले इन ठौर ॥७॥
 सई मेरी मुझ कारने, पिउजी दिए इत पाए ।
 मैं वारूं तिन पर आतमा, धनी आए जिन राहे ॥८॥
 सई तूं मेरा धनी ले बैठी, कोई और न देखनहार ।
 देख तूं पिउ लेऊं अपना, तो तूं कहियो सोहागिन नार ॥९॥
 इंद्रावती कहे तूं सई^३ मेरी, धनी मिले मुझे इत ।
 पिउ ने सब पूरन करी, जो मैं करी उमेदा तित ॥१०॥
 सई तूं मेरी बाई रतन, मोहे मिले छबीले लाल ।
 करी मुझे सोहागनी, अब मैं भई निहाल ॥११॥
 मैं एक विध माँगी पिउ पे, पिउ ने कई विध करी रोसन ।
 बातें इन रोसन की, करसी जाए वतन ॥१२॥

॥प्रकरण॥२८॥चौपाई॥६६२॥

लखमीजी को दृष्टांत

मैं जानूं निध एकली लेऊं, धाम धनी मेरे जीव में ग्रहूं ।
 ए सुख और काहूं ना देऊं, फेर फेर तुमको काहे को कहूं ॥१॥
 ए वचन यों कहे न जाए, जीव दुख पावे ना कहे जुबांए ।
 एह फिकर मैं बोहोतक करूं, पर देह ना पकड़े जो हिरदे धरूं ॥२॥
 धनी कहावे तो यों कहूं, ना तो ए सुख औरों क्यों देऊं ।
 ए देते मेरा जीव निकसे, ए बानी मेरे जीव में बसे ॥३॥
 ए निध लई मैं कसनी कर, श्री धाम धनी चरणों चित धर ।
 मैं बोहोतक करूं अंतर, पर सागर पूर प्रगट करे घर ॥४॥
 ए बानी धनी अंतरगत कही, केहेने की सोभा कालबुत को भई ।
 ना तो एह वचन क्यों कहे जाएं, अंदर कलेजे ज्यों लगे घाए ॥५॥
 जिन जानो वचन अचेत में कहे, ए केहेते अनेक दुख भए ।
 जब मैं विचारूं चित में आन, ए कैसी मुख निकसी बान ॥६॥
 मेरी बुधें लुगा^१ न निकसे मुख, धनी जाहेर करें अखंड घर सुख ।
 अब साथ कछुक करो तुम बल, तो पूरन सोभा ल्यो नेहेचल ॥७॥
 ए बोहोत भांत है भारी वचन, जो कदी देखो आप होए चेतन ।
 इन वचन पर एक कहूं विचार, सुनो साथ मेरे धाम के आधार ॥८॥
 धड़थें सिर कोई न्यारा करे, तो आधा वचन ना मुखथें परे ।
 जो कोई सारे सकल संधान, तो कह्या न जाए पाओ लुगा निरवान ॥९॥
 साथ कारन जीव सगाई जान, सेवियो धाम धनी पेहेचान ।
 यों केहेके पकड़ न देवे कोए, यों देते न लेवे सो अभागी होए ॥१०॥
 तुम साथ मेरे सिरदार, एह दृष्टांत लीजो विचार ।
 रोसन वचन करूं प्रकास, सुकजी की साख लीजो विस्वास ॥११॥

ए देख के नींद टालो भरम, इन वचनों जीव करो नरम ।
 वचन जीवसो करो विचार, तब सुख अखंड होए आधार ॥१२॥
 पिउ पेहेचान टालो अंतर, परआतम अपनी देखो घर ।
 इन घर की कहा^१ कहूं बात, वचन विचार देखो साख्यात ॥१३॥
 अब जाहेर लीजो दृष्टांत, जीव जगाए करो एकांत ।
 चौद भवन का कहिए धनी, लीला करे बैकुंठ विखे घनी ॥१४॥
 लखमीजी सेवे दिन रात, सो ए कहूं तुमको विख्यात ।
 जो चाहे आप हेत घर, सो सेवे श्री परमेस्वर ॥१५॥
 ब्रह्मदिक नारद कई देव, कई सुर नर करे एह सेव ।
 ब्रह्मांड विखे केते लेऊं नाम, सब कोई सेवे श्री भगवान ॥१६॥
 ए लीला सेवे कर सार, सेवतां न पावें पार ।
 पेहेले सेवा करी है घनें, सो देखियो सुकव्यास वचनें ॥१७॥
 ए तो है ऐसा समरथ, सेवक के सब सारे अरथ^२ ।
 अब तुम याको देखो ग्यान, बड़ी मत का धनी भगवान ॥१८॥
 एक समें बैठे धर ध्यान, बिसरी सुध सरीर की सान^३ ।
 ए हमेसा करे चितवन, अंदर काहूं न लखावे किन ॥१९॥
 ध्यान जोर एक समें भयो, लाग्यो सनेह ढांप्यो न रह्यो ।
 लखमीजी आए तिन समें, मन अचरज भए विस्मे ॥२०॥
 आए लखमीजी ठाढ़े रहे, भगवानजी तब जाग्रत भए ।
 करी विनती लखमीजी ताहें, तुम बिन हम और कोई सुन्या नाहें ॥२१॥
 किनका तुम धरत हो ध्यान, सो मोहे कहो श्री भगवान ।
 मेरे मनमें भयो संदेह, कहे समझाओ मोको एह ॥२२॥
 कौन सख्य बसे किन ठाम, कैसी सोभा कहो कहा नाम ।
 ए लीला सुनो श्रवन, फेर फेर के लागों चरन ॥२३॥

सुनो लखमीजी एह वचन, एह बात प्रकासो जिन ।
लखमीजी कहो त्यों करूं, मेरा अंग तुमथें न परूं^१ ॥२४॥
सुनो लखमीजी कहूं तुमको, पेहेले सिवे पूछा हमको ।
इन लीला की खबर मुझे नाहें, सो क्यों कहूं मैं इन जुबांए ॥२५॥
एह वचन जिन करो उचार, न तो दुख होसी अपार ।
और इतका जो करो प्रस्न, सो चौदे लोक की करूं रोसन ॥२६॥
जिन आसंका आनो एह, एह जिन पूछो संदेह ।
लखमीजी तुम करो करार, मुखथें वचन ना आवे बाहार ॥२७॥
तब लखमीजी बड़ो पायो दुख, कह ना सके कलपे अति मुख ।
मोसों तो राख्यो अंतर, अब रहूंगी मैं क्यों कर ॥२८॥
नैनों आंसू बहुविध झरे, फेर फेर रमा विनती करे ।
धनी एह अंतर सह्यो न जाए, जीव मारो मांहे कलपाए ॥२९॥
अब क्यों कर राखूं जीव हटाए, कलेजा मेरा कटाए ।
कंपमान होए कलकले, उठी आह अंतस्करन जले ॥३०॥
अब जो धनी करो मेरी सार^२, तो ए लीला केहेनी निरधार ।
बोहोत बेर मने किया सही, अनेक विध सिखापन दर्ई ॥३१॥
मेरा जीव क्योंए न रहे, लखमीजी फेर फेर यों कहे ।
तब बोले श्री भगवान, लखमीजी तूं नेहेचे जान ॥३२॥
कोटान कोट करो प्रकार, तो एता तुम जानो निरधार ।
मेरी जुबां न वले एह वचन, एह दृढ़ करो जीवके मन ॥३३॥
लखमीजी कहे सुनो अब राज, मेरे आतम अंग उपजत दाझ ।
नहीं दोष तुमारा धनी, अप्राप्त^३ मेरी है घनी ॥३४॥
अब सरीर मेरा क्यों रहे, ए अगनी जीव न सहे ।
अब अग्या मांगूं मेरे धनी, करूं तपस्या देह कसनी ॥३५॥

भगवान जी बोले तिन ताओ, लखमीजी बेर जिन ल्याओ ।
 तब कलप्या जीव दुख अनंत कर, उपज्यो वैराग लियो हिरदे धर ॥३६॥
 लखमीजी को आसा थी घनी, जानों विछोहा ना देसी धनी ।
 अब चरनों लाग लखमीजी चले, प्यादे पांउ रोवे कलकले ॥३७॥
 इन समें विरह कियो अति जोर, बड़ो दुख पाए कियो अति सोर ।
 एक ठौर बैठे जाए दमे देह, भगवानजी सों पूरन सनेह ॥३८॥
 सीत धूप बरखा ना गिने, करे तपस्या जोर अति घने ।
 सनेह धर बैठे एकांत, एते सात भए कल्पांत ॥३९॥
 तब ब्रह्माजी खीरसागर, आए विष्णु पे बैकुंठ घर ।
 ए प्रभुजी ए क्या उतपात, लखमीजी तप करे कल्पांत सात ॥४०॥
 भगवानजी बोले तब तांहे, दोष हमारा कछुए नांहे ।
 तो भी वचन तुमको कहे जाए, लखमीजी बोहोत दुख पाए ॥४१॥
 एता रोष तुम ना धरो, लखमीजी पर दया करो ।
 तुम स्वामी बड़े दयाल, लखमीजी दुख पावे बाल ॥४२॥
 स्वामीजी ए ढील करो जिन, लखमीजी बुलाओ ततखिन ।
 चरन ग्रहे तब खीरसागरें, और फेर फेर ब्रह्मा विनती करे ॥४३॥
 चलो प्रभुजी जाइए तित, बुलाए लखमीजी आइए इत ।
 तब दया कर आए भगवान, लखमीजी बैठे जिन ठाम ॥४४॥
 लखमीजी परनाम कर आए, भगवानजी तब सनमुख बुलाय ।
 लखमीजी चलो जाइए घरे, तब फेर रमा बानी उचरे ॥४५॥
 धनी मेरे कहो वाही वचन, जीव बोहोत दुख पावे मन ।
 जो तप करो कल्पांत एकईस, तो भी जुबां ना वले कहे जगदीस ॥४६॥
 देखलाऊं मैं चेहेन^१ कर, तब लीजो तुम हिरदे धर ।
 तब ब्रह्मा और खीरसागर दोए, लखमीजी की विनती होए ॥४७॥

लखमीजी उठो तत्काल, दया करी स्वामी दयाल ।
अब जिन तुम हठ करो, आनंद अंतस्करण में धरो ॥४८॥
तब लखमीजी लागे चरनें, यों बुलाए ल्याए आनंद अति घनें ।
तब ब्रह्मा खीरसागर सुख पाए फिरे, दोऊ आए आप अपने घरे ॥४९॥
अब ए विचार तुम देखो साथ, ना वली जुबां^१ बैकुंठनाथ ।
ग्रही वस्त भारी कर जान, तो भी वचन ना कहे निरवान ॥५०॥
ना तो बैकुंठनाथ को कैसी खबर, बिना तारतम क्या जाने मूल घर^२ ।
और भी खबर कछुए ना कही, तो भी निध भारी कर ग्रही ॥५१॥
बिना भारी कौन भार उठावे, मुखथें वचन कह्यो न जावे ।
जब भया कृष्ण अवतार, रूकमनी हरन कियो मुरार ॥५२॥
माधवपुर व्याही रूकमनी, धवल मंगल गावे सोहागनी ।
गाते गाते लिया बृज नाम, तब पीछे भोम पड़े भगवान ॥५३॥
तब नैनों आंसू बोहोत जल आए, काहूपे ना रहे पकराए ।
सुख आनंद गयो कहूं चल, अंग अंतस्करण गए सब गल ॥५४॥
तब सब किने पायो अचरज^३, यों लखमीजी को देखाया बृज ।
सोले कला दोऊ सरूप पूरन, ए आए हैं इन कारण ॥५५॥
लोक जाने आए असुरों कारन, विष्णु कृष्ण देह धर पूरन ।
ए हुकमें असुर कई देवे उड़ाए, ऐसा बल हैं बैकुंठराए ॥५६॥
क्या समझें लोक अंदर की बात, देखलावने लखमीजी को आए साख्यात ।
उठ बैठे श्री कृष्णजी पूरन किया काम, यों लखमीजी की भानी हाम ॥५७॥
ए चित में विचारो रही, ए इसारत सुकें कही ।
ए लीला सुकें नीके कर गई, जो लखमीजी को भगवानें देखाई ॥५८॥
ए बृज लीला जो अपनी, जाकी अस्तुति करत हैं धनी ।
पेहेले जो लीला तुम बृज में करी, अछर^४ सदासिव चित में धरी ॥५९॥

रास लीला जो तुम बनमें किध, सो अछर सरूपें ग्रही जाग्रत बुध ।
 ता लीला को ए प्रतिबिंब, जो विष्णुए देखाई रमा को सनंध ॥६०॥
 तो वचन तुमको कहे जाए, जो तुम धाम की लीला मांहें ।
 बृजवालो पिउ सो एह, वचन अपन को केहेत हैं जेह ॥६१॥
 रास मिने खेलाए जिने, प्रगट लीला करी हैं तिने ।
 धनी धाम के केहेलाए, ए जो साथको बुलावन आए ॥६२॥
 तुम कारन में कह्या दृष्टांत, जीव सो वचन विचारो एकांत ।
 बैकुंठ ठौर तित का ग्यान, केहेने वाला श्री भगवान ॥६३॥
 लखमीजी तहां श्रोता^१ भई, कई विध कसनी कर कर रही ।
 तो भी न पाया एक वचन, तुम धाम धनी ले बैठे धन^२ ॥६४॥
 अजहूं ना तुम टालो भरम^३, क्यों ना करत हो जीव नरम ।
 ए नौतनपुरी जो कही नगरी, श्री देवचंदजीएँ लीला करी ॥६५॥
 ए प्रगट वचन किए अपार, तो भी ना हुई तुमें सुध सार ।
 छोड़ो अमल माया जोर कर, जीव जगाओ वचन चित धर ॥६६॥
 ए माया देखो न्यारे होए, भई तारतम की रोसनाई दोए ।
 जो बानी श्री धनिएँ दई, सो आतम के अंदर तुम क्यों ना लई ॥६७॥
 माया गुन सब करो हाथ, पेहेचानो प्राण को नाथ ।
 अब एता आतमसों करो विचार, कौन वचन कहे आधार ॥६८॥
 जोलों जीव विचार विकार न काटे, ज्यों छींट ना लगे घड़े चिकटे^४ ।
 इंद्रावती कहे सुनो साथ, जिन छोड़ो अपनो प्राणनाथ ॥६९॥
 फेर फेर ना आवे ए अवसर, जिन हाम ले जागो घर ।
 थोड़े में कह्या अति घना, जान्या धन क्यों खोइए अपना ॥७०॥
 हम आगे ना समझे भए ढीठ^५, तो दई श्री देवचंदजीएँ पीठ ।
 ना तो क्यों छोड़े साथ को एह, जो कछू किया होए सनेह ॥७१॥

अब फेर आए दूजा देह धर, दया आपन ऊपर अति कर ।
 अब ए चेतन कर दिया अवसर, ज्यों हंसते बैठ जागिए घर ॥७२॥
 सब मनोरथ हुए पूरन, जो ए बानी विचारो अंतस्करन ।
 ए तो इंद्रावती कहे फेर फेर, जो धाम धनी कृपा करी तुम पर ॥७३॥
 ॥प्रकरण॥२९॥चौपाई॥७३५॥

प्रगटबानी प्रकास की - राग सामेरी

सोई ने सोई सूते क्या करो जी, या अगिन जेहेर जिमी मांहीं जी ।
 जाग देखो आप याद करो, ए नींद निगल गई जीव के ताई जी ॥१॥
 ए नींद तिनको ले गई रे, जो नाहीं साथी आपन जी ।
 इन ठगनी जिमिऐं बोहोतक ठगे रे, तुम जिन सोओ इत खिन जी ॥२॥
 नाहीं रे नींद कोई घेन धारन^१, नींद होए तो लीजे उठाए जी ।
 उठाए जीव को खड़ा कीजे, फेर पड़े सोई उलटाए जी ॥३॥
 सोई घेनने सोई धारन रे, सोई घूटन^२ अधकी^३ आवे जी ।
 याही जिमी और याही नींद से, धनी बिना कौन जगावे जी ॥४॥
 इन जेहेर जिमी से कोई न उबरया, तुम सूते तिन ठाम जी ।
 इन जेहेर जिमी अगिन उजाड़ रे, नहीं वसती इन गाम जी ॥५॥
 ए विख की जिमी और विख के बिछौने, विखै की आकार जी ।
 अष्ट धात मिने सब विख के, विखै का विस्तार जी ॥६॥
 गुन पख इंद्री सब विख के, विखै को सब आहार जी ।
 आतम निरमल एक वतन की, सो तो कही निराकार जी ॥७॥
 विख की तलाई ने विख के ओढ़ना, विख पलंग दिया बिछाए जी ।
 विख का सिराने विख का ओछाड़, विख पंखा विख वाए जी ॥८॥
 जागते विख और सुपने विख रे, नींद में विख निदान जी ।
 बाहेर का विख क्यों कर कहूं रे, वहे आंधी वाए अग्यान जी ॥९॥

वस्तर विख के भूखन विख के, सकल अंग विख साज जी ।
 ए विख नख सिख जीव को भेद्यों, सो क्यों छूटे बिना श्री राज जी ॥१०॥
 जोर कर तुम जागो जीव जी, नहीं सूते की एह जिमी जी ।
 ज्यों ज्यों सोइए त्यों त्यों बाढ़े विख विस्तार, पीछे दुख पावे जीव आदमी जी ॥११॥
 ए जिमी तुम क्यों न छोड़ो, अजूं नाहीं नींद बाढ़ी जी ।
 इन जिमी नींद दुखड़े घनें रे, पीछे क्योंए न जाए काढ़ी जी ॥१२॥
 बोहोत देखे दुख अनेक होएसी, तार्थें उठो तत्काल जी ।
 जल के जीव को घर जल में, ज्यों रहे मकड़ी मांहें जाल जी ॥१३॥
 सब कोई जाली गूंथे अपनी, फेर अपनी गूंथी में उरझाए जी ।
 उरझे पीछे कई दुख देखे, दुखै में जीव जाए जी ॥१४॥
 बोहोत दुख देखे जीव जाते, तो भी गूंथे जाली फेर फेर जी ।
 दोष नहीं इन मकड़ी का रे, इनका घर हुआ जाली अंधेर जी ॥१५॥
 अपने घर इत नाहीं साथजी, चौदे भवन में कित जी ।
 ता कारन पिउजी करें रे पुकार, तुम क्यों सूते इत जी ॥१६॥
 ओ दुख के घर सो भी ना छोड़े, तुम याद ना करो सुख के घर जी ।
 सास्त्र सबों पे साख देवाई, तुम अजहूं ना देखो चित धर जी ॥१७॥
 बेहद सुख पार बेहद घर, बेहद पार श्री राज जी ।
 अछरातीत सुख अखंड देवे को, मैं जगाऊं तुमारे काज जी ॥१८॥
 पिउ पुकार पुकार थके, तुम अजहूं जल बिन गोते खात जी ।
 दिन उगते संझा होत है, पीछे आड़ी पड़ेगी रात जी ॥१९॥
 रात पड़ी तब कोई न जागे, पीछे कोई ना करे पुकार जी ।
 निसाएँ नींद जोर बाढ़ेगी, पीछे बढ़ेगा विख विस्तार जी ॥२०॥
 संझा लगे धनी रहेसी साथ कारन, तुम अजहूं ना नींद निवारो जी ।
 पेहेचान पिउ सुख लीजिए, तुम अपना आप वार डारो जी ॥२१॥

पुकार करते रात पड़ी, पिउ रात ना रहेसी निरधार जी ।
 जो दुस्मन तुमको भुलावत हैं, सो तुम क्यों न करत विचार जी ॥२२॥
 ए विखम भोम छोड़ते जो आड़ी करे, सो जानियों तेहेकीक दुस्मन जी ।
 जो लेने न देवे सुख अखंड, सो क्यों न देखो सुन वचन जी ॥२३॥
 ए दुस्मन तेरे विख भरे, जिन लियो संसार घेर जी ।
 ओ भुलावत तुमको जुदी भांतें, तुम जिन भूलो इन बेर जी ॥२४॥
 भी तुमको दिखाऊं दुस्मन, जिनहूं न छोड़्या कोए जी ।
 सो तुमको दिखाऊं जाहेर, तुमको अंदर झूठ लगावे सोए जी ॥२५॥
 गुन अंग इंद्री देखो रे चलते, जो उलटे लगे संसार जी ।
 एही दुस्मन विसेखे अपने, सो करत हैं सिर पर मार जी ॥२६॥
 तुम करो लड़ाई इनसों, मार टूक करो दुस्मन जी ।
 फेर वाको उलटाए चेतन करो, ज्यों होवें तुमारे सजन जी ॥२७॥
 सनमंधी साथ को कहे वचन, जीव को एता कौन कहे जी ।
 ए वानी सुन ढील करे क्यों वासना, सो ए विखम भोम क्यों रहे जी ॥२८॥
 छल की भोम को तुम समझत नहीं, ना सुनत मेरी बात जी ।
 जानत हो दिन दो पोहोर रहेसी, पाओ पल में हो जासी रात जी ॥२९॥
 अबही रात आई देखोगे, उठसी अनेक अंधेर जी ।
 जीव अंधेर जब देख उरझसी, तब आवसी विख के फेर जी ॥३०॥
 विख के फेर अनेक उपजसी, करम केरा जे दुख जी ।
 भी फिरसी फेर अनेक विधके, काहूं जीव को न होवे सुख जी ॥३१॥
 सुनियो जो तुम हो ब्रह्मसृष्ट के, जिन आओ मांहें रात जी ।
 इन रात के दुख घने दोहेले, पीछे उड़सी अंधेर प्रभात जी ॥३२॥
 दूर होसी इन रात के प्रभात, रात छेह क्योंए न आवे जी ।
 दुख की रात घनूं लागसी दोहेली, पीछे फजर मुख न देखावे जी ॥३३॥

महाप्रले होसी जब लग, तबलों रहेसी अंधेर जी ।
 ता कारन पिउजी करे रे पुकार, जिन भूलो इन बेर जी ॥३४॥
 तारतम के उजाले कर, रोसन कियो इन सूल जी ।
 कई कोट ब्रह्मांड देखाई माया, पाया अंकूर पेड़ मूल जी ॥३५॥
 पिउ पधारे बुलावन तुमको, तो होत है एती पुकार जी ।
 यों करते जो नहीं मानो, तो दुख पाए चलसी निरधार जी ॥३६॥
 विखम बड़ा जल मांहे अंधेर, कई लगसी लेहेरें निघात जी ।
 विसेखें जीव बेसुध होसी, नहीं सुनोगे निध साख्यात जी ॥३७॥
 मांहे मछ गलागल, लेहेरें आड़े टेढ़े बेहेवट जी ।
 दसो दिसा कोई ना सूझे, फिरवलसी अंधकार पट जी ॥३८॥
 तुम हो अंग मेरे के, जिन देखो माया को मरम जी ।
 धाम धनी आए तुम कारन, तुमें अजहूं न आवे सरम जी ॥३९॥
 ए नींद तुम को क्यों कर उड़सी, जोलों न उठो बल कर जी ।
 सेवा करो समें पिउ पेहेचान, याद करो आप घर जी ॥४०॥
 ए अमल तुमको क्यों रे उतरसी, जो जेहेर चढ़्या अति भारी जी ।
 पिउजी के बान तो तोड़े संधान^१, पर तुमको केहे केहे हारी जी ॥४१॥
 जो जानो घर पाइए अपना, तो एक राखियो रस वैराग जी ।
 सकल अंगे सुध सेवा कीजो, इन विध बैठो घर जाग जी ॥४२॥
 जो जानो इत जाग चलें, तो लीजो अर्थ प्रकास जी ।
 जीव को कहियो ए कह्या सब तोको, सिर लिए होसी उजास जी ॥४३॥
 इन उजाले जेहेर उतरसी, तब बढ़ते बल नहीं बेर जी ।
 परआत्म को आत्म देखसी, तब उतर जासी सब फेर जी ॥४४॥
 एह विध कर कर आत्म जगाई, तब होसी सब सुध जी ।
 सुध हुए पूर चलसी प्रेम के, होसी जाग्रत हिरदे बुध जी ॥४५॥

निरमल हिरदे में लीजो वचन, ज्यों निकसे फूट बान जी ।
 ए कह्या ब्रह्मसृष्ट ईश्वरी को, ए क्यों लेवे जीव अग्यान जी ॥४६॥
 माया जीव हममें रहे ना सके, सो ले न सके एह वचन जी ।
 ना तो सब्द घने लागसी मीठे, पर रहेने ना देवे झूठा मन जी ॥४७॥
 जो कोई जीव होए माया को, सो चलियो राह लोक सत जी ।
 जो कोई होवे निराकार पार को, सो राह हमारी चलत जी ॥४८॥
 वासना को तो जीव न कहिए, जीव कहिए तो दुख लागे जी ।
 झूठकी संगते झूठा केहेत हों, पर क्या करों जानों क्योंए जागे जी ॥४९॥
 ए कठन वचन मैं तो केहेती हों, ना तो क्यों कहूं वासना को जीव जी ।
 जिन दुख देखे गुन्हेंगार होत हो, आग्या ना मानो पिउ जी ॥५०॥
 प्रकास बानी तुम नीके कर लीजो, जिन छोडो एक खिन जी ।
 अंदर अर्थ लीजो आत्म के, विचारियो अंतस्करन जी ॥५१॥
 अंदर का जब लिया अर्थ, तब नेहेचे होसी प्रकास जी ।
 जब इन अर्थें जागी वासना, तब वृथा ना जाए एक स्वांस जी ॥५२॥
 ए प्रगट बानी कही प्रकास की, इंद्रावती चरने लागे जी ।
 सो लाभ लेवे दोनों ठौर को, जाकी वासना इत जागे जी ॥५३॥

॥प्रकरण॥३०॥चौपाई॥७८८॥

बेहद वानी

बेहद के साथी सुनो, बोली बेहद वानी ।
 बड़े बड़े रे हो गए, पर काहूं न जानी ॥१॥
 उपाय किए अनेको, पर काहूं ना लखानी ।
 ए वानी निज बुध बिना, न जाए पेहेचानी ॥२॥
 ना तो आए बुध के सागर, गुन खट ग्यानी ।
 भगवानजी को महादेवजी, पूछे बेहद वानी ॥३॥

विष्णु कहे सिवजी सुनो, तुम पूछत हो जेह ।
 आद करके अबलों, अगम कहियत हैं एह ॥४॥
 कोट ब्रह्मांड जो हो गए, तित काहूं ना सुनी ।
 खोज खोज खोजी थके, चौदे लोक के धनी ॥५॥
 फेर पूछे सिव विष्णु को, कहे ब्रह्मांड और ।
 और ब्रह्मांड की वारता, क्यों पाइए इन ठौर ॥६॥
 ए बात तो सिवजी जाहेर, इत है कई भांत ।
 ठौर ठौर कहे वचन, ए जो भेद कल्पांत ॥७॥
 सुकजी और सनकादिक, कई और भी साध ।
 तिन खोज खोज के यों कह्या, ए तो अगम अगाध ॥८॥
 एक सब्द के कारने, लखमी जी आप ।
 नेक भी जाहेर ना हुई, अंग दिए कई ताप ॥९॥
 याही रस के कारने, कैयों किए बल ।
 कैयों कलप्या अपना, पर काहूं ना प्रेमल ॥१०॥
 सो रस बृज की सुंदरी, पायो सुगम ।
 सो सेहेजे घर आइया, जो कहे वेद अगम ॥११॥
 ए निध अपने घर की, इन यों तो बिलसी ।
 अनूं^१ चोंच पात्र या बिना, नाहीं काहूं कैसी ॥१२॥
 अबलों काहूं ना जाहेर, श्री धाम के धनी ।
 खेले आप इच्छा कर, अर्धांग जो अपनी ॥१३॥
 साथ इच्छाएं सुपन में, खेल मांहें आया ।
 बेहद थे पिउ आंके, बेहद साथ खेलाया ॥१४॥
 ए वानी इत हम बिना, और काहूं न होवे ।
 आधा लुगा ना पाइए, जो जीव अपना खोवे ॥१५॥

साथ देखने आइया, पिउ इछा कर ।
 बेहद धनी साथ को, खेलावें चित धर ॥१६॥
 ले चलसी सब साथ को, पार बेहद घर ।
 पीछे अवतार बुध को, सब करसी जाहेर ॥१७॥
 बैकुंठ जाए विष्णु को, सब देसी खबर ।
 विष्णु को पार पोहोंचावसी, सब जन सचराचर ॥१८॥
 खोज पाई जिन ए निध, धन धन सो बुध ।
 दृढ़ करी सनेहसों, साथ को कही सुध ॥१९॥
 नौतन पुरी भली पेरे, चितसों चरचानी ।
 साथी जो बेहद के, तिनहूं पेहेचानी ॥२०॥
 बेहद वाट देखावहीं, पिउ आए के पास ।
 तारतम ले आए धनी, ए जोत उजास ॥२१॥
 जाहेर हुई जो साथ में, देखो रास प्रकास ।
 तारतम वानी वतन की, जिन कियो तिमर सब नास ॥२२॥
 हिरदे आद नारायन के, वेद जिनको स्वांस ।
 ग्रन्थ सबों की उत्पन, वानी वेद व्यास ॥२३॥
 तामे फल श्री भागवत, सुकजी मुख भाख ।
 पाती ल्याया बेहद की, साथ की पूरी साख ॥२४॥
 और भी नाम केते कहूं, इंड वानी अलेखे ।
 सब साख देवे बेहद की, जो कोई दिल दे देखे ॥२५॥
 ए बानी ए वाटड़ी, कबूं ना जाहेर ।
 धनी ब्रह्मांड के खोजिया, सब माहें बाहेर ॥२६॥
 एक जरा किनहूं न पाइया, इत अनेक जो धाए ।
 नाम ब्रह्मांड के धनी कहे, दूजे कहा^१ करूं सुनाए ॥२७॥

सो निध जाहेर इत हुई, धन धन संसार ।
 धन धन खंड भरथ का, धन धन नर नार ॥२८॥
 धन धन पांचों तत्व, धन धन त्रैगुन ।
 धन धन जुग सो कलजुग, धन धन पुरी नौतन ॥२९॥
 अब कहूं लीला प्रथम की, सुनियो तुम साथ ।
 जो कबूं कानों ना सुनी, सो पकड़ देऊं हाथ ॥३०॥
 धोखा कोई न राखहूं, करूं निरसंदेह ।
 मुक्त होत सचराचर, आयो वतनी मेह ॥३१॥
 धन गोकुल जमुना त्रट, धन धन बृजवासी ।
 अग्यारे बरस लीला करी, करी अविनासी ॥३२॥
 चौदे लोक सुपन के, साथ आया देखन ।
 मुक्त दे पीछे फिरे, सदासिव चेतन ॥३३॥
 और ब्रह्मांड जोगमाया को, कियो खेलने रास ।
 खेल करे श्री राजसों, साथ सकल उलास ॥३४॥
 नौतन खेल या रास को, कबहूं ना होवे भंग ।
 खेल साथ सुपन में, जोगमाया के रंग ॥३५॥
 तुम देखो साथ सुपन में, खेल खेले ज्यों ।
 एक विधें साथ जागिया, खेल त्यों का त्यों ॥३६॥
 एह ब्रह्मांड तीसरा, हुआ उत्पन ।
 धाख रही कछू अपनी, तो फेर आए देखन ॥३७॥
 ब्रह्मांड तीनों देखे हम, खेल बिना हिसाब ।
 जाग वतन बातां करसी, जो देखी मिने ख्वाब ॥३८॥
 ए जो ब्रह्मांड उपज्या, जिनमें राख्या सेर^१ ।
 साथ घरों सब पोहोंचिया, और इत आए फेर ॥३९॥

ज्यों हरे ब्रह्मांए बाछरू, गोवाला संघातें ।
 ततखिन सो नए किए, आप अपनी भातें ॥४०॥
 गोकुल मिने आप अपने, घर सब कोई आया ।
 खबर ना पड़ी काहूं को, ऐसी रची माया ॥४१॥
 एह दृष्टांते समझियो, राह राख्या इन विध ।
 ए बल माया देखियो, और ऐसी किध ॥४२॥
 साथ चल्या सब वतन, अपने पिउ साथ ।
 और खेले रासमें अखंड, इत उठे प्रभात ॥४३॥
 सोई गोकुल जमुना त्रट, जानों सोई बृजवासी ।
 रास लीला जाने खेल के, इत आए उलासी ॥४४॥
 जाने सोई ब्रह्मांड, जो खेलत सदाए ।
 ए ब्रह्मांड जो उपज्या, ऐसी रे अदाए ॥४५॥
 दोऊ ब्रह्मांडों बीच में, सेर राख्या सार ।
 खबर ना पड़ी काहू को, बेहद का बार^१ ॥४६॥
 इत फेर उठे जो प्रतिबिंब, यामें साथ पिउ ।
 खेल आए जाने हम नहीं, धोखा रह्या जिउ ॥४७॥
 धोखा इनों का भी ना मिट्या, तो कहा^२ करे और ।
 बेहद वानी के माएने, क्यों होवे दूजे ठौर ॥४८॥
 यों साथ पिछला आइया, इत इन दरवाजे ।
 मूल साथ फेर आवसी, ए किया जिन काजे ॥४९॥
 क्या जाने हद के जीवड़े, बेहद की बातें ।
 रास में खेले अखंड, इत उठे प्रभातें ॥५०॥
 खेले पिछले साथ में, सात दिन ताई ।
 अकूर चल्या बुलाए के, पोहोंचे मथुरा मांहीं ॥५१॥

तोलों भेख जो पिउ का, कुबलापील माख्या ।
 चांडूल मुष्टक संघार के, जाए कंस पछाड़या ॥५२॥
 टीका दिया उग्रसेन को, भए दिन चार ।
 छोड़ वसुदेव भेख उतारिया, या दिन थें अवतार ॥५३॥
 अब इहां से लीला हद की, सोतो सारे केहेसी ।
 पर बेहद वानी हम बिना, दूजा कौन देसी ॥५४॥
 नरसैयां इन पेंडे खड़ा, लीला बेहद गाए ।
 बल करे अति निसंक, मिने पैठ्यो न जाए ॥५५॥
 जो बल किया नरसैएँ, कोई करे ना और ।
 हद के जीव बेहद की, लीला देखी या ठौर ॥५६॥
 नरसैयां दौड़्या रस को, वानी करे रे पुकार ।
 रस जाए हुआ अंदर, आड़े दरवाजे चार ॥५७॥
 द्वारने इन बेहद के, लेहेरें आवें सीतल ।
 सो इत खड़ा लेवहीं, रस की प्रेमल ॥५८॥
 इन दरवाजे नरसैयां, प्रेमें लपटाना ।
 लीला पीछले साथ में, सुख ले समाना ॥५९॥
 लीला सुकें बरनन करी, बृज रास बखाना ।
 बेहद की वानी बिना, ठौर ठौर बंधाना ॥६०॥
 ना तो ए क्यों ऐसे वरनवे, क्यों कहे पंच अध्याई ।
 ए रस छोड़ और वचन, मुख काढ्यो न जाई ॥६१॥
 होवे अस्कंध द्वादस थें, इत कोट गुने ।
 पर क्या करे आग्या इतनी, बस नाहीं अपने ॥६२॥
 ना हुई जाहेर या मुख, बेहद की वान ।
 धाख रही बोहोत हिरदे, कलप्या दुख आन ॥६३॥

कंपमान होए कलप्या, रस गया याथें ।
 सोए दुख क्यों सेहें सके, रस जाए जाथें ॥६४॥
 बेहद के सब्द कहे का, था हरख अपार ।
 दरवाजा ना खोलिया, रह्या रस सार ॥६५॥
 रास रात बरनन करी, देखो मन विचार ।
 नारायनजी की रात को, कोईक पावे पार ॥६६॥
 पार नहीं रास रात को, ए तो बेहद कही ।
 तामें अखंड लीला रास की, पंच अध्याई भई ॥६७॥
 देखो जाहेर याके माएने, चित ल्याए वचन ।
 रात ऐसी बड़ी तो कही, लीला बड़ी वृंदावन ॥६८॥
 ए पंच अध्याई होवे क्यों कर, मेरे मुनीजी की बान ।
 पर सार समें बीच अटक्या, रस आए सुजान ॥६९॥
 दुख हुआ बोहोत कलप्या, पर कहा^१ करे जान ।
 पात्र बिना पावे नहीं, रस बेहद वान ॥७०॥
 पात्र बिना तुम पाइया, मुनीजी क्यों करो दुख ।
 आज लगे बेहद का, किन लिया है सुख ॥७१॥
 एतो हमारा कागद, तुम साथे आया ।
 खबर हद बेहद की, देकर पठाया ॥७२॥
 विध सारी कागद में, हम लिए विचार ।
 तुम साथे मुनीजी संदेसड़ा, आए समाचार ॥७३॥
 या सुध कागद हम लई, समझे सब सार ।
 औरन को ए कोहेड़ा, ना खुले द्वार ॥७४॥
 और विचारे क्या जानहीं, जाने जाको होए ।
 हम बिना द्वार बेहद के, खोल ना सके कोए ॥७५॥

लाख बेर देखो फेर, न पावे कड़ी कल^१ ।
 पाई नहीं त्रिगुन ने, कर कर गए बल ॥७६॥
 ए तो कोहेड़ा हद का, बेहदी समाचार ।
 ए देखावें हम जाहेर, साथ को खोल द्वार ॥७७॥
 सुकजी इत ले आइया, बेहद के बोल ।
 फेर टालो अंदर का, देखो आंखां खोल ॥७८॥
 अस्कंध दूजा मुनिऐं कह्या, चत्रश्लोकी जित ।
 ब्रह्मांड की जहां उतपन, अर्थ देखो तित ॥७९॥
 ए द्वार देखोगे जाहेर, होसी माया पेहेचान ।
 ए माएना नीके लीजियो, हिरदे में आन ॥८०॥
 मोह तत्व कह्या नींद को, सुरत अहंकार ।
 सुपन को कह्या ब्रह्मांड, नाम धरे बेसुमार ॥८१॥
 पैड़ा बेहद वतन का, ए वतनी जाने ।
 हद का जीव बेहद का, द्वार क्यों पेहेचाने ॥८२॥
 देख्यो द्वार बेहद के, सुकजी बलवंत ।
 पर कल किल्ली क्यों पावहीं, जोर किया अनंत ॥८३॥
 द्वार खोलने दौड़िया, सुकजी सपराना ।
 ले चल्या संग परीछित, सो तो बोझे दबाना ॥८४॥
 बल किया बलिऐं घना, द्वार द्वार पछटाना ।
 पर साथे संघाती हद का, इत सो उरझाना ॥८५॥
 रास लीला सुख अखंड, इत तो ना केहेलाना ।
 पाछल तान हुई घनी, अध बीच लेवाना ॥८६॥
 पात्र बिना रस क्यों रहे, आवत ढलकाना ।
 पात्र हुते तिन पाइया, भली भांत पेहेचाना ॥८७॥

बरस असी लगे ए रस, सारी पेरे सचवाना ।
 लिया पिया साथ में, जिन जैसा जाना ॥८८॥
 एक बूंद बाहेर न निकस्या, साथ मिने समाना ।
 जिन का था तिन बिलसिया, मिनो मिने बटाना ॥८९॥
 अब हम मिने थें ए रस, इत आए छलकाना ।
 छोल आई ज्यों सागर, अंग थें उभराना ॥९०॥
 जोर किया हम बोहोतेरा, रस रह्या न ढपाना ।
 ए अब जाहेर होएसी, बाहेर प्रगटाना ॥९१॥
 ए रस आज के दिन लों, कित काहू न लखाना ।
 आवसी साथ इन विध, ए रस लपटाना ॥९२॥
 जान होए सो जानियो, ए क्योंकर रहे छाना ।
 क्यों कर ए छिपा रहे, सब सुनसी जहाना ॥९३॥
 ए बानी बेहद प्रगटी, इंद्रावती मुख ।
 बोहोत विधें हम रस पिए, बेहद के सुख ॥९४॥
 या बानी के कारने, कई करें तपसन ।
 या बानी के कारने, कई पीवें अगिन ॥९५॥
 या बानी के कारने, कई दमे देह ।
 या बानी के कारने, कई करें कष्ट सनेह ॥९६॥
 या बानी के कारने, कई गले हेम ।
 या बानी के कारने, कई लेवे अनसन नेम ॥९७॥
 या बानी के कारने, कई भैरव झंपावे ।
 या बानी के कारने, तिल तिल देह कटावे ॥९८॥
 या बानी के कारने, कई संधान सारे ।
 या बानी के कारने, कई देह जारे ॥९९॥

या बानी के कारने, करें कई विध ताब ।
 सो मुख थें केते कहूं, हुए जो बिना हिसाब ॥१००॥
 किन एक बूंद न पाइया, रसना भी वचन ।
 ब्रह्मांड धनियों देखिया, जो कहावें त्रैगुन ॥१०१॥
 और भी नाम अनेक हैं, पर लेऊं कहा^१ के ।
 ब्रह्मांड के धनियों ऊपर, लिए जाए न ताके ॥१०२॥
 सो रस सागर इत हुआ, लेहेरें उछले ।
 साथ सबे हम बिलसहीं, बाहेर पूर भी चले ॥१०३॥
 पेहेले बीज उदे हुआ, पुरी जहां नौतन ।
 सब पुरियों में उत्तम, हुई धन धन ॥१०४॥
 फेर कहूं विध सकल, जासों सब समझाए ।
 संसा कोई साथ को, मैं राख्यो न जाए ॥१०५॥
 जो रस गोकुल प्रगट्या, सो तो सुख अलेखे ।
 बिन जाने सुख बिलसिया, घर कोई न देखे ॥१०६॥
 ए सुख सुपने बिलसिया, साथ पिउ संघाते ।
 घर देखे भागे सुपना, ना देखाय ताथे ॥१०७॥
 सुपन भागे सुख क्यों होए, खेल क्यों देखाए ।
 जब सुख वतन लीजिए, नींद उड़के जाए ॥१०८॥
 नींद उड़े भागे सुपना, तब फेर फेरा होए ।
 सुख सुपन और वतन, लिए जाए ना दोए ॥१०९॥
 या विध साथ समझियो, सुख साथ को दियो ।
 यों बिन जाने बृजमें, सुख सुपने लियो ॥११०॥
 अब सुख रास कहा कहूं, जाने निज सुख होए ।
 ए सुख साथ पिउ बिना, न जाने कोए ॥१११॥

ए पिउ सरूप नौतन, नौतन सिनगार ।
 नेह हमारा नौतन, नौतन आकार ॥११२॥
 ए बन सुंदर नौतन, नौतन वाओ वाए ।
 जल जमुना नौतन, लेहेरां लेवें बनराए ॥११३॥
 सुगंध बेलियां नौतन, जिमी रेत सेत प्रकास ।
 नेहेकलंक चंद्रमा नौतन, सकल कला उजास ॥११४॥
 नौतन रंग पसु पंखी, बानी नई रसाल ।
 नौतन वेन बजावहीं, नए सुख देवें लाल ॥११५॥
 या रस सुख केते कहूं, कई रेहेस^१ प्रकार ।
 साथ पिउ संग विलास, हम किए अपार ॥११६॥
 कई बातें या सुख की, जीव हिरदे जाने ।
 ए सुख पेहेले थें अलेखे, अति अधिकाने ॥११७॥
 तेज सबों में मूल का, सबहीं चेतन ।
 थिर चर चेतन ए लीला, ऐसी उतपन ॥११८॥
 पर ए सुख सबे सुपन में, नेठ नींद जो मांहें ।
 ए सुख जोग माया मिने, दृष्ट ना घर तांहें ॥११९॥
 एक सुख कहे गोकुल के, और सुख रास सुपन ।
 सुख दोऊ क्यों होवहीं, विचारियो मन ॥१२०॥
 जब लीजे सुख सुपन, नहीं वतन दृष्ट ।
 जब सुख वतन देखिए, नहीं सुपन की सृष्ट ॥१२१॥
 यों सुख सुपने लिए, कछुए नहीं खबर ।
 इन दोऊ लीला मिने, सुध नाहीं घर ॥१२२॥
 या विध लीला दोऊ करी, सिधारे वतन ।
 ए ब्रह्मांड जो तीसरा, ले आए आपन ॥१२३॥

जो मनोरथ मूल का, हुआ नहीं पूरन ।
 बिन सुध विरह विलास किए, यों रही धाख मन ॥१२४॥
 धाख क्यों रहे अपनी, ए किया इंड फेर ।
 साथें आए पिउजी, इत दूजी बेर ॥१२५॥
 लीला दोऊ पेहेले करी, दूजे फेरे भी दोए ।
 बिना तारतम ए माएने, न जाने कोए ॥१२६॥
 एक में उपज्या तारतम, दूजे मिने उजास ।
 सब विध जाहेर होएसी, जागनी प्रकास ॥१२७॥
 तारतम जोत उद्योत है, तिनथे कहा होए ।
 एक सुपन दूजा वतन, जीव देखे दोए ॥१२८॥
 वतन देखते जाहेर, दूजी दोए लीला जो करी ।
 ए सब याद आवहीं, इत दोए दूसरी ॥१२९॥
 याद आवें सारे सुख, और जीव नैनों भी देखे ।
 तारतम सब सुख देवहीं, विध विध अलेखे ॥१३०॥
 या लीला की बातें इत, जुबां कही न जाए ।
 सुख दोऊ इत लीजिए, मनोरथ पुराए ॥१३१॥
 या लीला को जो बल, वचन सब केहेसी ।
 वचन माएने देखके, सब सुख लेसी ॥१३२॥
 धंन धंन ब्रह्मांड ए हुआ, धंन धंन भरथखंड ।
 धंन धन जुग सो कलजुग, जहां लीला प्रचंड ॥१३३॥
 धंन धंन पुरी नौतन, जहां लीला उदे हुई ।
 केताक साथ आइया, दूजिएँ सब कोई ॥१३४॥
 धंन धंन धनी साथसों, धंन धंन तारतम ।
 पूरन प्रकास ल्याए के, सुख दिए हम ॥१३५॥

तारतम रस बेहद का, सब जाहेर किया ।
 बोहोत विधेँ सुख साथ को, खेल देखते दिया ॥१३६॥
 तारतम रस वानी कर, पिलाइए जाको ।
 जेहेर चढ़्या होए जिमी का, सुख होवे ताको ॥१३७॥
 जो जीव नींद छोड़े नहीं, पिलाइए वानी ।
 ल्याए पिउ वतन थेँ, बल माया जानी ॥१३८॥
 जेहेर उतारने साथ को, ल्याए तारतम ।
 बेहद का रस श्रवनेँ, पिलावेँ हम ॥१३९॥
 ए रस श्रवनों जाके झरे, ताए कहा^१ करे जेहेर ।
 सुपन ना होवे जागते, देखी तां वैर^२ ॥१४०॥
 सुपन होवे नींद थेँ, कई इंड अलेखे ।
 जिन खिन आंखां खोलिए, तब कछुए ना देखे ॥१४१॥
 एही रस तारतम का, चढ़्या जेहेर उतारे ।
 निरविख^३ काया करे, जीव जागे करारे ॥१४२॥
 जागे सुख अनेक हैं, इतही अलेखे ।
 वतन सुख लीजिए, जीव नैनों भी देखे ॥१४३॥
 सुख बड़े तारतम के, क्यों जाहेर कीजे ।
 वानी माएने देखके, जीव जगाए लीजे ॥१४४॥
 ए वचन साथ के कारने, मैं तो बाहेर पाड़े ।
 दरवाजे बेहद के, अनेक उघाड़े ॥१४५॥
 आधे अखर^४ का पाओ लुगा^५, कबूं ना बाहेर ।
 श्री धाम थेँ ल्याए धनी, तो हुए जाहेर ॥१४६॥
 या खेल साथ देखहीं, जुदे जुदे होए ।
 तो सुख ऐसा पसर्या, नाहीं सुख बिना कोए ॥१४७॥

ऐसा खेल छल का, छोड़ाए नहीं ।
 ब्रह्मांड की कारीगरी, सारी करी सही ॥१४८॥
 कबूतर बाजीगर के, जैसे कंडिया^१ भरिया ।
 तबहीं देखे फूंक देए के, तुरत खाली करिया ॥१४९॥
 ऐसी बाजी इन छल की, ब्रह्मांड जो रचियो ।
 देख बाजी कबूतर, साथ मांहेँ मचियो ॥१५०॥
 आंबों बोए जल सींचियो, तबहीं फूले फलियो ।
 बिध बिध की रंग बेलियां, बन ऊपर चढ़ियो ॥१५१॥
 एह देख चित भरमिया, सुध नहीं सरीर ।
 विकल^२ भई रंग बेलियां, चित नाहीं धीर^३ ॥१५२॥
 ततखिन कछू न देखिए, बाजीगर हाथ ।
 आंबो ना कछू बेलियां, या रंग बांध्यो साथ ॥१५३॥
 बिसरी सुध सरीर की, बिसर गए घर ।
 चींटी कुंजर निगलिया, अचरज या पर ॥१५४॥
 अचरज एक बड़ो सखी, देखो दिल मांहेँ ।
 वस्त खरी को ले गई, जो कछुए नांहेँ ॥१५५॥
 जोर हुई नींद साथ को, यों सुपन बाढ़्या ।
 खेल मिने थें बल कर, न जाए काढ़्या ॥१५६॥
 ता कारन बानी बेहद, केहे नींद टालों ।
 ना देऊं सुपन पसरने, चढ़्या जेहेर उतारों ॥१५७॥
 कुंजर काढ़ों चींटी मुख, सुध आनो सरीर ।
 तारतम केहे जुदे जुदे, करों खीर^४ और नीर^५ ॥१५८॥
 झूठे को झूठा करूं, सांचा सागर तारूं ।
 ए रस श्रवनो पिलाए के, साथ के कारज सारूं ॥१५९॥

मोह जेहेर ऐसा जान के, ल्याए तारतम ।
 सब विध का ए औखद, प्रकासे खसम ॥१६०॥
 सब किया उजाला खेल में, साथ देखन आया ।
 और जीव बंधाने या विध, विध विध की माया ॥१६१॥
 दूजे तीजे मैं तो कहे, जो साथ को माया भारी ।
 तुम देखो सुपना सत कर, तो मैं कह्या विचारी ॥१६२॥
 विचार के छल छोड़िए, तो होवे दोऊ पर^१ ।
 सुपने भी सुख लीजिए, हरखें जागीए घर ॥१६३॥
 तारतम पख दूजा कोई नहीं, बिना साथ सब सुपन ।
 जो जगाऊं माया झूठी कर, धाख रहे जिन मन ॥१६४॥
 हद के पार बेहद है, बेहद पार अछर ।
 अछर^२ पार वतन है, जागिए इन घर ॥१६५॥
 ए दोऊ विध मैं तो कही, सुपन हरखें उड़ाऊं ।
 कहे इंद्रावती उछरंगे, साथ जुगतें जगाऊं ॥१६६॥

॥प्रकरण॥३१॥चौपाई॥१५४॥

दूध पानी का निबेरा - राग सामेरी

हो वतनी बांधो कमर तुम बांधो, सुरत पिआसों साधो ।
 तीनों कांडों बड़ा सुकदेव, ताकी बानी को कहूं भेव ॥१॥
 बिन पूछे कहूं विचार, निज वतनी जो निरधार ।
 जिन कोई संसे तुमें रहे, सो मेरी आतम ना सहे ॥२॥
 एक वचन इत यों सुनाए, चींटी पांउ कुंजर बंधाए ।
 तिनके पर्वत ढांपिया, सो तो काहूं न देखिया ॥३॥
 चींटी हस्ती को बैठी निगल, ताकी काहूं ना परी कल^३ ।
 सनकादिक ब्रह्मा को कहे, जीव मन दोऊ भेले रहे ॥४॥

ए भेले हुए हैं आद, के भेले हैं सदा अनाद ।
 कहे ब्रह्मा भेले नहीं तित, ए आए मिले हैं इत ॥५॥
 तब सनकादिके फेर यों कह्यो, तो ए जुदे करके देओ ।
 फेर ब्रह्मांए करी फिकर, तब देखे वचन विचार चित धर ॥६॥
 ए समझ मुझसे ना होए, क्यों कर करों जुदे मैं दोए ।
 तब सरन विष्णु के गए, अंतरगतें वचन कहे ॥७॥
 बैकुंठ नाथे सुने वचन, हंस होए आए ततखिन ।
 हंसे रूप धर्यो सुंदर, लिए सनकादिक के चित हर ॥८॥
 जीवें हंससों करी पेहेचान, चारों चरन लगे भगवान ।
 फेर मनें यों कियो विचार, ले नजरों देख्या आकार ॥९॥
 जो जीवें करी पेहेचान, सो मनने तबही दर्ई भान ।
 फेर सनकादिकें यों पूछिया, तुम कौन हो यों कर कह्या ॥१०॥
 तब हंसे कियो जवाब, समझे सनकादिक भान्यो वाद ।
 चित किये चारों के धीर, पर ना हुए जुदे खीर नीर ॥११॥
 आओ हंस या और कोए, पर कोई जुदे कर ना देवे दोए ।
 दोऊ के जुदे बासन^१, यों कबहूं ना किए किन ॥१२॥
 अब याकी कहूं समझन, जुदे कर देऊं जीव और मन ।
 समझ के पेहेचानों जिउ, निज वतन जो अपना पिउ ॥१३॥
 नहीं राखों तुमें संदेह, इन चारों का अर्थ जो एह ।
 जो कोई साध पूछे क्यों, ताए सास्त्र सब केहेवे यों ॥१४॥
 अकल अगम बैकुंठ का धनी, ए थोड़ी अजूं करे घनी ।
 इन करते सब कछू होए, पर ए अर्थ ना देवे कोए ॥१५॥
 यों धोखा रह्या सब मांहें, समझ काहूं ना परी क्यांहें ।
 अब समझाऊं देखो बानी, दूध विछोड़ा कर देऊं पानी ॥१६॥

जो तुमें साख देवे आत्म, तो सत माएने जानो तारतम ।
 इन अंतर देखो उजास, या जीव को बड़ो प्रकास ॥१७॥
 चौदे लोक उजाला करे, जो निज वतन दृष्टें धरे ।
 याको नूर सदा नेहेचल, नेक कहंगी याको आगे बल ॥१८॥
 ए उजाला इंड न समाए, सो इन जुबां कह्यो न जाए ।
 या मन को नाहीं कछू मूल, याथे बड़ा कहिए आक का तूल ॥१९॥
 तूल का भी कोटमा हिसा, मन एता भी नहीं ऐसा ।
 सो ए गया जीव को निगल, यों सब पर बैठा चंचल ॥२०॥
 यों तिनके पर्वत ढांपिया, यों गज चींटी पांऊ बांधिया ।
 जो जीव करे उजास, तो मन को आगे ही होए नास ॥२१॥
 अब या पर एक कहूं दृष्टांत, देखो आप में वृतांत ।
 सुकजी के कहे प्रवान, सात सागर को काढ़्यो निरमान^१ ॥२२॥
 भव सागर को नाहीं छेह, सुकजी यों मुख जाहेर कहे ।
 पेहेले पांउ भरे तुम जेह, कर सांचा मूल सनेह ॥२३॥
 सखी बेन सुन ना रही कोई पल, देखियो एह जीव को बल ।
 इन आड़ा था मन संसार, पर जीव निकस्या वार के पार ॥२४॥
 देखो पांउ जीवने भरे, भव सागर ए क्यों कर तरे ।
 जाको ना निकस्यो निरमान, सुकजीकी वानी प्रमान ॥२५॥
 सो फेर कह्यो गौपद बछ, यों भवसागर होए गयो तुछ ।
 एता भी ना दृष्टें आया, पर लिखने को नाम धराया ॥२६॥
 भव सागर क्यों एता भया, जो जीव खरे जीवनजी ग्रह्या ।
 यों मन जीवथें जुदा टल्या, तब झूठा मन झूठे में मिल्या ॥२७॥
 खीर नीर देखो विचार, एक धनी दूजा संसार ।
 दोऊ बासन^२ में दोऊ जुद, यों नीके कर देखो हिरदे ॥२८॥

अंतरगत बैठे हैं सही, अंतर उड़ावने बानी कही ।
 विचार देखो तो इतहीं पिउ, सागर तबहीं तूल करे जिउ ॥२९॥
 तब इतहीं जो वतन पिउ पार, सखी भाव भजिए भरतार ।
 आतम महामत है सूरधीर, प्रेमं देखाए जुदे खीर नीर ॥३०॥
 ॥प्रकरण॥३२॥चौपाई॥९८४॥

श्री भागवत को सार

सुनियो साथ कहूं विचार, फल वस्त जो अपनों सार ।
 सो ए देखके आओ वतन, माया अमल से राखो जतन ॥१॥
 इन अमल को बड़ो विस्तार, सो ए देखना नहीं निरधार ।
 पेहेले आपन को बरजे सही, श्री मुख बानी धनिएं कही ॥२॥
 तिन कारन तुमें देखाऊं सार, मूल वतन के सब प्रकार ।
 धनी अपनों धनी को विलास, जिनथें उपज अखंड हुआ रास ॥३॥
 ए सुनियो आतम के श्रवन, सो नाहीं जो सुनिए ऊपर के मन ।
 वेद को सार कह्यो भागवत, ए फल उपज्यो सास्त्रों के अंत ॥४॥
 सो फल सार सुकजीएँ लियो, सींच के अमृत पकव कियो ।
 ए फल सार जो भागवत भयो, ताको सार दसम स्कंध कह्यो ॥५॥
 दसम के नब्बे अध्या, तिनका सार भी जुदा कह्यो ।
 ताको सार अध्याय पैतीस, जो बृजलीला करी जगदीस ॥६॥
 जगदीस नाम विष्णु को होए, यों न कहूं तो समझे क्यों कोए ।
 ए जो प्रेम लीला श्री कृष्णजीएँ करी, सो गोपन में गोपियों चित धरी ॥७॥
 ए ब्रह्म लीला भई जो दोए, बृज लीला रास लीला सोए ।
 तामे तीस अध्याय जो बाल चरित्र, ए ब्रह्म लीला उत्तम पवित्र ॥८॥
 पंच अध्यायी ताको जो सार, किसोर लीला जोगमाया विस्तार ।
 बृज लीला को जो ब्रह्मांड, रात दिन जित होत अखंड ॥९॥

जोग माया जो लीला रास, रात अखंड सब चेतन विलास ।
ए लीला सुकें आवेस में कही, राजा परीछितें सही ना गई ॥१०॥
ए लीला क्यों सही जाए, बैकुंठ को अधिकारी राए ।
सुक के अंग हुआ उलास, जानूं बरनन करूंगो रास ॥११॥
या समें प्रश्न कियो राजान^१, सुक को जोस दियो तिन भान ।
प्रश्न चूक्यो भयो अजान, रास लीला ना बरनवी प्रवान ॥१२॥
तब हाथ निलाटें दियो सही, सुकें दुख पाए के कही ।
मैं जोगी तें राजा भयो, रास को सुख न जाए कह्यो ॥१३॥
ए वानी मेरे मुख थें ना परे, ना तेरे श्रवना संचरे^२ ।
ए जोग आपन नहीं दोए, तो इन लीला को सुख क्यों होए ॥१४॥
याके पात्र होसी इन जोग, या लीला को सो लेसी भोग ।
केसरी दूध ना रहे रज मात्र, उत्तम कनक^३ बिना जो पात्र ॥१५॥
एह वचन सुनके राए, पड़यो भोम खाए मुरछाए ।
कंपमान होए कलकल्या, रोवे बोहोत अंतस्करन गल्या ॥१६॥
तलफ तलफ दुख पावे मन, अंग मांहें लागी अगिन ।
तब सुकजिएँ दिलासा दिया, आंसूं पोंछ के बैठा किया ॥१७॥
सुनहो राजा द्रढ़ कर मन, अंतरगत केहेता वचन ।
सो केहेने वाला उठके गया, मैं अकेला बैठा रह्या ॥१८॥
अब राजा पूछत मोहे कहा, तुझ सरीखा मैं हो रह्या ।
तब परीछित चरन पकड़ के कहे, स्वामी ए दाझ जिन अंगमें रहे ॥१९॥
मुनीजी मैं बोहोत दुख पाऊं, एह दाझ जिन लिए जाऊं ।
तब भागे जोस कही पंच अध्याई, रास बरनन ना हुआ तिन ताई ॥२०॥
ना तो पंच अध्यायी क्यों कहे सुक मुन, रासलीला अखंड बरनन ।
ए लीला क्यों अध बीच रहे, एकादस द्वादस स्कंध कहे ॥२१॥

ए रास लीला को छोड़ के सुख, आधा लुगा न निकसे मुख ।
 पर ए केहेवाए धनी के जोस, सो उतर गया वचन के रोस ॥२२॥
 क्या करे अधबीच में लिया, अखंड सुख पूरा केहेने ना दिया ।
 दोष नहीं राजा को इत, ब्रह्मसृष्टी बिना न पोहोंचे तित ॥२३॥
 जाको जाना बैकुंठ बास, सो क्यों सहे अखंड प्रकास ।
 तो पार दरवाजे मूंदे रहे, हृद के संगिए खोलने ना दिए ॥२४॥
 अब सुकजी की केती कहूं बान, सार काढ़ने ग्रह्यो पुरान ।
 सबको सार कह्यो ए जो रास, ए जो इंद्रावती मुख हुआ प्रकास ॥२५॥
 अब कहूं इन रास को सार, जो तारतम वचन है निरधार ।
 तारतम सार जागनी विचार, सबको अर्थ करसी निरवार ॥२६॥
 निराकार के पार के पार, तारतम को जागनी भयो सार ।
 अछर^१ पार घर अछरातीत^२, धाम के यामें सब चरित्र ॥२७॥
 इत ब्रह्म लीला को बड़ो विस्तार, या मुखथें कहा कहूं प्रकार ।
 ए तारतम को बड़ो उजास, धनी आएके कियो प्रकास ॥२८॥
 संसे काहूं ना रहेवे कोए, ए उजाला त्रैलोकी में होए ।
 प्रगट भई परआतमा, सो सबको साख देवे आतमा ॥२९॥
 उड़्यो अंधेर काढ़्यो विकार, निरमल सब होसी संसार ।
 ए प्रकास ले धनी आए इत, साथ लीजो तुम मांहें चित ॥३०॥
 इन घर बुलावे ए धनी, ब्रह्मसृष्ट जो है अपनी ।
 खेल किया सो तुम कारन, ए विचार देखो प्रकास वचन ॥३१॥
 देख्यो खेल मिल्यो सब साथ, जागनी रास बड़ो विलास ।
 खेलते हंसते चले वतन, धनी साथ सब होए प्रसंन ॥३२॥
 इतहीं बैठे जागे घर धाम, पूरन मनोरथ हुए सब काम ।
 उड़्यो अग्यान सबों खुली नजर, उठ बैठे सब घर के घर ॥३३॥

हांसी ना रहे पकरी, धनिएँ जो साथ पर करी ।
हंसते ताली देकर उठे, धनी महामत साथ एकठे ॥३४॥

॥प्रकरण॥३३॥चौपाई॥१०१८॥

पख पुष्ट मरजाद प्रवाह

अब कहूं सो हिरदे रख, अठोत्तर सौ जो है पख ।
एक विचार सुनियो प्रवान, याको सार काढूं निरवान ॥१॥
माया जीव कोई है समरथ, दौड़ करत है कारन अरथ^१ ।
निसंक आपोपा डास्या जिन, निहकर्म पैडा लिया तिन ॥२॥
पुष्ट मरजाद जो प्रवाह पख, याको सार बताऊं लख ।
ताके हिसे किए नौं, चढ़े सीढ़ी भगत जल भौं^२ ॥३॥
भी ताके बांटे किए सताईस, चढ़े ऊंचे सुरत बांध जगदीस ।
सो बांटे किए असी और एक, पोहोंचे बैकुंठ चढ़े या विवेक ॥४॥
तहां चार विध की कही मुगत, करनी माफक पावे इत ।
इतथें जो कोई आगे जाए, निराकार से ना निकसे पाए ॥५॥
पख बयासिमां जो कह्या, वल्लभाचारज तहां पोहोंचिया ।
स्यामा वल्लभियों करी बड़ी दौर, ए भी आए रहे इन ठौर ॥६॥
छेद इंड में कियो सही, पर अखंड दृष्टें आया नहीं ।
आड़ी सुंन भई निराकार, पोहोंच ना सके ताके पार ॥७॥
इनों की तो एह सनंध, पीछे फेर पकड़्या प्रतिबिंब ।
और साध अलेखे केते कहूं, निसंक दौड़ करी जिनहूं ॥८॥
ग्यानी अनेक कथें बहु ग्यान, ध्यानी कई विध धरें ध्यान ।
पर ए सबही सुन्य के दरम्यान, छूट्या न काहूं संसे उनमान ॥९॥
उपासनी निरगुन या निरंजन, किन उलंघ्यो न जाय विष्णु को कारन^३ ।
या सास्त्र या साधू जन, द्वैत सबे समानी सुंन ॥१०॥

इन ऊपर पख है एक, सुनियो ताको कहूं विवेक ।
 पुरुख प्रकृती उलंघ के गए, जाए अखंड सुख मांहे रहे ॥११॥
 त्रासिमा पख प्रवान, जो वासना पांचों लिया निरवान ।
 ए पांचो कहूं अपनायत^१ कर, देखांऊं सब्दातीत घर ॥१२॥
 ना तो प्रबोध^२ काहे को कहूं, चरन पिया के प्रेमें ग्रहूं ।
 पर साथ कारन कहूं फेर फेर, ए पांचो नाम लीजो चित धर ॥१३॥
 एक भगवानजी बैकुंठ को नाथ, महादेवजी भी इनके साथ ।
 सुकजी और सनकादिक दोए, कबीर भी इत पोहोंच्या सोए ॥१४॥
 लखमी नारायन जुदे ना अंग, सो तो भेले विष्णु के संग ।
 ए पांचो कहे मैं तिन कारन, चित ल्याए देखो याके वचन ॥१५॥
 देखो सब्द इनों की रोसनी, पर जानेगा बड़ी मत का धनी ।
 पख पचीस या ऊपर होय, तारतम के वचन हैं सोए ॥१६॥
 इन वचनों में अछरातीत^३, श्री धाम धनी साथ सहीत ।
 ए देखो तारतम को उजास, धनी ल्याए कारन साथ ॥१७॥
 तुम आपको ना करो पेहेचान, बोहोत ताए कहिए जो होए अजान ।
 तुम जो हो इन घर के प्रवान^४, सुनते क्यों ना होत गलतान ॥१८॥
 सनेहसों सेवा कीजो धनी, घर की पेहेचान देखियो अपनी ।
 तुम प्रेम सेवाएं पाओगे पार, ए वचन धनी के कहे निरधार ॥१९॥
 पीछला साथ आवेगा क्योंकर, प्रकास वचन हिरदे में धर ।
 चरने हैं सो तो आए सही, पर पीछले कारन ए बानी कही ॥२०॥
 आवसी साथ ए देख प्रकास, अंधकार सब कियो नास ।
 एह वचन अब केते कहूं, इन लीला को पार ना लहूं ॥२१॥
 या वानी को नहीं पार, साथ केता करसी विचार ।
 तिन कारन बोहोत कह्यो न जाए, ए तो पूर बहे दरियाए ॥२२॥

याको नेक विचारे जो एक वचन, ताए घर पेहेचान होवे मिने खिन ।
जो वासना होसी इन घर, सो एह वचन छोड़े क्यों कर ॥२३॥
ए वचन सुनते बाढ़े बल, सोई लेसी तारतम को फल ।
तारतम फल जागिए इन घर, कहे महामती ए हिरदे धर ॥२४॥
॥प्रकरण॥३४॥चौपाई॥१०४२॥

गुनन की आसंका

अब कछुक मैं अपनी करूं, ना तो तुमे बोहोतक ओचरूं ।
भी एक कहूं वचन, तुमको संसे रहेवे जिन ॥१॥
मैं धाम धनी गुन लिखे सही, एक आसंका मेरे मनमें रही ।
मैं गेहेरे सब्द कहे निरधार, सो साथ क्यों करसी विचार ॥२॥
जोलों आतम ना देवे साख, तोलों प्रबोध^१ भले दीजे दस लाख ।
पर सो क्योंए ना लगे एक वचन, जोलों ना समझे आतम बुध मन ॥३॥
ताथें यों दिल आई हमको, जिन कोई संसे रहे तुमको ।
एक प्रवाही वचन यों कहे, मुख थें कहे पर अर्थ ना लहे ॥४॥
सुई के नाके मंझार, कुंजर कई निकसे हजार ।
ए अर्थ भी होसी इतहीं, तारतम आसंका राखे नहीं ॥५॥
मैं गुन लिखते कही लेखन अनी, ए आसंका जिन होसी घनी ।
कथुए के पांऊ प्रवान, कलमे गढ़िया^२ हाथ सुजान ॥६॥
तिनकी भी मैं करी चीर, गुन जेती उतारी लीर^३ ।
अब जिन किनको संसे रहे, तारतम संसे कछू ना सहे ॥७॥
या पर एक कहूं विचार, सुनियो ब्रह्मसृष्ट सिरदार ।
ए चौद भवन देखो आकार, याके मूल को करो विचार ॥८॥
याको सास्त्र सुपनांतर कहे, कोई याको जीव याको ना लहे^४ ।
ए सुपन मूल तो है समरथ, याके मूल को देखो अर्थ^५ ॥९॥

सुपन मूल तो नींद जो भई, जब जाग उठे तब कछुए नहीं ।
 याको पेड़ कछू ना रह्यो लगार, कथुए^१ के पांउ का तो मैं कह्या आकार ॥१०॥
 बिना पेड़ देखो विस्तार, एता बड़ा किया आकार ।
 एतो पेड़ कह्या आकार, तो ताको क्यों ना होए विस्तार ॥११॥
 यों सूई के नाके मांहे, कई लाखों ब्रह्मांड निकसे जाए ।
 अब ए नीके लीजो अर्थ^२, गुन लिखने वालो समरथ ॥१२॥
 अब केता कहूं तुमको विस्तार, एक एह सब्द लीजो निरधार ।
 फेर फेर कहूं मेरे साथ, नीके पेहेचानो प्राण को नाथ ॥१३॥
 गुन लिखने वालो सो एह, आपन मांहे बैठा जेह ।
 इंद्रावती कहे दिल दे रे दे, जिन गुन किए सो ए रे ए ॥१४॥
 तेरे केहेना होए सो केहे रे केहे, लाभ लेना होए सो ले रे ले ।
 तारतम केहेत है आ रे आ, हजार बार^३ कहूं हां रे हां ॥१५॥
 मायासों कीजो ना रे ना, नाबूद फेरा जिन खा रे खा ।
 धनी के चरने जा रे जा, ऐसा न पावे दा रे दा ॥१६॥
 जो चूक्या अबको ता रे ता, तो सिर में लगसी घा रे घा ।
 संसार में नहीं कछू सा रे सा, श्री धामधनी गुन गा रे गा ॥१७॥
 लीजो मूल को भाओ रे भाओ, जिन छोड़े अपनो चाहो रे चाहो ।
 प्रेमें पकड़ पिउ के पाए रे पाए, ज्यों सब कोई कहे तोको वाहे रे वाहे ॥१८॥

॥प्रकरण॥३५॥चौपाई॥१०६०॥

गुन केते कहूं मेरे पिउ जी, जो हमसों किए अनेक जी ।
 ए बुध इन आकार की, क्यों कहे जुबां विवेक जी ॥१॥
 माया मांगी सो देखाए के, भानी मन की भ्रांत जी ।
 सब सुख दिए जगाए के, कई विध के द्रष्टांत जी ॥२॥

बृज के सुख इत आए के, हमको अलेखे दिए जी ।
 रास के सुख इत देएके, आप सरीखे किए जी ॥३॥
 कई विध विध के सुख धाम के, जो हमको दिए इत जी ।
 तारतम करके रोसनी, कई बिध करी प्राप्त जी ॥४॥
 सेहेजल सुख में झीलते, काहूं दुख न सुनिया नाम जी ।
 सो माया में इत आए के, सुख अखंड देखाया धाम जी ॥५॥
 कहे इंद्रावती अति उछरंगे, हमको लाड़ लड़ाए जी ।
 निरमल नेत्र किए जो आतम के, परदे दिए उड़ाए जी ॥६॥
 आप पेहेचान कराई अपनी, लई अपने पास जगाए जी ।
 बड़ी बड़ाई दर्ई आपथें, लई इंद्रावती कंठ लगाए जी ॥७॥

॥प्रकरण॥३६॥चौपाई॥१०६७॥

श्री प्रगटवाणी

निजनाम श्री जी साहिब जी, अनादि अछरातीत ।
 सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ॥१॥
 श्री स्यामाजी वर सत्य हैं, सदा सत सुख के दातार ।
 विनती एक जो वल्लभा, मो अंगना की अविधार ॥२॥
 वानी मेरे पिउ की, न्यारी जो संसार ।
 निराकार के पार थें, तिन पार के भी पार ॥३॥
 अंग उत्कण्ठा उपजी, मेरे करना एह विचार ।
 ए सत वानी मथ के, लेऊं जो इनको सार ॥४॥
 इन सार में कई सत सुख, सो मैं निरने करूं निरधार ।
 ए सुख देऊं ब्रह्मसृष्ट को, तो मैं अंगना नार ॥५॥
 जब ए सुख अंग में आवहीं, तब छूट जाएं विकार ।
 आयो आनन्द अखण्ड घर को, श्री अछरातीत भरतार ॥६॥

अब लीला हम जाहेर करें, ज्यों सुख सैयां हिरदे धरें ।
 पीछे सुख होसी सबन, पसरसी चौदे भवन ॥७॥
 अब सुनियो ब्रह्मसृष्ट विचार, जो कोई निज वतनी सिरदार ।
 अपना धनी श्री स्यामा स्याम, अपना वासा है निज धाम ॥८॥
 सोई अखंड अछरातीत घर, नित्य बैकुंठ मिने अछर ।
 अब ए गुझ करूं प्रकास, ब्रह्मानंद ब्रह्मसृष्ट विलास ॥९॥
 ए बानी चित दे सुनियो साथ, कृपा करके कहें प्राणनाथ ।
 ए किव कर जिन जानो मन, श्री धनीजी ल्याए धामथें वचन ॥१०॥
 सो केहेती हूं प्रगट कर, पट टालूं आड़ा अंतर ।
 तेज तारतम जोत प्रकास, करूं अंधेरी सबको नास ॥११॥
 अब खेल उपजे के कहूं कारन, ए दोऊ इछा भई उतपन ।
 बिना कारन कारज नहीं होए, सो कहूं याके कारन दोए ॥१२॥
 ए उपजाई हमारे धनी, सो तो बातें हैं अति घनी ।
 नेक तामें करूं रोसन, संसे भान देऊं सबन ॥१३॥
 अब सुनियो मूल वचन प्रकार, जब नहीं उपज्यो मोह अहंकार ।
 नाहीं निराकार नाहीं सुन्य, ना निरगुन ना निरंजन ॥१४॥
 ना ईस्वर ना मूल प्रकृती, ता दिन की कहूं आपा बीती ।
 निज लीला ब्रह्म बाल चरित्र, जाकी इछा मूल प्रकृत ॥१५॥
 नैन की पाओ पल में इसारत, कई कोट ब्रह्मांड उपजत खपत ।
 इत खेल पैदा इन रवेस, त्रैलोकी ब्रह्मा विष्णु महेस ॥१६॥
 कई बिध खेलें यों प्रकृत, आप अपनी इछासों खेलत ।
 या समें श्री बैकुंठ नाथ^१, इछा दरसन करने साथ ॥१७॥
 अछर मन उपजी ए आस, देखों धनीजी को प्रेम विलास ।
 तब सखियों मन उपजी एह, खेल देखें अछर^१ का जेह ॥१८॥

तब हम जाए पियासों कही, खेल अछर का देखें सही ।
 जब एह बात पिया ने सुनी, तब बरजे हांसी करने घनी ॥१९॥
 मने किए हमको तीन बेर, तब हम मांग्या फेर फेर फेर ।
 धनी कहें घर की ना रहेसी सुध, भूलसी आप ना रहेसी ए बुध ॥२०॥
 तो मने करत हैं हम, हमको भी भूलोगे तुम ।
 तब हम फेर धनीसों कह्या, कहा करसी हमको माया ॥२१॥
 तब हम मिल के कियो विचार, कह्या एक दूजी को हूजो हुसियार ।
 खेल देखन की हम पियासों कही, तब हम दोऊ पर अग्या भई ॥२२॥
 ए कहे दोऊ भिन भिन, खेल देखन के दोऊ कारन ।
 उपज्यो मोह सुरत संचरी^१, खेल हुआ माया विस्तरी ॥२३॥
 इत अछर को विलस्यो मन, पांच तत्व चौदे भवन ।
 यामें महाविष्णु मन मन थें त्रैगुन, तार्थें थिर चर सब उत्पन ॥२४॥
 या बिध उपज्यो सब संसार, देखलावने हमको विस्तार ।
 जो अग्या भई हम पर, तब हम जान्या गोकुल घर ॥२५॥
 ज्यों नींद में देखिए सुपन, यों उपजे हम बृज वधू जन ।
 उपजत ही मन आसा घनी, हम कब मिलसी अपने धनी ॥२६॥
 जेती कोई हैं ब्रह्मसृष्ट, प्रेम पूरन धनी पर द्रष्ट ।
 कंस के बंध वसुदेव देवकी, इत आई सुरत चत्रभुज की ॥२७॥
 सुरत विष्णु की चत्रभुज जोए, दियो दरसन वसुदेव को सोए ।
 पीछे फिरे केहेके हकीकत, अब दोए भुजा की कहूं विगत ॥२८॥
 मूल सुरत अछर की जेह, जिन चाह्या देखों प्रेम सनेह ।
 सो सुरत धनी को ले आवेस, नंद घर कियो प्रवेस ॥२९॥
 दो भुजा सरूप जो स्याम, आतम अछर जोस धनी धाम ।
 ए खेल देख्या सैयां सबन, हम खेले धनी भेले आनंद घन ॥३०॥

बाल चरित्र लीला जोबन, कई विध सनेह किए सैयन ।
 कई लिए प्रेम विलास जो सुख, सो केते कहूं या मुख ॥३१॥
 ए काल माया में विलास जो करे, सो पूरी नींद में सब बिसरे ।
 पूरी नींद को जो सुपन, काल माया नाम धराया तिन ॥३२॥
 तब धाम धनिऐं कियो विचार, ए दोऊ मगन हुए खेलें नर नार ।
 मूल वचन की नहीं सुध, ए दोऊ खेलें सुपने की बुध ॥३३॥
 एह बात धनी चितसों ल्याए, आधी नींद दई उड़ाए ।
 अग्यारे बरस और बावन दिन, ता पीछे पोहोंचे वृन्दावन ॥३४॥
 तहां जाए के बेन बजाई, सखियां सबे लई बुलाई ।
 तामसियां राजसियां चलीं, स्वांतसियां सरीर छोड़ के मिलीं ॥३५॥
 और कुमारका वृज वधू संग जेह, सुरत सबे अछर की एह ।
 जो व्रत करके मिली संग स्याम, मूल अंग याके नहीं धाम ॥३६॥
 बेन सुनके चली कुमार, भव सागर यों उतरी पार ।
 इनकी सुरत मिली सब सखियों मांहे, अंग याके रास में नांहे ॥३७॥
 या विध मुक्त इनों की भई, कुमारका सखियां जो कही ।
 ए जो अग्यारे बरस लो लीला करी, काल माया तितही परहरी ॥३८॥
 कछू नींद कछू जाग्रत भए, जोग माया के सिनगार जो कहे ।
 जोगमाया में खेले जो रास, आनन्द मन आनी उलास ॥३९॥
 जोगमाया में खेल जो खेले, संग जोस धनी के भेले ।
 जोगमाया में बाढ़्यो आवेस, सुध नहीं दुख सुख लवलेस ॥४०॥
 फेर मूल सख्यें देख्या तित, ए दोऊ मगन हुए खेलत ।
 जब जोस लियो खेंच कर, तब चित चौंक भई अछर ॥४१॥
 कौन बन कौन सखियां कौन हम, यों चौंक के फिरी आतम ।
 रास आया मिने जाग्रत बुध, चुभ रही हिरदे में सुध ॥४२॥

कई सुख रास में खेले रंग, सो हिरदे में भए अभंग ।
 या विध रास भयो अखंड, थिरचर जोगमाया को ब्रह्मांड ॥४३॥
 तब इत भए अंतरध्यान, सब सखियां भई मृतक समान ।
 जीव न निकसे बांधी आस, करने धनीसों प्रेम विलास ॥४४॥
 विरह सैयों ने कियो अत, धनी दियो आवेस फेर आई सुरत ।
 तब सैयों को उपज्यो आनंद, सब विरहा को कियो निकंद ॥४५॥
 आया सरूप कर नए सिनगार, भजनानंद सुख लिए अपार ।
 दोऊ आतम खेले मिने खांत, सुख जोस दियो कई भांत ॥४६॥
 कई विरह विलास लिए मिने रात, अंग आनंद भयो जोलों प्रात ।
 रास खेल के फिरे सब एह, साथ सकल मन अधिक सनेह ॥४७॥
 पीछे जोग माया को भयो पतन, तब नींद रही अछर सैयन ।
 बृज लीलासों बांधी सुरत, अखंड भई चढ़ आई चित ॥४८॥
 अछर चितमें ऐसो भयो, ताको नाम सदा सिव कह्यो ।
 बृज रास दोऊ ब्रह्मांड, ए ब्रह्म लीला भई अखंड ॥४९॥
 बृज रास लीला दोऊ मांहें, दुख तामसियों देख्या नांहें ।
 प्रेम पियासों ना करे अंतर, तो ए दुख देखें क्यों कर ॥५०॥
 कछुक हमको रह्यो अंदेस, सो राखे नहीं धनी लवलेस ।
 ता कारन ए भयो सुपन, हुए हुकमें चौदे भवन ॥५१॥
 काल माया को ए जो इंड, उपज्यो और जाने सोई ब्रह्मांड ।
 ए तीसरा इंड नया भया जो अब, अछर की सुरत का सब ॥५२॥
 याही सुरत की सखियां भई, प्रतिबिंब वेद रूचा^१ जो कही ।
 जाको कह्यो ऊधो ग्यान जोगारंभ, सो क्यों माने प्रेमलीला प्रतिबिंब ॥५३॥
 जो ऊधो ने दई सिखापन, सो मुख पर मारे फेर वचन ।
 याही विरह में छोड़ी देह, सो पोहोंची जहां सरूप सनेह ॥५४॥

अछर हिरदे रास अखंड कह्यो, ए प्रतिबिंब साथ तहां पोहोंचयो ।
 ए प्रतिबिंब लीला भई जो इत, सो कारन ब्रह्मसृष्ट के सत ॥५५॥
 जो प्रगट लीला न होवे दोए, तो असल नकल की सुध क्यों होए ।
 ता कारन ए भई नकल, सुध करने संसार सकल ॥५६॥
 सारे अर्थ तब होवें सत, जो प्रगट लीला दोऊ होवें इत ।
 याही इंड में श्रीकृष्णजी भए, सो अग्यारे दिन बृज मथुरा रहे ॥५७॥
 दिन अग्यारे ग्वालो भेस, तिन पर नहीं धनी को आवेस ।
 सात दिन गोकुल में रहे, चार दिन मथुरा के कहे ॥५८॥
 गज मल कंस को कारज कियो, उग्रसेन को टीका दियो ।
 काला ग्रह में दरसन दिए जिन, आए छुड़ाय बंध थें तिन ॥५९॥
 वसुदेव देवकी के लोहे भांन, उतास्यो भेख किए अस्नान ।
 जब राज बागे को कियो सिनगार, तब बल पराक्रम ना रह्यो लगार ॥६०॥
 आय जरासिंध मथुरा घेरी सही, तब श्रीकृष्णजी को अति चिंता भई ।
 यों याद करते आया विचार, तब कृष्ण विष्णु मय भए निरधार ॥६१॥
 तब बैकुंठ में विष्णु ना कहे, इत सोलेकला संपूरन भए ।
 या दिन थें भयो अवतार, ए प्रगट वचन देखो विचार ॥६२॥
 सिसुपाल की जोत वैकुण्ठ गई, समाई श्रीकृष्ण में तित ना रही ।
 आउध अपने मंगाए के लिए, कई बिध जुध असुरों सों किए ॥६३॥
 मथुरा द्वारका लीला कर, जाए पोहोंचे विष्णु बैकुंठ घर ।
 अब मूल सखियां धाम की जेह, तिन फेर आए धरी इत देह ॥६४॥
 उमेदां तामसियां रही तिन बेर, सो देखन को हम आइयां फेर ।
 इन ब्रह्मांड को एह कारन, सुनियो आत्म के श्रवन ॥६५॥
 रास खेलते उमेदां रहियां तित, सो ब्रह्मसृष्ट सब आइयां इत ।
 यामें सुरत आई स्यामाजी की सार, मतू मेहेता घर अवतार ॥६६॥

कुंवरबाई माता को नाम, उत्तम काइथ उमरकोट गाम ।
 आए श्री देवचंदजी नौतनपुरी, सुख सबों को देने देह धरी ॥६७॥
 इन इत आए करी बड़ी खोज, चाहे धनी को मूल संजोग ।
 अंग मूल उपजी ए दृष्ट, सास्त्र सब्द खोजे कई कष्ट ॥६८॥
 चौदे बरसलों नेष्टा बंध, वचन ग्रहे सारी सनंध ।
 कई जप तप किए व्रत नेम, सेवा सरूप सनेह अति प्रेम ॥६९॥
 कई कसनी कसी अति अंग, प्रेम सेवा में ना कियो भंग ।
 कई कसौटी करी दुलहिन, सो कारन हम सब सैयन ॥७०॥
 पिया किए अति प्रसन, तीन बेर दिए दरसन ।
 तारतम बात वतन की कही, आप धाम धनी सब सुध दर्ई ॥७१॥
 धर्यो नाम बाई सुन्दर, निज वतन देखाया घर ।
 इत दया करी अति घनी, अंदर आए के बैठे धनी ॥७२॥
 दियो जोस खोले दरबार, देखाया सुन्य के पार के पार ।
 ब्रह्मसृष्ट मिने सुन्दरबाई, ताको धनीजीएं दर्ई बड़ाई ॥७३॥
 सब सैयों मिने सिरदार, अंग याही के हम सब नार ।
 श्री धाम धनीजी की अरधंग, सब मिल एक सरूप एक अंग ॥७४॥
 श्री धाम लीला बैकुंठ अखंड, बृज रास लीला दोऊ ब्रह्मांड ।
 ए सब हिरदे में चढ़ आए, ज्यों आतम अनुभव होत सदाए ॥७५॥
 अब ए केते कहूं प्रकार, निजधाम लीला नित बड़ो विहार ।
 अछरातीत लीला किसोर, इत सैयां सुख लेवें अति जोर ॥७६॥
 मोहोल मंदिर को नाहीं पार, धाम लीला अति बड़ो विस्तार ।
 इन लीला की काहूं ना खबर, आज लगे बिना इन घर ॥७७॥
 ब्रह्मसृष्ट बिना न जाने कोए, ए सृष्ट ब्रह्मथें न्यारी न होए ।
 सो निध ब्रह्मसृष्ट ल्याईयां इत, ना तो ए लीला दुनिया में कित ॥७८॥

ए बानी धनी मुखथें कहे, सो ए दुनियां क्यों कर लहे ।
 गांगजी भाई मिले इन अवसर, तिन ए वचन लिए चित धर ॥७९॥
 कर विचार पूछे वचन, नीके अर्थ लिए जो इन ।
 जब समझाई पार की बान, तब धनी की भई पेहेचान ॥८०॥
 अपने घरों लिए बुलाए, सेवा करी बोहोत चित ल्याए ।
 सनेहसों सेवा करी जो घनी, पेहेचान के अपना धाम धनी ॥८१॥
 तब श्रीमुख वचन कहे प्राणनाथ, ढूढ काढनो अपनो साथ ।
 माया मिने आई सृष्ट ब्रह्म, सो बुलावन आए हैं हम ॥८२॥
 हम आए हैं इतने काम, ब्रह्मसृष्ट लेने घर धाम ।
 तब गांगजी भाई पायो अचरज मन, कौन मानसी पार के वचन ॥८३॥
 कह्या ब्रह्मसृष्ट क्यों मिलसी, चाल तुमारी क्यों चलसी ।
 मोहजल पूर तीखा अति जोर, नख अंगुरी को ले जाए तोर ॥८४॥
 तरंग बड़े मेर से होए, इत खड़ा ना रहेने पावे कोए ।
 लेहेरें पर लेहेरें मारे घेर, मांहे देत भमरियां फेर ॥८५॥
 आड़े टेढ़े मांहे बेहेवट, विक्राल जीव मांहे विकट ।
 दुखरूपी सागर निपट, किनार बेट न काहूं निकट ॥८६॥
 ऊंचा नीचा गेहेरा गिरदवाए, कठन समया इत पोहोंच्या आए ।
 हाथ ना सूझे सिर ना पाए, इन अंधेरी से निकस्यो न जाए ॥८७॥
 चढ़यो माया को जोर अमल, भूलियां आप मांहे घर छल ।
 ना सुध धनी ना मूल अकल, इन मोहजल को ऐसो बल ॥८८॥
 वचन बेहद के पार के पार, सो क्यों माने हद को संसार ।
 त्रैगुन महाविष्णु मोह अहंकार, ए हद सास्त्रों करी पुकार ॥८९॥
 ब्रह्मसृष्ट भी धरे मोह के आकार, सो इत आवसी कौन प्रकार ।
 तब श्रीधनीजीएं कहे वचन, बेहेर दृष्ट होसी रोसन ॥९०॥

ए बंधेज कियो अति जोर, रात मेट के करसी भोर ।
 प्रतछ प्रमान देसी दरसन, ए लीला चित धरसी जिन ॥९१॥
 साथ कारन आवसी धनी, घर घर वस्तां देसी घनी ।
 साथ मांहे इत आरोगसी, विध विध के सुख उपजावसी ॥९२॥
 अचरा पकर पिउ देखलावसी, एक दूजी को प्रेम सिखलावसी ।
 ए लीला बढ़सी विस्तार, साथ अंग होसी करार ॥९३॥
 तब बानी को करसी विचार, सब माएने होसी निरवार ।
 तब आवसी ब्रह्मसृष्ट, जाहेर निसान देखसी दृष्ट ॥९४॥
 ए बंधेज कियो उत्तम, पर धामकी निध सो कही तारतम ।
 जिन सेती होवे पेहेचान, नजरों आवे सब निसान ॥९५॥
 तब गांगजी भाई पाए मन उछरंग, किए करतब अति घने रंग ।
 सनेहसों सेवा करी जो अत, पेहेचान के धाम धनी हुए गलित ॥९६॥
 साथसों हेत कियो अपार, सुफल कियो अपनो अवतार ।
 मैं श्रीसुंदरबाई के चरने रहूं, एह दया मुख किन विध कहूं ॥९७॥
 कह्यो ताको इंद्रावती नाम, ब्रह्मसृष्ट मिने घर धाम ।
 मां पर धनी हुए प्रसन्न, साँपे धाम के मूल वचन ॥९८॥
 आद के द्वार ना खुले आज दिन, ऐसा हुआ ना कोई खोले हम बिन ।
 सो कुंजी दर्ई मेरे हाथ, तूं खोल कारन अपने साथ ॥९९॥
 मोहे करी सरीखी आप, टालने हम सबों की ताप ।
 आतम संग भई जाग्रत बुध, सुपनथें जगाए करो मोहे सुध ॥१००॥
 श्रीधनीजी को जोस आतम दुलहिन, नूर हुकम बुध मूल वतन ।
 ए पांचो मिल भई महामत, वेद कतेबाँ पोहोंची सरत ॥१०१॥
 या कुरान या पुरान, ए कागद दोऊ प्रवान ।
 याके मगज माएने हम पास, अंदर आए खोले प्राणनाथ ॥१०२॥

आप भी ना खोले दरबार, सो मुझ से खोलाए कियो विस्तार ।
 मोहे दर्ई तारतम की करनवार, सो काहूं न अटको निरधार ॥१०३॥
 सब संसे को कियो निरवार, कोई संसा ना रह्या वार के पार ।
 रोसन करूं लेऊं हुकम बजाए, ब्रह्मसृष्ट और दुनियां देऊं जगाए ॥१०४॥
 द्वार तोबा के खुले हैं अब, पीछे तो दुनियां मिलसी सब ।
 जब द्वार तोबा के मूंदयो, रैन गई भोर जो भयो ॥१०५॥
 या भली या बुरी, जिनहूं जैसी फैल जो करी ।
 तब आगूं आई सबों की करनी, जिन जैसी करी आप अपनी ॥१०६॥
 तब कोई नहीं किसी के संग, दुख सुख लेवे अपने अंग ।
 करूं ब्रह्मसृष्ट को मिलाप, अखंड सूर उदे भयो आप ॥१०७॥
 विश्व मिली करने दीदार, पीछे कोई ना रहे मिने संसार ।
 ब्रह्मसृष्ट को पिया संग सुख, सो कह्यो न जाए या मुख ॥१०८॥
 ब्रह्मसृष्ट को ऐसो नूर, जो दुनियां थी बिना अंकूर ।
 ताए नए अंकूर जो कर, किए नेहेचल देख नजर ॥१०९॥
 श्री धनीजी को दीदार सब कोई देख, होए गई दुनियां सब एक ।
 किनहूं कछुए ना कह्यो, क्रोध ब्रोध काहूको ना रह्यो ॥११०॥
 श्री धनीजी को ऐसो जस, दुनियां आपे भई एक रस ।
 तेज जोत प्रकास जो ऐसो, काहूं संसे ना रह्यो कैसो ॥१११॥
 सब जातें मिली एक ठौर, कोई ना कहे धनी मेरा और ।
 पिया के विरह सों निरमल किए, पीछे अखंड सुख सबों को दिए ॥११२॥
 ए ब्रह्मलीला भई जो इत, सो कबहूं हुई ना होसी कित ।
 ना तो कई उपज गए इंड, भी आगे होसी कई ब्रह्मांड ॥११३॥
 ए तीन ब्रह्मांड हुए जो अब, ऐसे हुए ना होसी कब ।
 इन तीनों में ब्रह्मलीला भई, बृज रास और जागनी कही ॥११४॥

ज्यों नींद में देखिए सुपन, यों बृज को सुख लियो सैन ।
 सुपन जोगमाया को जोए, आधी नींद में देख्या सोए ॥११५॥
 कछुक नींद कछुक सुध, रास को सुख लियो या विध ।
 जागनी को जागते सुख, ए लीला सुख क्यों कहूं या मुख ॥११६॥
 जागनी में लीला धाम जाहेर, निसान हिरदे लिए चित धर ।
 तब उपज्यो आनंद सबों करार, ले नजरों लीला नित विहार ॥११७॥
 इतहीं बैठे घर जागे धाम, पूरन मनोरथ हुए सब काम ।
 धनी महामत हँस ताली दे, साथ उठा हँसता सुख ले ॥११८॥

॥प्रकरण॥३७॥चौपाई॥११८५॥

प्रकरण तथा चौपाइयों का संपूर्ण संकलन

प्रकरण १४८, चौपाई ३८९८

॥ प्रकास हिन्दुस्तानी-जंबूर सम्पूर्ण ॥